आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 6 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2009 ★ आषाढ़ 2066

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

मंगल-मूल, धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'॥

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

पीयें धोवन पानी, बोले मीठी वाणी यही कहे जिनवाणी ।

एक है वैसा, मुझे चाहिए था जैसा...

गहने
अलंकार
नक्काशीवाले
चमकिले
तेजस्वी
ओजस्वी

॥ स्वर्णतीर्थ ॥

प्रभावी
अदभूत
अक्षय
अर्थपूर्ण
अष्टपैलू
अगम्य
मोहर
अनमोल
अप्रतिम
माणिक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सोने • चांदी • हिरा • मोती
०२५७-२२२५९०३,३९०३ जलगाँव • औरंगाबाद ०२४०-२३४४५२०,२२

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं,
अणेगरूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंति असमंजसं च,
न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 4.11

बार-बार मोहादि जीतते,
संयमपथचारी मुनिजन को।
विविध विषयस्पर्श दुःख देते,
द्वेषलिप्त न करे मन को।।

जून 2009
वीर निर्वाण संवत् 2535
आषाढ़ 2066

वर्ष 66 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	मैथुनविरमण-व्रत और नैतिकता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	व्यवहार जगत के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	एक मुहूर्त का महत्त्व	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	15
शोधालेख -	परिशिष्ट पर्व में वर्णित जैन इतिहास	-डॉ. सागरमल जैन	20
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Role of Jaina Ethics in Peace and Harmony of Global Civilization	*-Dr. Sohan Raj Tater*	26
चिन्तन -	कर्मवादी महावीर	-श्री उदयमुनि जी म.सा.	18
	धर्म का आधार : निज ज्ञान	-श्री रणजीत सिंह कूमट	33
	कर्मवाद से पुरुषार्थवाद की पुष्टि	-श्री चन्द्रप्रकाश गाँधी	38
पत्र-वार्ता-	प्रेम का आदान-प्रदान	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दर जी म.सा.	42
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (61)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	44
उपन्यास-	सुबह की धूप (4)	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	50
प्रासङ्गिक -	दीक्षा : आत्मशान्ति की शिक्षा	-साध्वी डॉ. प्रतिभा श्री 'प्राची'	55
विशिष्ट प्रश्नोत्तर-	उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (15)	-संकलित	57
नारी-स्तम्भ-	मलिन विचारों से रहें सावधान	- श्रीमती मंजू सांड	61
युवा-स्तम्भ-	तनाव-मुक्ति का अमोघ उपाय	-प्रो. चाँदमल कर्णावट	63
संस्मरण-	संयम पथ के पथिकों को वन्दन	-श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया	65
बाल-स्तम्भ-	कसौटी	- श्री गौतमचन्द जैन (संकलित)	69
स्वास्थ्य-विज्ञान-	चिकित्सा-सेवा में अहिंसा	- डॉ. चंचलमल चोरडिया	72
विचार-	Success & Trouble	*-Mrs. Jugal N. Ranka*	31
	उभयकाल का प्रतिक्रमण	- श्री लक्ष्मीचन्द जैन	49
गीत/कविता-	मोक्ष पथ-अक्षय सुख	- श्री जीवनचन्द कांकरिया	17
	संघ-सेवा ही हमारा काम	- श्री त्रिलोकचन्द जैन	32
	मृत्यु हँसती दो बार	- कवि कस्तूरचन्द जैन	41
	नहीं जन्म दुबारा हो मेरा	- मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	56
	अन्तर उपवन सुरभित हो	- श्री मोहन कोठारी 'विनर'	60
	शान्ति-अमृत	- डॉ. रमेश 'मंयक'	62
	वैरागस्य समर्थनम्	- डॉ. धर्मचन्द जैन	68
संवाद-	समस्या-समाधान (24)		73
समाचार विविधा-	दीक्षा-विवरण		74
	समाचार-संकलन		85
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		110

सम्पादकीय

मैथुनविरमण-व्रत और नैतिकता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

मनुष्य का चित्त अनेक रूप है। वह कब कहाँ भटक जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए जैन धर्म चित्त का निग्रह करने की प्रेरणा करता है। यह निग्रह धर्मशिक्षा से सम्भव है। यह चित्त ही है जो हमें सत्-असत् का विवेक नहीं करने देता। यह कामनाओं एवं वासनाओं की अभिव्यक्ति एवं पोषण का स्रोत होता है। सभी कर्म-संस्कार चित्त या मन के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। हम जैसे संस्कारों का संचय करते हैं वैसे ही संस्कार समय-समय पर चित्त में उद्भूत होते हैं। काम, द्वेष, ईर्ष्या, लोभ, हिंसा, झूठ, माया, क्रोध आदि के संस्कार भी हमारे द्वारा ही संचित होते हैं और वे ही उदय में आकर हमारे विवेक को कुण्ठित कर देते हैं।

काम-विकार हीनाधिक रूप में सभी मनुष्यों में प्राप्त होता है। मनुष्य के पूर्व संस्कार, मन के विकार, शारीरिक हार्मोन का प्रवाह आदि इसके अनेक कारण हैं। प्रभु महावीर ने मनुष्य के चित्त को जाना, उसमें उठने वाले विकारों की प्रक्रिया को समझा, उसके फल को जाना, विकार-निवारण के उपाय को समझा। इसीलिए महावीर 'महावीर' बने। चित्त को कैसे विकार मुक्त किया जाए, इसका मार्ग भी उन्होंने प्रशस्त किया। आज नैतिकता के नाम पर बाह्य सीमाएँ तो बाँधी गई हैं, किन्तु मनुष्य के मन की निर्मलता का कोई चिन्तन नहीं है। प्रभु महावीर का बल मन की निर्मलता पर है, जिससे नैतिकता का आचरण स्वतः हो जाता है। हाँ, आगमों में ब्रह्मचर्य पालन के लिए अनेक मर्यादाएँ भी बांधी गई हैं, जो साधकों के चित्त को उद्दीपक निमित्तों से दूर रखती हैं। साधु-साध्वी के लिए ब्रह्मचर्य की नव बाड़ इन्हीं मर्यादाओं का उल्लेख करती हैं। ये मर्यादाएँ व्यक्ति के चित्त को उद्विग्न होने से बचाती हैं अथवा कामोद्दीपन के अवसरों से दूर रखती हैं। जबकि आज सरकारी स्तर पर कामोद्दीपन की रोक के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं हैं एवं आशा की जाती है कि व्यक्ति का चालचलन संयत

हो। नव बाड़ों में उल्लेख है कि ब्रह्मचारी साधक स्त्री, पशु एवं नपुंसक से संसक्त स्थान में न रहे, नित्यप्रति सरस भोजन न करे, अतिमात्रा में भोजन न करे, किंसी भी स्त्री के साथ एक आसन पर न बैठे, स्त्रीकथा न करे, इत्यादि ऐसे नियम हैं जो ब्रह्मचारी साधक के ब्रह्मचर्य पालन को सहज बनाते हैं। इन नियमों को हम नैतिकता के नियम नहीं कह सकते, किन्तु काम-उद्दीपन को रोकने के नियम कह सकते हैं। साधु-साध्वी मैथुन विरमण व्रत के पूर्ण पालक होते हैं। वे तीन करण एवं तीन योग से मैथुन के त्यागी होते हैं। मन-वचन एवं काया तीनों स्तरों पर उन्हें विकारों को जीतना होता है। न वे स्वयं मैथुन सेवन करते हैं, न दूसरों से करवाते हैं और न ही मैथुन सेवन करने वाले का अनुमोदन करते हैं। धर्म-शिक्षा के आधार पर ब्रह्मचर्य पालन का यह उत्कृष्ट रूप होता है। धर्मशिक्षा के अन्तर्गत मन को ज्ञानपूर्वक सदाचरण के लिए तैयार किया जाता है। आगम-वाणी एवं संतवाणी की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

आत्म-विकारों के जय के मार्ग पर अग्रसर साधक को विकार-जय से आनन्द की प्राप्ति होती है। वहीं विकारों में लिप्त गृहस्थ उन विकारों के चक्रव्यूह में फँसा हुआ रहकर भोगों में ही सुख की कल्पना करता रहता है, किन्तु ये भोग मनुष्य की इच्छा को कभी तृप्त नहीं करते। जिस प्रकार अग्नि में हवन डालने पर अग्नि उद्दीप्त ही होती है उसी प्रकार विषय भोगों से भोगों की अभिलाषा शान्त नहीं होती। इसलिए धर्म यह शिक्षा देता है -

अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं।
नाऽऽयरंति मुणी लोए भेयायययणवज्जिणो॥
मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं।
तम्हा मेहुणसंसग्गं निग्गंथा वज्जयंति णं॥

-दशवैकालिक सूत्र, 6.15-16

अब्रह्मचर्य लोक में घोर प्रमाद एवं दुराचरण का सूचक है। अतः मुनि इसका आचरण नहीं करते। यह अधर्म का मूल है, महादोषों का पुँज है, इसलिए निर्ग्रन्थ साधु-साध्वी मैथुन के संसर्ग का त्याग करते हैं।

गृहस्थ जीवन में पूर्ण त्याग विरले ही साधक करते हैं। सबके लिए यह सम्भव भी नहीं है, किन्तु मैथुन से कुछ अंशों में विरमण प्रत्येक गृहस्थ कर

सकता है। भगवान् महावीर ने गृहस्थ साधक के लिए स्वदार-संतोष व्रत का विधान किया। जिसका तात्पर्य है कि वह अपनी पत्नी से ही संतुष्ट रहे, अन्य किसी स्त्री का सेवन न करे। हजारों वर्ष पूर्व किए गए इस विधान को आज सम्पूर्ण विश्व में अच्छे गृहस्थ जीवन के मापदण्डों में सम्मिलित माना गया है। परस्त्री के साथ अवैध सम्बन्ध को सम्पूर्ण विश्व में हीन दृष्टि से देखा जाता है। भारतवर्ष में परस्त्री को माता, बहिन अथवा पुत्री के रूप में देखने का संदेश मुखरित हुआ है। इसका तात्पर्य है कि अन्य स्त्रियों के साथ निर्विकार भाव से व्यवहार करना चाहिए।

नैतिकता की दृष्टि से स्वपत्नी संतोष अथवा स्वपति संतोष के बिन्दु पर विचार किया जाए तो अनेक तर्क उपस्थित होते हैं जो मनुष्य को इस व्रत का पालन करने की प्रेरणा करते हैं -

1. इस व्रत का पालन न करने पर परिवार में कलह एवं अशांति का वातावरण उत्पन्न होता है। यदि किसी का पर-स्त्री के साथ व्यवहार स्थापित हो जाता है तो इससे दो परिवारों में अशांति उत्पन्न होती है, जिसे किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता।
2. बालकों पर भी इसका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।
3. सामाजिक दृष्टि से भी ऐसे व्यक्ति की प्रतिष्ठा संकट में पड़ जाती है।
4. यह अपनी पत्नी के अधिकार का हनन भी है तथा नैतिकता के नियमों का उल्लंघन भी।

स्वपत्नी संतोष का विधान मनुष्य की उच्छृंखलता को रोकने के लिए किया गया है। उसकी इच्छाएँ, उसकी वासनाएँ एक परिधि में रहें, अन्यों के जीवन के साथ खिलवाड़ न हो तथा चित्त भी एक सीमा में रहकर निगृहीत रह सके। नैतिकता तो यहाँ तक है कि पुरुष को अपनी विवाहिता स्त्री के साथ भी बलात् व्यवहार नहीं करना चाहिए। उसके स्वास्थ्य एवं अनुकूलता का खयाल रखते हुए व्यवहार करने में स्वनियन्त्रण की ओर कदम बढ़ सकते हैं। अपनी वासना का रूपान्तरण अन्य रचनात्मक कार्यों में करना चाहिए। जब मनुष्य चित्त की वृत्तियों को सब ओर से हटा कर किसी एक विशुद्ध एवं उच्च ध्येय पर एकाग्र

कर देता है तो उसके मन में विकारों एवं वासनाओं का प्रभाव कमजोर हो जाता है। छोटें बच्चों के प्रति प्रेमभाव, साहित्य-रचना, सबके प्रति मैत्रीभाव, सबके प्रति सहयोग का भाव आदि विभिन्न रूपों में काम-वासना का रूपान्तरण अथवा उदात्तीकरण संभव है।

वासनाओं का नियन्ता गृहस्थ यदि नाते-रिश्तेदारों के घर पर भी जाता है तो पवित्र आँखें रखता है और उसके हृदय में सब स्त्रियों के प्रति मातृभाव और भगिनी-भाव का निर्मल झरना बहता है। 'मातृवत् परदारेषु' अर्थात् अन्य स्त्रियों के प्रति माता के समान व्यवहार में वह निष्णात हो जाता है। लक्ष्मण का उल्लेख प्राप्त होता है कि वह सीता को वन्दन करने के कारण उनके नुपूरों को तो जानता था, किन्तु कुण्डलों और कंगनों को नहीं पहचानता था-

कुण्डले नाभिजानामि, नाभिजानामि कंकणे।
नूपुरे त्वभिजानामि, नित्यं पादाब्जवन्दनात्।। -पद्मपुराण

मानव-संस्कृति का विकास काम-वासना के संशोधन एवं ऊर्ध्वगमन से ही सम्भव है। आज दूरदर्शन, समाचार-पत्र, सिनेमा आदि के माध्यम से काम-वासना को उद्दीप्त किया जाता है एवं यह आशा की जाती है कि व्यक्ति का व्यवहार स्त्रियों के प्रति संयत हो, यह पारस्परिक विरोध है। इच्छा की स्वतन्त्रता का आज के युग में महत्त्व बढ़ा है, किन्तु ज्ञानपूर्वक संयम के ब्रेक के बिना वह स्वतंत्रता व्यक्ति को गर्त में गिराने वाली है। इसलिए मनचाही करने की अपेक्षा हितकारी करने की भावना रहनी चाहिए।

आत्मविश्वास संयमी व्यक्ति में अधिक होता है। वह अपने मन और इन्द्रियों को अपने अधीन बनाने में सक्षम होता है। इसलिए धर्म की शिक्षा द्वारा अपने मन को समझाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसी में व्यक्ति का सच्चा विकास है। भोगों की रुचि मनुष्य को पराधीन बनाती है, दूसरों के साथ विरोध उत्पन्न करती है, कलह एवं अशान्ति का कारण बनती है तथा शाश्वत सत्य का बोध नहीं होने देती। ऐसा व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से निर्बल बनता है। एड्स जैसी बीमारियाँ उस पर शीघ्र हमला बोल सकती हैं। इसलिए भीतरी वासना एवं विकारों पर नियन्त्रण का लक्ष्य बनाने से ही सच्ची सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(पुरुष के चार प्रकार)

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा - उण्णते णाममेगे उण्णते, उण्णते णाममेगे पणते, पणते णाममेगे उण्णते, पणते णाममेगे पणते।

-स्थानांगसूत्र, चतुर्थ स्थान-प्रथम उद्देशक- सूत्र 2

वृक्ष चार प्रकार के कहे गये हैं, जैसे-

1. कोई वृक्ष शरीर से भी उन्नत होता है और जाति से भी उन्नत होता है। जैसे-शाल वृक्ष।
2. कोई वृक्ष शरीर से (द्रव्य) से उन्नत, किन्तु जाति (भाव) से प्रणत (हीन) होता है। जैसे-नीम।
3. कोई वृक्ष शरीर से प्रणत, किन्तु जाति से उन्नत होता है। जैसे-अशोक।
4. कोई वृक्ष शरीर से प्रणत और जाति से भी प्रणत होता है। जैसे- खैर।

इस प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के कहे गये हैं, जैसे-

1. कोई पुरुष शरीर से भी उन्नत होता है और गुणों से भी उन्नत होता है।
2. कोई पुरुष शरीर से उन्नत होता है, किन्तु गुणों से प्रणत होता है।
3. कोई पुरुष शरीर से प्रणत और गुणों से उन्नत होता है।
4. कोई पुरुष शरीर से भी प्रणत होता है और गुणों से भी प्रणत होता है।

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा - सच्चे णामं एगे सच्चमणे, सच्चे णामं एगे असच्चमणे, असच्चे णामं एगे सच्चमणे, असच्चे णामं एगे असच्चमणे।

-स्थानांगसूत्र, चतुर्थ स्थान-प्रथम उद्देशक- सूत्र 38

पुरुष चार प्रकार के कहे गये हैं। जैसे-

1. कोई पुरुष सत्य और सत्य मनवाला होता है।
2. कोई पुरुष सत्य, किन्तु असत्य मनवाला होता है।
3. कोई पुरुष असत्य, किन्तु सत्य मनवाला होता है।
4. कोई पुरुष असत्य और असत्य मनवाला होता है।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- मकान के मलबे के नीचे दबे हुए बीज को समय-समय पर यदि वर्षा का पानी मिलता रहे, तब भी वह दबा हुआ बीज अपना विकास नहीं कर पाएगा। क्या उस बीज में विकास करने की योग्यता नहीं? योग्यता अवश्य है, किन्तु जब तक उस बीज पर से पत्थर व मलबा न हटा लिया जाए तब तक वह अंकुरित नहीं होगा। हमारे चेतन रूपी बीज पर भी गणनातीत गिरीन्द्रों से भी अधिक मलबे और कीचड़ का भार पड़ा हुआ है ,जिसमें दबे हुए हमारे आत्म-देव में चेतना की योग्यता होते हुए भी उसका आगे विकास नहीं हो पाता।
- आत्मा का प्रकाश बड़ा है या बिजली का? बिजली के प्रकाश को खोजकर किसने निकाला? अमुक-अमुक चीजों को जुटाने से विद्युत पैदा हो सकती है , इसे खोजकर निकाला है मनुष्य ने। बिजली का कनेक्शन नहीं होने पर भी बैटरी का खटका दबाते ही प्रकाश हो गया। बैटरी है, तो गाड़ीं में बैठे हुए भी रेडियो के गीत सुन लोगे। मानव के मस्तिष्क ने ये सब चीजें खोज निकालीं। आत्मा इतनी तेजस्वी है कि उसने छोटे-छोटे जड़ पदार्थों में छिपी हुई शक्ति को प्रकट किया। तो शक्ति प्रकट करने वाला बड़ा या जिसने शक्ति दिखाई वह बड़ा? बिजली से अनन्तगुणी शक्ति हमारी आत्मा में है।
- यदि आत्मा को बलवान बनाना है तो त्याग को और अच्छाई को आचरण में लाना होगा।
- धर्म की शरण ग्रहण करना है तो अन्तर्मन से दृढ संकल्प के साथ यह समझना होगा कि कषायोदय का प्रसंग उपस्थित होने पर यदि मैं किञ्चित् भी दोलायमान हो गया तो क्रोध, मान, माया एवं लोभ मेरे आत्म गुणों की हानि कर मुझे घोर रसातल में धकेल देंगे।
- जब तक अज्ञान का जोर है, पाप की वंशवृद्धि होती रहेगी। पाप घटाने के लिए अज्ञान घटाना आवश्यक है।
- आज का पापी कल तपश्चर्या से पुण्यात्मा एवं धर्मात्मा बन सकता है।
- आज संसारी मानव ताज्जुब करेंगे कि जहाँ उत्पाद है, वहाँ नाश कैसा और जहाँ नाश है वहाँ उत्पाद कैसा, ध्रौव्य कैसा? लेकिन जैन तत्त्वज्ञान की यह बड़ी खूबी है कि जैन तत्त्वज्ञाता हर पदार्थ को दो दृष्टियों से देखते हैं-द्रव्यदृष्टि से और पर्यायदृष्टि से। द्रव्य दृष्टि से प्रत्येक ध्रुव या नित्य है तथा पर्याय की दृष्टि से उसमें उत्पाद और व्यय भी है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

व्यवहार जगत के सूत्र

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा बालकेश्वर, मुम्बई में गुरुवार 25 जुलाई,2002 को फरमाए गए प्रवचन के प्रस्तुत अंश का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान महावीर की अनमोल वाणी में यह संसार द्वन्द्वात्मक है। यहाँ अनन्त ज्ञान वाला- अनन्त दर्शन वाला जीव 'तत्त्व' है तो इस अनन्त ज्ञान-दर्शन पर आवरण डालने वाला जड़ पदार्थ 'कर्म' भी है। मानव जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल आदि साधन-सामग्रियों को उपलब्ध कराने वाला 'पुण्य' तत्त्व है तो ममता-मोह में फंसाने वाला अपना भान भुलाकर भोग की ओर दौड़ाने वाला पाप 'तत्त्व' भी है। मिथ्यात्व-अव्रत-प्रमाद से कर्म कराने वाला आस्रव तत्त्व है तो शुभ भाव जगाकर, विरति में लगाकर कषाय से उदासीन बनाने वाला-रोकने वाला संवर तत्त्व भी है। राग से, द्वेष से, कामनाओं से, आसक्ति से कर्मों के साथ एकमेक बनाने वाला बन्ध तत्त्व है तो महाव्रत-समिमि-गुप्ति, धर्म ध्यान-शुक्ल ध्यान आदि के माध्यम से कर्म की बेड़ियों को काटने वाला अंशतः आत्मा को मुक्त करने वाला निर्जरा तत्त्व भी है।

द्वन्द्वात्मक इस संसार में दिन है, रात है, सुख है, दुःख है। प्रश्न है- हमें क्या करना चाहिये? कल आपके सामने एक बात चल रही थी कि आपको धन चाहिये या धर्म? बाहर का प्रभाव चाहिये या भीतर का स्वभाव? बाहर का प्रचार चाहिये या भीतर का आचार? धर्म, स्वभाव और आचार चाहिये तो इसके लिए उपाय निर्ग्रन्थ प्रवचन हैं, वीतराग वाणी है।

चातुर्मास काल प्रारम्भ होने जा रहा है। एक भाषा में कहूँ, तो प्रारम्भ हो चुका है। शेषकाल में वीतराग वाणी के अलग-अलग तत्त्वों को, सुभाषित वचनों को अथवा उनके द्वारा दी गई शिक्षाओं को धर्मकथा का अंग बनाया गया। अब चातुर्मास के दीर्घकाल का संयोग सामने है तो वीतराग वाणी की

साक्षी से शास्त्र की वाचना चले इस दृष्टि से उत्तराध्ययन सूत्र जो तीर्थंकर भगवान महावीर की अंतिम वाणी है, का विवेचन प्रस्तुत करने की भावना है।

उत्तराध्ययन सूत्र की प्रस्तुति की भावना इसलिए कर रहा हूँ कि यह शास्त्र चारों अनुयोगों का वर्णन करता है। यह चार प्रकार के धर्मों का भी विवेचन करता है, इसमें दान के प्रसंग भी हैं तो शील के भी हैं। तप और भावना के प्रसंग भी हैं। मोक्ष मार्ग के चार चरण ज्ञान, दर्शन चारित्र और तप, जिसकी भगवान् ने अंतिम समय में वागरणा की, उत्तराध्ययन सूत्र में हैं।

आचार्य भगवन्त (आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज) ने अपने श्रीमुख से जो सुभाषित वचन कहे उनमें से याद आ रहा है कि जीवन भर की शिक्षाओं को कोई सुपुत्र खयाल रखे या नहीं, पर जो अंतिम समय में कही बात भी याद रख ले तो वह उसके लिए हितावह है। घर की बात कहूँ। एक पिता अपने पुत्र को परिवार में कैसे रहना, समाज में कैसे जीना, जीवन चलाने के लिए किस तरह व्यापार करना, कैसे लोगों के साथ व्यवहार रखना, विषमता की स्थिति आने पर अपने-आपको किस तरह मोड़कर चलना आदि-आदि बातें सिखाता है। पिता पुत्र को जीवनभर शिक्षाएँ देता है। बचपन में कहा जाता है- ''भाई! अभी तेरा मस्तिष्क सरल है, शांत है, अनेकानेक बुराइयों से बचा हुआ है। इस निर्मल मस्तिष्क में जितना ज्ञान सीख सकता है, सीख ले। हम भी यही कहते हैं बचपन में जितना ज्ञान कण्ठस्थ कर सकते हैं, किया जाय, क्योंकि अभी दिमाग में ताजगी है। साठ साल के व्यक्ति को स्मरण करने का कहें तो कितनी कठिनाई होती। आठ साल में स्मरण शक्ति जितनी पवित्र होती है, साठ साल वाले की वैसी ताजगी नहीं होती। बचपन में याद कर लिया होता तो बुढ़ापे में पछताना नहीं पड़ता। बुढ़ापे में कई लोग हैं जो पछतावा करते हैं। बचपन में ज्ञानार्जन के लिए जितनी भावना हो उतना ज्ञान हो सकता है। एक अनुभवी पिता पुत्र को शिक्षा दे रहा था -'' बेटा! हाथ का सच्चा रहना, बात का सच्चा रहना और काच्छ का सच्चा रहना।''

हाथ का सच्चा रहना अर्थात् किसी दूसरे की वस्तु की चोरी नहीं करना। कहीं जाओ तुम्हारे पास पैसा है या नहीं, अगर तू अपनी सीमा में रहकर

पराये धन पर मन नहीं ललचाएगा तो तू कहीं अविश्वसनीय नहीं रहेगा। आचार्य भगवन्त कहते थे- कोई श्रावक कोसाणा से लोटा-डोर लेकर निकले। घोड़नदी आए। वहाँ तिजोरी खुली हुई थी, किन्तु हाथ बढ़ाना तो दूर मन में लेने की भावना तक नहीं आई। हाथ का सच्चा है उसे कहीं डर नहीं।

आज हाथ के सच्चे लोग कितने हैं? आज दो नम्बर का धंधा करने वाले मिलेंगे, तराजू की डंडी को टेडा करते विचार तक नहीं आता। उन्हें पैसा चाहिये, चाहे वह अनीति का ही क्यों न हो। प्रायः पैसा बिना पाप किए नहीं आता। शास्त्र कहता है- जिसका व्यवहार शुद्ध नहीं, उसका परमार्थ शुद्ध नहीं हो सकता।

दूसरी बात कही- बात का सच्चा रहना। वचन से कह दिया तो उसे प्राणप्रण से निभाने में तत्पर रहना। वे अपने कहे वचन पर दृढ़ रहते।

रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाई।

यह व्यवहार का वचन है। जो कह दिया उससे इधर-उधर नहीं होना। राम-कृष्ण पहले व्यवहार में सच्चे थे, फिर परमार्थ में अच्छे हुए। हम अपने जीवन को देखें कि हमारा व्यवहार बाहर में कैसा है, भीतर में कैसा है?

मैंने सुबह एक छोटी सी बात पढ़ी। महात्मा गांधी पाठशाला में विद्यार्थी के रूप में पढ़ रहे थे। एक प्रश्न का उन्हें उत्तर देना था। थोड़ी देर सोचा और सोचकर उत्तर दिया। शिक्षक को शंका हुई कि इसने नकल की है। शिक्षक ने मोहनचन्द्र को डांटा। वे रोने लग गये। नम्बर काटे उसकी चिंता नहीं, चिंता थी कि मेरे सोचने के सन्दर्भ को लेकर गुरु को अविश्वास कैसे हो गया?

आज कई लोग हैं जो व्यवहार में सच्चे हैं, किन्तु परस्पर अविश्वास अपनों को पराया करता है। दो दोस्त थे। रात-दिन साथ बैठते, साथ खाते। एक दिन एक मित्र ने अपनी अंगूठी उतार कर रख दी और वह दोस्त को बिना कुछ कहे चला गया। लौटकर आया तो देखा अंगूठी नहीं। अंगूठी नहीं मिलने पर उसे दोस्त पर शंका हो गई। अब दोस्त के बोलने में, बैठने में, खाने में फर्क आ गया। फर्क क्यों आया? फर्क आने का कारण था- अविश्वास।

जिस मित्र की अंगूठी नहीं मिली दीवाली की सफाई करते-करते वह

अंगूठी मिल गई। अंगूठी मिल गई तो उसके बोलने में वापस परिवर्तन आ गया। सामने वाले मित्र को अंगूठी खोने या मिलने की बात मालूम नहीं। वह चिंतन करता है, क्या हुआ जो पास रहते हुए पहले जो आत्मीयता थी वह दिखाई नहीं दी। अब फिर से वह प्रेम से बात करता है उसका कारण क्या? पूछना चाहिये।

मित्र ने अपने मित्र से पूछा- हम पहले आत्मीयता से बात करते थे, अब भी प्रेम से बात करते हैं, बीच के दिनों में क्या हुआ? मित्र बोला- "भाई! मेरी अंगूठी खोई थी, वह मिल गई।"

एक अंगूठी खोने पर इतना विचार होता है तो वीतराग प्रभु ने हमें कितना अच्छा नगीना दिया। यह ज्ञान-दर्शन-चारित्र का नगीना लुट रहा है, इसे देखकर आपमें क्या बदलाव आया? यह पत्नी का मोह मुझे ज्ञान में आगे नहीं बढ़ने दे रहा। यह धन का मोह मुझे साधना में आगे बढ़ने से रोक रहा है। आपने शायद इस रत्न को रत्न समझा ही नहीं। जिस दिन ज्ञान-दर्शन-चारित्र को रत्न समझ लेंगे उस दिन बात पर पक्के रहेंगे।

तीसरी बात कही- काछ का सच्चा रहना। अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना। इसकी विवेचना की जरूरत नहीं। जो कच्छे का सच्चा नहीं उसकी कहीं प्रतिष्ठा नहीं।

व्यवहार जगत की शिक्षा देते-देते पिता ने कहा- "बेटे, तीन बातें और मत भूलना- कम खाना, गम खाना, और नम जाना।" कभी स्वाद के वशीभूत होकर भूख से अधिक मत खाना। अधिक खाना बीमारी का कारण है। भूख से थोड़ा कम खाने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है, किन्तु अधिक खाना तकलीफ देता है। इसी प्रकार जब कोई तुम्हें बुरा-भला कह दे तो भी क्रोध मत करना। धैर्य से बात सुनकर एवं समझकर उसका समाधान निकालना। तीसरी बात कही- नम जाना। अर्थात् सबके साथ विनयपूर्ण व्यवहार करना। अकड़कर अभिमानपूर्वक व्यवहार करना अपना पतन करना है।

व्यवहार जगत के ये सूत्र कैसे जीवन निर्माण करते हैं, महावीर की अंतिम वाणी कैसे जीवन का निर्माण करती है, समय के साथ रखने की भावना है। ■

प्रवचन

एक मुहूर्त का महत्त्व

तत्त्व चिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा बोरिवली (पश्चिम) में 21 जून, 2008 को फरमाए गए प्रवचन का यह अंश हमें अभिलाषा अजय जी हीरावत ने लिपिबद्ध कर प्रेषित किया है।-सम्पादक

सिद्धान्त का प्रतिपादन है, सूत्रों का विवेचन है, कर्मग्रन्थ का विश्लेषण है कि 48 मिनिट अप्रमत्त रहने वाले जीव को फिर संसार का संसरण नहीं करना पड़ता, भवभ्रमण में नहीं अटकना पड़ता। उसी अभ्यास के लिए 48 मिनिट की साधना के समय को सामने रखते हुए सामायिक में समभाव रखने का प्रयास किया जाता है। बहुत महत्त्वपूर्ण है यह समय। इस समय में जीव 65 हजार 536 बार जन्म-मरण कर सकता है। पाँच भव कर सकता है- देव गति, सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और नरक की भूमि में। बीच के तीन भव अन्तर्मुहूर्त से कम समय में और नरक, देव के भव का स्पर्श अर्थात् 5 भव एवं 4 गति का स्पर्श 48 मिनिट में।

48 मिनिट की सार सम्भाल हो जावे तो फिर बेड़ा पार हो जावे। मन लगाने के लिए ही सामायिक करनी है, यदि मन लग जाए तो मोक्ष मिल जाए। मन लगाने के लिए-

"दोय घड़ी निज रूप रमण कर जग बिसरावेला,
धर्म ध्यान में लीन होय चेतन सुख पावेला,
करलो सामायिक रो साधन, जीवन उज्ज्वल होवेला।"

दूसरे कार्यों में मन की तल्लीनता में मन कितना भटकता है? आर्त्तध्यान, रौद्र ध्यान की एकाग्रता में यह पता नहीं लगता कि मन कितना भटक रहा है। जब हम शान्त होते हैं तब अहसास होता है कि मन नहीं लग रहा है। जितने जीव मोक्ष में जा रहे हैं, गए हैं, जायेंगें वे सभी इस सामायिक की साधना करके ही गए हैं, जा रहे हैं और जायेंगें।

विषमता से राग-द्वेष पुष्ट होते हैं। बाहर की विषमता को कोई भी मिटाने में समर्थ नहीं है। क्लोन बनाने पर भी कुछ न कुछ अन्तर रह ही जाता है- आयु, रंग, रूप आदि किसी का भी। जुड़वा बच्चों में भी सभी में अन्तर हो सकता है।

इन सारी विभिन्नताओं को मिटाने में कोई समर्थ नहीं है- रूप-रंग, घर-परिवार, दुःख-दारिद्र्य, आयु आदि कर्म से मिलते हैं।

चार प्रकार के आयु के भंग होते हैं-

एक समय में आयु उदय में आई, एक समय में पूर्ण हो गई,
एक समय में उदय में आई, भिन्न समय में पूर्ण हुई,
भिन्न समय में उदय में आई, एक समय में पूर्ण हो गई,
भिन्न समय में उदय में आई, भिन्न समय में पूर्ण हो गई।

प्रीति आत्मा का नैसर्गिक गुण है। क्रोध प्रीति का नाश करता है। विषमता के रहते प्रीति का प्राप्त करना सम्भव नहीं हो सकता। सभी जीवों के आत्म-प्रदेश संख्या में समान हैं, अवगाहना की अपेक्षा से अन्तर हो सकता है। आत्मा के छिपे गुणों में कोई अन्तर नहीं है। प्रत्येक जीव निजानन्द, स्वाधीनता, मुक्ति, शान्ति, परमानन्द, निश्चिन्तता, अमरत्व, पूर्णता, निर्भयता, सुख आदि चाहता है। समता की साधना, स्वाध्याय- सामायिक, आचार-विचार की निर्मलता चित्त की स्वस्थता, चित्त में शान्ति, इन सबका परस्पर सम्बन्ध है।

सरलता अपने दोषों को देखने से आती है। बिना सरलता के अपने दोष दिख ही नहीं सकते। अपने दोष ढक कर दूसरों के दोष देखना माया है।

भीतर की दुनिया का रस आने पर बाहर में रस नहीं आता है, जिसे भीतर में रस नहीं आया, उसकी बाहर की दुनिया छूट नहीं सकती। इसे पाने का मार्ग ही सामायिक है।

स्वयं के दोषों को देखना आत्मभाव है, दूसरे के दोषों को देखना पर-भाव है। प्राणिमात्र में दोष-दर्शन की बुद्धि विद्यमान है, किन्तु वह स्वयं के दोष न देखकर उसका प्रयोग दूसरों पर करता है। इससे स्वयं के गुणों का अभिमान हो जाता है। स्वयं के गुणों का अभिमान सम्यक् दर्शन को नहीं आने देता।

सामायिक की भूमिका में पर की निन्दा हो ही नहीं सकती। ठाणांग सूत्र में कहा है कि चार विकथाओं का सेवन करने वाला अतिशय ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। निर्दोष वीतराग ही हो सकता है। दूसरों के दोष देखने से स्वयं भी दोषी बनते हैं, अतः अपना ध्यान पूर्ण रूप से निर्दोष वीतराग अरिहन्त सिद्ध पर रहे, हम निर्दोषता में रम जावें। 48 मिनिट तक बाहर के दोषों पर नजर न जावे, एकाग्रता बढ़ावें। अपनी भूलों को देखकर उनका शोधन करने का नाम है

सामायिक। सामायिक में द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव की शुद्धि भी अनिवार्य होती है। कर्म-बन्ध तो भाव से होगा। भाव के साथ द्रव्य आदि की शुद्धि करके चलना है।

मोक्ष पथ - अक्षय सुख

श्री जीवनचन्द कांकरिया

रोम-रोम में बसा है रोग,
रोक सके तो रोक,
करना है बस एक तुम्हें,
नहीं आना है, फिर कोख।

नहीं आना है फिर कोख यदि,
तो करना इक उपयोग,
कर्म कटे सारे मेरे,
जगानी है यह ज्योत।

जगानी है यदि ज्योत तुम्हें,
तो रोको मन वच योग,
भोग त्यागना,मोह त्यागना,
धारण करो संतोष।

धारण करें संतोष यदि,
तो जगेगा उपयोग,
धारूँ चारित्र करूँ तपस्या,
रोकूँ अशुभ योग।

रोके अशुभ योग यदि,
तो, रुकते हैं संयोग,
नये कर्म आये नहीं,
जर्जर पूर्व कर्मयोग।

जर्जर हो यदि कर्म पूर्व के,
तो पायेगा इक रोज,
अक्षय अव्याबाध सुख मोक्ष के,
नहीं आयेगा फिर 'कोख।।'

डी-2/4, बाबू बाजार, 3rd फ्लोर, एच.बी.रोड, गुवाहटी - 781001

चिन्तन

कर्मवादी महावीर

श्री उदय मुनि जी म.सा.

भगवान् महावीर के धर्म-दर्शन में उच्च कुल या जाति में जन्म लेने वाले को महान् नहीं माना जाता है। व्यक्ति कर्म से महान् होता है। जाति से कोई क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य या शूद्र नहीं होता। वस्तुतः स्व-कर्मों से युद्धकर उन्हें परास्त करने वाला योद्धा 'क्षत्रिय' है। वेदपाठी, श्रुतज्ञानी, आगमों, शास्त्रों का पारायण करने वाला हिंसादि पंचपापों का त्यागी ब्राह्मण है। आत्मार्थ का लाभ कमाने वाला वैश्य है। राक्षसी, नृशंस, पाशविक प्रवृत्तिवाला जीव ही शूद्र होता है, जन्म से नहीं। इस प्रकार अपने द्वारा निष्पन्न कर्मों से वह क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र होता है। इसीलिए महावीर के धर्मसंघ में जाति का कोई बंधन नहीं रहा। चौबीसों तीर्थंकर क्षत्रिय थे। महावीर के 11 गणधर और उनके4400 शिष्य ब्राह्मण थे। आनन्द, कामदेव आदि कई देशविरत-सर्वविरत संयमी थे, वे वैश्य थे। हरिकेशी मुनि, मेतार्य मुनि, अर्जुनमाली अणगार (पूर्वभव में चित्त और सम्भूत मुनि) चांडाल जाति के थे, निम्नवर्ग के थे। महारानियाँ, राजकुमारियाँ भी श्राविकाएँ-साध्वियाँ थीं। (अपेक्षा से) दासी चंदनबाला आर्या तो छत्तीस हजार सतियों में प्रधान थीं। आनन्द जैसे कोट्याधीश वैश्य श्रावक थे, वहीं कुम्भकार शकडाल, कसाई-पुत्र पूणिया श्रावक जैसे शिखर पुरुष श्रावक भी थे।

महावीर कहते हैं- मुंडित होने से कोई श्रमण नहीं होता, ओंकार के उच्चारण से (वेदपाठ-यज्ञादि से) ब्राह्मण नहीं होता, वनवास ले लेने से मुनि नहीं होता, कुश-चीवर धारण करने से तापस नहीं होता। समता से श्रमण, ब्रह्मचर्य साधने से ब्राह्मण, ज्ञान से मुनि और तप से कोई तापस होता है। अर्थात् जाति या जन्म-कुल महत्त्वहीन हैं। मनुष्य अपने कर्म से, आत्मपुरुषार्थ से महान् बनता है।

प्रभु महावीर किसी सर्वशक्तिमान ईश्वरीय सत्ता, नियति, प्रकृति की सत्ता को नहीं मानते, कर्म सत्ता को मानते हैं। जन्म-मरण, सुख-दुःख, ऊँच-नीच कुल, लाभ-हानि ये किसी तृतीय शक्ति द्वारा नहीं दिए जाते, ये प्रत्येक

जीव के स्व उपार्जित कर्मफल हैं। सृष्टि का इस चराचर जगत का कर्त्ता, धर्त्ता और हर्त्ता कोई ईश्वर या उसके प्रतिनिधि नहीं हैं। चतुर्गतिरूप सृष्टि का रचयिता, पोषक और नाश करके सिद्ध होने वाला स्वयं आत्मा है। आत्मा ही परमात्मा हो जाता है। प्रत्येक जीव में ऐसी शक्ति है।

पेड़ का एक पत्ता भी 'उसकी' इच्छा के बिना नहीं हिल सकता, कण-कण में भगवान् हैं उसके द्वारा दी गई भूमिका का ही प्रत्येक जीव निर्वाह करता है, ऐसा महावीर या उनके अनुयायी नहीं मानते। वे ईश्वर-कर्तृत्व को नकारकर कर्म को स्वीकारते हैं। महावीर कर्मवादी हैं। ईश्वर कर्तृत्व को, उनके द्वारा रचित वेदों को न मानने से, भले ही कोई महावीर या अनुयायियों को नास्तिक कहें, वस्तुतः सच्चे अर्थों में वे आस्तिक हैं, आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को मानने वाले हैं।

भगवान् महावीर सर्व अजीव द्रव्यों से जीव द्रव्य का पूर्णतः पृथक् एवं स्वतंत्र अस्तित्व मानते हैं। एक मात्र महावीर ऐसे धर्मवेत्ता हैं जो आत्मा को अनन्त आत्मैश्वर्यसम्पन्न मानते हैं। वह उसे प्रकट कर ले तो वही ईश्वर हो जाता है। प्रत्येक में ऐसी शक्ति छिपी है, उसे प्रकट करने हेतु वीतरागवाणी एक निमित्त है। अनन्त आत्म-वीर्य से वह प्रकट होता है। प्रत्येक आत्मा के स्वतंत्र अस्तित्व को महावीर मानते हैं।

प्रायश्चित्त

एक कीड़ा, मकोड़ा या मक्खी भूल से किसी के हाथ से कुचली जाय या उसे तकलीफ पहुँचे तो वह प्रायश्चित्त लेने को तैयार हो जाता है, परन्तु अपने यहाँ खून-पसीना बहाकर काम करने वाले आदमियों की रोजी काटने में, और भरपेट भोजन न देने में, हद से ज्यादा काम का बोझ डालकर उसे पीस देने में उसे तनिक भी क्षोभ नहीं होता।

आज जैन श्राविका को पक्खी के दिन हरी सब्जी खाने में, कूटने पीसने या नहाने, कपड़े धोने में जितना भय होता है, उतना निंदा, ईर्ष्या, कलह और ताना देने में भय नहीं लगता।

-संकलन : श्री भंवरलाल जी बाफणा, जलगाँव

शोधालेख

परिशिष्ट पर्व में वर्णित जैन इतिहास

डॉ. सागरमल जैन

जैन धर्म में परम्परागत दृष्टि से भगवान् ऋषभदेव से लेकर भगवान् पार्श्वनाथ और भगवान् महावीर के काल तक अनेक कथानक मिलते हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से और सामूहिक रूप से दिगम्बर परम्परा में पुराण और श्वेताम्बर परम्परा में चरित-काव्य लिखे गए हैं, किन्तु वर्तमान युग के इतिहासकारों ने इन सभी को पौराणिक काव्य-साहित्य के अंतर्गत ही लिया है। यद्यपि जैन तीर्थंकरों में ऋषभदेव, अरिष्टनेमि, पार्श्व और महावीर की ऐतिहासिकता को पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता है और इसीलिए इनके जीवन-चरित्र को पूर्णतया पौराणिक मान लेना भी उचित नहीं होगा। पार्श्व और महावीर की ऐतिहासिकता तो अब इतिहासकारों ने मान्य कर ली है। फिर भी इनके जीवन के सम्बन्ध में जो आख्यान और चरित-काव्य मिलते हैं, उनमें कितनी ऐतिहासिकता है और कितनी पौराणिकता है यह निर्णय करना तो अत्यन्त कठिन है। फिर भी उनके जीवन-वृत्त में जो मानवीय पक्ष एवं घटनाएँ प्रतिपादित की गई हैं, उसकी ऐतिहासिकता को हम नकार नहीं सकते हैं। जैन-तीर्थंकरों के और विशिष्ट पुरुषों के जीवन के सन्दर्भ में जो संस्कृत काव्य-ग्रन्थ हमें उपलब्ध होते हैं, उनमें जिनसेन का महापुराण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और इस शैली का प्रथम-ग्रन्थ कहा जा सकता है। इसके दो प्रमुख विभाग हैं- एक आदिपुराण एवं दूसरा उत्तरपुराण। आदिपुराण में भगवान् ऋषभदेव का और उस काल के प्रमुख व्यक्तियों का निरूपण है तो उत्तरपुराण में शेष 23 तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र वर्णित है। इसके अतिरिक्त अरिष्टनेमि और कृष्ण के जीवन-चरित को लेकर हरिवंश-पुराण की भी रचना हुई है। वैसे दिगम्बर परम्परा में पुराणों के लेखन की यह परम्परा अधिक प्रचलित रही है और लगभग 9वीं शताब्दी से लेकर 15-16 वीं शताब्दी तक संस्कृत एवं अपभ्रंश में अनेक पुराण-ग्रन्थ लिखे गए हैं।

श्वेताम्बर परम्परा में जिन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के सन्दर्भ में चरित-

काव्य लिखने की परम्परा रही है, उसमें सर्वप्रथम राम-कथा को लेकर 'पउम-चरियं' की रचना विमलसूरि ने की थी, यद्यपि इसमें ऋषभ आदि कुछ तीर्थंकरों के चरित भी संक्षेप में वर्णित हैं। इसी प्राकृत में रचित रामकथा के आधार पर रविसेन ने 'पद्मचरित' की संस्कृत में और स्वयंभू ने 'पउमचरिउ' की अपभ्रंश में रचना की थी। इसी प्रकार श्वेताम्बर परम्परा में आगमों के अतिरिक्त भी कृष्ण और पांडवों के चरित्र को लेकर कुछ ग्रन्थ लिखे गए। इसी क्रम में श्वेताम्बर-परम्परा में भी मलधारी गच्छ के देवप्रभसूरि ने 'पांडव-चरित्र' की रचना की थी। फिर भी ये सभी आख्यान मूलतः पौराणिक ही माने गए हैं। ऐतिहासिक महत्त्व की दृष्टि से इनको इतना अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है।

जहाँ तक श्वेताम्बर-परम्परा का प्रश्न है, उसमें महापुरुषों पर सामूहिक चरित-काव्य लेखन की परम्परा संभवतः शीलांकसूरि (नवीं-दसवीं शती) से मानी जाती है। शीलांक के 'चउप्पन्न-महापुरिस-चरियं' में चौबीस तीर्थंकरों, बारह चक्रवर्तियों, नौ बलदेवों और नौ वासुदेवों ऐसे चौवन महापुरुषों के चरित उल्लिखित हैं। यह ग्रन्थ मूल रूप से प्राकृत में रचित है। इस ग्रन्थ का आधार लेकर आचार्य हेमचन्द्र ने 'त्रिषष्टि-शलाका-पुरुष-चरित' की रचना की थी। उसमें उन्होंने नौ प्रतिवासुदेवों के चरित्र और जोड़ दिये और उसी के परिशिष्ट के रूप में उन्होंने भगवान् महावीर के पश्चात् की आचार्य परम्परा का उल्लेख करते हुए 'परिशिष्ट-पर्व' नामक इस ग्रन्थ की रचना की थी।

यह मूल ग्रन्थ त्रिषष्टि-शलाका-पुरुष-चरित का ही एक परिशिष्ट था, अतः इसका नाम 'परिशिष्ट-पर्व' दिया गया। इसका एक अन्य नाम 'स्थविरावली-चरित' भी है। यह ग्रन्थ त्रिषष्टि-शलाका-पुरुष-चरित्र के दस पर्वों के पश्चात् उसके परिशिष्ट के रूप में ही लिखा गया है। इसमें जम्बूस्वामी से वज्रस्वामी पर्यन्त जैन-परम्परा के प्रभावक आचार्यों के चरित्र कथित हैं। यह ग्रन्थ भी त्रिषष्टि-शलाका-पुरुष-चरित के समान ही संस्कृत भाषा में रचित है। इसके तेरह पर्व हैं और सम्पूर्ण ग्रन्थ 3500 श्लोक परिमाण है। जम्बूस्वामी से लेकर वज्रस्वामी तक के जैन-आचार्यों का उल्लेख होने से जैन-दृष्टि से इसे एक ऐतिहासिक-काव्य का नाम दिया जा सकता है। फिर भी ग्रन्थ की मूल-

दृष्टि उपदेशपरक होने से इसमें दृष्टान्तों के माध्यम से अन्य पौराणिक कथानक भी जोड़ दिए गए हैं साथ ही उन प्रभावक आचार्यों की महत्ता दिखाने हेतु कुछ चामत्कारिक अतिशयोक्तियाँ भी जोड़ दी गई हैं। इसीलिए इसमें पौराणिकता का भी अंश समाया हुआ है। फिर भी इन कथानकों की आधारभूत विषयवस्तु विशेष रूप से तीर्थंकरों एवं स्थविरों के चरित्र तो आगम-काल से ही मिलने लगते हैं।

श्वेताम्बर-परम्परा में मान्य अर्धमागधी आगमों में सर्वप्रथम हमें कल्पसूत्र में चार तीर्थंकरों के जीवन-चरित्र के साथ ही स्थविरावली में इन प्रभावक आचार्यों के सन्दर्भ उपलब्ध होते हैं। इस स्थविरावली में सुधर्मास्वामी से लेकर देवर्धिगणि तक की आचार्यों की पट्ट परम्परा मिलती है। यद्यपि यह स्थविरावली इन आचार्यों के जीवन-चरित्र का तो कोई विशेष उल्लेख नहीं करती है, किन्तु इनके गण, शाखा, कुलों एवं शिष्य-परम्परा आदि के निर्देश इसमें मिल जाते हैं तथा इन गण, शाखाओं और कुलों की उत्पत्ति किस आचार्य से किस रूप में हुई, इसकी सूचना भी हमें उपलब्ध हो जाती है। इस संक्षिप्त सूचना के अतिरिक्त इस स्थविरावली में विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। इस स्थविरावली की लगभग समकालीन आचार्य-परम्परा का उल्लेख करने वाली दूसरी स्थविरावली हमें नन्दीसूत्र में प्राप्त होती है। नन्दीसूत्र की इस स्थविरावली की विशेषता यह है कि चाहे इसमें आचार्यों के गुण, कुल, परम्परा आदि का उल्लेख अधिक न हो, किन्तु उनके जीवन की विशिष्ट घटनाओं अथवा उनकी विशिष्ट योग्यता के निर्देश इसमें हमें मिल जाते हैं। इस प्रकार इन आचार्यों के व्यक्तित्व को उजागर करने की दृष्टि से नन्दीसूत्र स्थविरावली विशिष्ट महत्त्व की जान पड़ती है। इसमें वाचक-वंश अथवा विशिष्ट ज्ञानी आचार्यों का ही उल्लेख हुआ है। अतः कल्पसूत्र स्थविरावली की अपेक्षा यह स्थविरावली किसी दृष्टि से संक्षिप्त ही कही जा सकती है। आचार्यों के कुछ विशिष्ट कार्यों एवं गुणों के अतिरिक्त इस स्थविरावली में भी आचार्यों के जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में हमें विशेष जानकारी नहीं मिल पाती है। फिर भी जैन इतिहास की दृष्टि से कल्पसूत्र और नन्दीसूत्र की स्थविरावलियाँ अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती हैं। कल्पसूत्र स्थविरावली की ऐतिहासिक प्रामाणिकता

निर्धारित करने के लिए हमें मथुरा के स्तूप से, जो पचास से अधिक अभिलेखीय साक्ष्य उपलब्ध होते हैं वे महत्त्वपूर्ण हैं। वस्तुतः जैन-अभिलेखों में मथुरा से प्राप्त ये स्तूप-अभिलेख अतिमहत्त्वपूर्ण हैं। क्योंकि इनसे कल्पसूत्र की स्थविरावली की ऐतिहासिक प्रामाणिकता सिद्ध होती है। दूसरी ओर ये भी कल्पसूत्र की स्थविरावली की प्रामाणिकता को ही पुष्ट करते हैं।

इन आगमिक उल्लेखों के अतिरिक्त महावीर की पट्ट-परम्परा सम्बन्धी कुछ प्रकीर्ण उल्लेख हमें निर्युक्ति-साहित्य में मिल जाते हैं। परम्परागत दृष्टि से यह माना जाता है कि दस आगमिक ग्रन्थों पर सर्वप्रथम निर्युक्तियाँ लि खी गईं। आवश्यक निर्युक्ति आदि दस निर्युक्तियों के लिखे जाने का उल्लेख है। उनमें से वर्तमान में ऋषिभाषित और सूर्यप्रज्ञप्ति की निर्युक्ति तो उपलब्ध नहीं होती, किन्तु शेष आठ दशवैकालिक-निर्युक्ति के ही अंश के रूप में ओघ-निर्युक्ति और पिंड-निर्युक्ति के साथ दस निर्युक्ति ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। निर्युक्तियों में कहीं-कहीं महावीर के परवर्ती कुछ जैन आचार्यों की कथाओं के निर्देश भी हमें उपलब्ध हो जाते हैं। यद्यपि निर्युक्तियाँ पद्य रूप होने के कारण उनमें भी कथाओं के निर्देश मात्र ही मिलते हैं, उनका विस्तृत विवेचन नहीं मिलता है। कथाओं में अपेक्षाकृत कुछ विस्तृत निर्देश हमें प्राकृत भाषा में रचित आगमों के भाष्यों एवं चूर्णियों में मिल जाते हैं। चूर्णियों के आधार पर हरिभद्र, शीलांक और अभयदेव ने जो आगमों की टीकाएँ लिखी हैं, उनमें भी इन कथाओं के निर्देश अधिक विस्तार से हमें मिलते हैं।

आचार्य हेमचन्द्र ने 12वीं शताब्दी में इन्हीं पूर्व उल्लिखित कथानकों के आधार पर 'परिशिष्ट-पर्व' की रचना की है। अतः इन कथानकों की ऐतिहासिकता को पूरी तरह झुठलाया नहीं जा सकता है। यद्यपि इन कथानकों में कुछ पौराणिक अंश भी आ गया है, जिसका निर्देश हम पूर्व में कर चुके हैं। प्रोफेसर हर्मन याकोबी ने परिशिष्ट-पर्व की इन कथाओं की सम्पूर्ण सामग्री किन-किन आगमिक व्याख्या ग्रन्थों से ली है, इसका सम्पूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ये कथाएँ आचार्य हेमचन्द्र की स्वैर-कल्पना नहीं हैं। इनमें उन्होंने आगमिक व्याख्याकारों के कथानकों को अंपना आधार बनाया है।

परिशिष्ट-पर्व के प्रथम-सर्ग से लेकर पाँचवें सर्ग तक आचार्य हेमचन्द्र ने जम्बूस्वामी से लेकर भद्रबाहु प्रथम तक के कथानकों का उल्लेख किया है। इसमें क्रमशः जम्बूस्वामी, प्रभव, शय्यम्भव, यशोभद्र, सम्भूतिविजय और भद्रबाहु के कथानक उल्लिखित हैं। साथ ही भद्रबाहु के परवर्ती आचार्यों में स्थूलिभद्र, महागिरि, सुहस्ति आदि के भी उल्लेख हैं। प्रसंगवश इन्द्रदिन्न, आर्यदिन्न, सिंहगिरि और आर्य भद्रगुप्त के जीवनवृत्त के निर्देश तो इसमें उपलब्ध होते हैं साथ ही तोसलीपुत्र भद्रगुप्त, धनगिरि आदि के भी उल्लेख हैं। यह अंश विस्तृत है तथा इसमें इन आचार्यों के पूर्व-भवों एवं अन्य कथाओं का सम्मिश्रण भी देखा जाता है। दूसरे एवं तीसरे पर्व में मुख्य रूप से प्राणी-कथाएँ, लोक-कथाएँ तथा नीति-कथाएँ दी गई हैं। चतुर्थ-पर्व भी मूलतः उपदेशात्मक होकर ऐसी ही कथाओं से युक्त है। पाँचवें पर्व के अर्द्धभाग से लेकर आठवें पर्व तक आचार्य हेमचन्द्र ने प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की है। इसमें पाटलीपुत्र की स्थापना, उस पर नन्दवंश का अधिकार और नन्दवंश से सम्बन्धित राजाओं के कथानक दिए गए हैं। उसके पश्चात् मौर्यवंश की स्थापना, मौर्य-सम्राट् चन्द्रगुप्त और उसके मंत्री चाणक्य के कथानक दिए गए हैं। जैन-परम्परा में समाधि-मरण सम्बन्धी जो कथानक मिलते हैं, उनमें भी चाणक्य के साथ हुए षड्यन्त्रों तथा उसके द्वारा समाधि-मरण ग्रहण करने सम्बन्धी निर्देश मिलते हैं। इसके अतिरिक्त इन सर्गों में वररुचि, सकडाल आदि के कथानक प्राप्त होते हैं। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि इसी क्रम से मौर्यवंश के बिन्दुसार, अशोक, कुणाल और सम्प्रति के कथानक भी उपलब्ध हैं। सम्प्रति के द्वारा जैन-धर्म के प्रचार के लिए जो उपक्रम किए गए थे उनका निर्देश भी इस परिशिष्ट पर्व में उपलब्ध होता है। इसी प्रकार परिशिष्ट-पर्व सामान्य रूप से भारतीय इतिहास और विशेष रूप से जैन-धर्म के इतिहास के सन्दर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रदान करता है।

परिशिष्ट-पर्व के नवम पर्व से लेकर तेरहवें पर्व तक आचार्य हेमचन्द्र ने स्थूलिभद्र से लेकर वज्रस्वामी तक के इतिहास का प्रतिपादन किया है। इन पाँच सर्गों में स्थूलिभद्र, आर्य सुहस्ति, आर्य महागिरि आदि से लेकर वज्रस्वामी तक के पट्टधरों के जीवन-वृत्तान्त और उनसे सम्बन्धित ऐतिहासिक

कथानकों का भी समुचित विवरण प्रस्तुत कृति में मिल जाता है। इस प्रकार परिशिष्ट-पर्व में जैन-इतिहास की दृष्टि से महावीर के पश्चात् की पट्ट-परम्परा का कुछ अतिशयोक्तियों को छोड़ दें तो एक प्रामाणिक चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। इस प्रकार परिशिष्ट-पर्व ऐसा प्रामाणिक और ऐतिहासिक ग्रन्थ है, जो महावीर से लेकर ईसा की प्रथम-द्वितीय शताब्दी तक का जैन-इतिहास प्रस्तुत कर देता है। भद्रेश्वर की 'कहावली' इसके बाद का पहला ग्रन्थ है, जो महावीर की परम्परा में हुए आचार्यों में हरिभद्र(आठवीं शताब्दी) तक का विवरण प्रस्तुत करता है। उसके पश्चात् इस दृष्टि से लिखे गए ग्रन्थों में प्रभाचन्द्र का 'प्रभावक-चरित' (वि.सं. 1334) भी एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसी क्रम में आगे इस दृष्टि से लिखे गए ग्रन्थों में पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह, प्रबन्ध-चिन्तामणि, प्रबन्ध-कोश, प्रभावक-कथा आदि ग्रन्थ आते हैं जो जैन-इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन इन सभी ग्रन्थों में ग्रन्थकारों ने कहीं न कहीं परिशिष्ट-पर्व का सहयोग लिया है। इस दृष्टि से परिशिष्ट-पर्व का महत्त्व और विशेषता स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस परिशिष्ट-पर्व में जम्बूस्वामी से लेकर वज्रस्वामी तक के पट्टधरों की जीवनियाँ और उनके साथ ही प्रसंगान्तर से कुछ ऐतिहासिक कथानकों का भी संग्रह हुआ है।

परिशिष्ट-पर्व की शैली उदात्त है। उपदेशप्रद होते हुए भी इसमें प्रवाह-गुण और प्रसाद-गुण उपलब्ध होते हैं। जैसा कि हमने पूर्व में उल्लेख किया कि प्रभावक-चरित, पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह, प्रबन्ध-चिन्तामणि, प्रबन्धावली, प्रबन्ध-कोश आदि भी इसी तरह की रचनाएँ हैं। यद्यपि यहाँ एक जिज्ञासा अवश्य उत्पन्न होती है कि जहाँ प्रबन्ध-कोष आदि ग्रन्थों में भद्रबाहु से परवर्ती नन्दिल, जीवदेव, आर्य खपुट, पादलिप्त, सिद्धसेन, मल्लवादी, हरिभद्र, बप्पभट्टि आदि का भी उल्लेख किया गया है, वहाँ प्रस्तुत कृति वज्रस्वामी के जीवन-वृत्तान्त के साथ ही समाप्त हो जाती है। जबकि ये सभी आचार्य हेमचन्द्र से तो पूर्ववर्ती रहे हैं फिर भी हेमचन्द्र ने इनका उल्लेख क्यों नहीं किया? यह विचारणीय विषय है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

अंग्रेजी-स्तम्भ

Role of Jaina Ethics in Peace and Harmony of Global Civilization

Dr. Sohan Raj Tater

Principle of Jaina Ethics

Ethics discipline (ācāra-dharma) is an important aspect of Jainism. It has a two fold objective. First, it brings about spiritiual purification and secondly makes an individual a worthy social being who can live as a responsible and well behaved neighbour. The ethical discipline is well graded in Jainism to suit the ability and environment of an individual. It is prescribed to him according to his will to carry it out sincerely, without and negligence either in its understanding or in its practice. Jaina ethics is based neither on oneness of life as in Vedānta, nor on momentary nature of soul as in Buddhism. It is based on equality of life. Basically all souls are equal. Therefore, no wonder that such percepts as non-violence in Jainism take into account not only the human beings or animals or insects but even plant life or one sensed living organism life, like-earth, water, fire and air etc. The social organizations as anticipated by jaina ethics, do not make any distinction on the basis of caste, creed or colour.

The foundation of the ethical discipline is the doctrine of Ahimsā. If we correctly comprehend it, it will be seen that it is the recognition of the inherent right of an individual to live so universally expressed that every one wants to live and no body likes to die. Thus, therefore, no one has any right to destroy or harm any other living being. Viewed as such Ahimsā is the fundamental law of civilized life and rational living; and thus forms the basis of all moral

instructions in Jainism. The laying down of the commandment not to kill and not to damage is one of the greatest events in the spiritual history of mankind.[1]

Present day problems of global civilization and their solutions by Jaina ethics

Syādvāda, which has become almost a synonym for Jainism, teaches us that the same truth could be differently expressed without involving us in any real contradiction. Jainism has always kept the problems of global civilization in view, and has shown the utility of Jaina ethical concepts for humanity in general. Jaina ācāryas have always stood for the dignity of man, and equality of all, advocated the birth-right of independence of all individuals and have preached the elevated ideal of non-violence. When there is a feeling-realization of the true nature of the self and when one is completely lost in the bliss of self-meditation, the observance of all the moral rules become spontaneous, coming from with in and not being on imposition from without. No ethical study could be useful unless it provides an answer to the problems with which our lives are beset. The problems of global civilization arise out of various factors, which can be classified under the following broad heads:

(i) Selfishness
(ii) Ignorance
(iii) Scarcity
(iv) Injustice

(i) Selfishness :- Selfishness lies at the root of all global problems. All immoral Practices of global civilization arise out of selfish nature of man. Selfishness can be overcome by realizing the true nature of the Soul.

An ordinary Jaina (Samyagdṛṣṭi) is not allowed to indulge in feelings of anger, pride, hypocrisy and greed continuously for more than a year, a householder at an

advanced stage (Srāvaka) for more than four months, and a monk for more than fifteen days. Perfection or liberation is attained when these feelings are completely overcome. The above ethical idea, which Jainism gave with reference to individual Sādhanā, could be interpreted afresh in the context of modern day global problems to suggest that all nations of globe could also maintain their individuality, and yet live in peace and harmony if negative ideas of anger, pride, hypocrisy and greed could be renounced. It could, thus, teach the possibility and utility of co-existence in modern times and bring the hope of a brighter future for war-ridden global civilization of today. If Jaina ethics could bring home to us that alone, its purpose will be more than achieved.

(ii) Ignorance :- Jainism teaches us that all knowledge is relative and co-related. Let us be receptive to every thought. One sided attitude only complicates global problems rather than solve them. It dose not give us any solution to such ethical questions as 'determinism' and 'freedom of will'. Non-absolutism shows us the path of synthesis among fate and human effort; faith, knowledge and action; and supra-moral plane of life practical code of morality. The answer of Jainism to the problem of knowledge is represented in its doctrine of non-absolutism. Much of misunderstanding between one nation and the other of globe could be solved if we could adopt the attitude of non-absolutism on political problems.

(iii) Scarcity :- "The greater the possessions, the greater the happiness" is the motto of many. Jainism teaches us quite the opposite : "the lesser the possessions the greater the happiness". Happiness comes from what we are and not from what we possess. We should realize the blissful nature of the soul. The answer of Jainism to the problem of scarcity is : Be not attached to the worldly objects; be not their slaves

: turn to the self within where from comes the true happiness. This does not imply a life of inertia, but that of contemplation and contentment.

(iv) Injustice :- The bigger fish swallows the smaller ones. The mighty and the aggressive prosper, the humble and the meek suffer. The result is the rule of jungle. In the sphere of politics we kill and crush in the name of caste, creed and colour. The result is war and bloodshed. Jainism brings us hope of justice in the form of doctrine of karma. As we sow, so shall we reap. Though there is no God who sits upon judgement on us, there is a law, based on theory of cause and effect, which works automatically and unfailingly. All lives are equal and the stronger has no right to do any injustice to the weaker : and if they do, they don't harm anybody but themselves.

We should meet on injustice not with force but with forbearance. Violence begets violence, enmity leads to enmity : but if we don't retaliate it, it subsides. The attitude of equanimity of Pārśva to Dharaṇendra and kamaṭha, when the former tried to save him from the later who tried to kill, beautifully illustrates the Jaina attitude. Jainism has also opposed from the beginning any social injustice arising out of casteism or racialism. "Mankind is one community" says jinsenācārya.[2] Mahātmā Gandhi successfully applied the creed of non-violence to redress the injustice of one nation against another. The creed of non-violence, if applied to the global problems, has the potentiality of wiping out the institution of war from the surface of global civilization. Thus the answer of Jainism to the problem of injustice is four fold : doctrine of karma, equality of life, non-violence and equanimity.

Jain ethical discipline-Non–violence and its role in peace and harmony of global civilization

Ahiṁsā with the Jaina doctrine of nayavāda can very

well serve as the supreme principle of morality. Hence there is nothing in the world or even out of it that can be called good except the principle of Ahimsā of all beings. It is a form and can be validly applied to all the particular cases. It is said in the Jaina ethics that both the indulgence in himsā and the negation of abstinence form himsa constitute himsā.[3] In other words, he who has not abandoned himsā, though he is not factually indulging in it, commits himsā on account of having the subconscious frame of mind for its perpetration. Again, he who employs his mind, body and speech in injuring others also commits himsā on account of actually indulging in it. Thus, wherever there is inadvertence of mind, body or speech himsā is inevitable.[4]

"The principle of non-violence really implies that life should be elevated altogether from the plane of force to that of reason, persuasion, accommodation, tolerance and mutual service."[5] The virtues of non-violence and Aparigraha are capable of establishing universal peace. Jaina ethics believes Ahimsā means Universal love. Non-violence cannot be materialized in the life of the country without extirpating the passion of greed. The root cause of violence is material goods. If the importance of the virtue of Aparigraha is understood at the international level, the attitude of non-violence will synchronize.

National and international activities of a country should be guided by the principle of non-violence and anekanta. In order that country may function properly without encroaching upon the inherent spiritual nature of man, it must identify itself with samyagdarśana, samyagjñāna and samyag cāritra. The policy of the country must exhibit unflinching faith in, and tenacious adherence to the principle of non-violence. This will crown the country with samyagdarśana which will ispo facto bring enlightment to it, and result will be the emergence of

samyagjñāna. In other words, the adoption and assimilation of Anekānta is samyagjñāna. The resolute and astuto application of the policy of non-violence and Anekānta in the national and international spheres for solving all sorts of problems will credit the country with samyagcāritra. The passions of fear, hatred towards any other country, the passions of deception, greed to expand its territory and to usurp other country's wealth and freedom, the passions of pride of wealth, power, achievement and heritage-all these should be banished from the country, because they are corruptive of the veritable spirit of progress. On the positive side, the country should pursue the discipline which flows from samyagdarśana, samyagjñāna and samyagcāritra.

References :

1. Indian thought and its Development by Albert Schweitzer, London 1951, pp. 82-83.
2. Manusyajātirekaiva-Ādipūraṇa 38.45.
3. Purusārthasiddhyupāya-Amrtacandrācārya. 48, Rāyacandra Jaina śāstramātlā, Bombay.
4. Ibid, 48.
5. World problems and Jaina ethics-by Beni Prasad, Jaina culture society, Banaras, P. 9.

-Advisor, Jain Vishva Bharati University, Ladnun.

SUCCESS & TROUBLE

- Struggle, an eight letter word, exhausts you, irritates you, and sometimes demoralizes you. But it gives you the elegant reward of life time called-SUCCESS!
- If you cry on trouble, It grows double, and if you laugh on trouble, it disappears like a bubble, so always face your problems with a lovely SMILE. .

-Mrs. Yugal N. Ranka,
9th, Giriraj flats, Hirabag society,
Mani Nagar, Ahemdabad (Guj.)

कविता

संघ-सेवा ही हमारा काम

श्री त्रिलोकचन्द जैन

हम जिन उपासक युवा हैं, मोक्ष हमारा धाम।
संघ-सेवा ही हमारा काम, संघ-सेवा ही हमारा काम।।

चतुर्विध संघ व समाज सेवा, धार्मिक शिक्षण से साधना,
स्वधर्मि वात्सल्य और, सामायिक स्वाध्याय आराधना,
परिषद् के ये चार आयाम, संघ सेवा ही हमारा काम।।

मेधावी छात्र करें विकास, मिले उनको प्रोत्साहन,
जीवन निर्माण कर करें, संघ समर्पित जीवन,
उदार हृदय से करते दान, संघ-सेवा ही हमारा काम।।

'आओं स्वाध्याय करें' मिल, गुरु दर्शन हो सपरिवार,
नित्य भोर हो प्रार्थना, शिविर परिवार संस्कार,
जगो जैनी का आह्वान, संघ-सेवा ही हमारा काम।।

प्रतिवर्ष एक नई चेतना, और लाते एक नई धारा,
लक्ष्य बनाकर कर देते, अंधियारे में उजियारा,
25 बोल, प्रतिक्रमण अभियान, संघ-सेवा ही हमारा काम।।

अनुगामी उन चरणों के, सिद्धान्तों पर जो अड़े रहे,
आँधी-तूफान समान बाधा में, अचल हो जो खड़े रहे,
गुरु हमारे प्रभु के प्रमाण, संघ-सेवा ही हमारा काम।।

मिले शूल या अंगारे, पथ में बिखरे कांटे सारे,
हम गुरु कृपा के हैं धारी, जो कभी नहीं हैं हारे,
बढेंगे चाहे मिले व्यवधान, संघ-सेवा ही हमारा काम।।

-156, आई.एच.एस. कॉलोनी, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)

चिन्तन

धर्म का आधार : निज ज्ञान

श्री रणजीत सिंह कूमट

धर्म सार्वकालिक, सार्वजनीन और सर्वहिताय है। पन्थ या सम्प्रदाय को 'धर्म' मानने से व उनमें अन्तर ज्ञात न होने से अपने-अपने पन्थ, सम्प्रदाय या गुट को 'अपना धर्म' मान कर लोग उसके संकीर्ण घेरे में बँध कर एक दूसरे से वैर, झगड़ा और खून खराबा करते हैं। इस प्रकार जो मार्ग सबके भले के लिये है वह जानलेवा और जन-जन के लिये दुःख का कारण बन जाता है। इतिहास में जितने युद्ध, खून खराबे और हत्याएँ 'पन्थ' और 'सम्प्रदाय' या तथाकथित 'धर्म' के नाम पर हुई हैं उतनी किसी भी नाम पर नहीं हुई हैं। आज भी यह क्रम चल रहा है और कई बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं।

धर्म का सही स्वरूप न समझने से और तथाकथित धार्मिक नेताओं के बहकावे में आकर जनता सही मार्ग का अनुसरण नहीं कर पाती। धर्म हमारे अन्तर में निहित है और प्रत्येक प्राणी इसे आसानी से जान एवं समझ सकता है। प्रत्येक प्राणी में निजी समझ है, ज्ञान है, प्रज्ञा है। जिसके आधार पर प्राणी अपने भले-बुरे को पहचानता है, अपना बचाव करता है, अपने परिवार की रक्षा करता है और दुःख में फंसे किसी अन्य प्राणी की भी रक्षा करता है। पशु-पक्षी जगत् में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं जहाँ दो जीवों में नैसर्गिक वैर होते हुए भी संकट में फंसे प्राणी को बचाया एवं जीवन दान दिया जाता है। बिल्ली के बच्चे को मादा कुत्ते द्वारा दूध पिलाते देखा है। हाथी को छोटे जानवरों की रक्षा करते देखा गया है। मानव जगत् में भी नैसर्गिक दया का भाव भयंकर एवं कठिन परिस्थितियों में देखा गया है।

प्राणी में जो निज ज्ञान या समझ अथवा विवेक या स्वभाव है वही उसका धर्म है। जब तक उस पर कोई लेप नहीं है तब तक वह शुद्ध धर्म है। हम अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनना सीखें, अपनी इस आवाज को दबाएँ नहीं। इस आवाज को सुनने वाले को ही सच्चे अर्थ में 'श्रावक' कहा जा सकता है। भगवान् महावीर के अनुसार 'श्रावक' वह है जो सुनता है।

इस धर्म के मुताबिक कोई प्राणी मरना नहीं चाहता, कष्टमय जीवन जीना नहीं चाहता, अपने ऊपर शासन या दमन नहीं चाहता; न ही किसी प्रकार की प्रताडना, पीड़ा अथवा दुःख चाहता है। सब प्राणी जीना चाहते हैं; जीना ही नहीं चाहते वरन् सुख से जीना चाहते हैं, स्वतन्त्रता व अपनी मौज मस्ती से जीना चाहते हैं। जैसे आप स्वयं जीना चाहते हो वैसे ही सबको जीने दो, इसी में सम्पूर्ण जगत् का धर्म निहित है। धर्म का सार महाभारत में वेदव्यासजी ने इन शब्दों में समाहित किया है--"जो व्यवहार तुम अपने प्रति नहीं चाहते वह किसी अन्य के प्रति मत करो।" इससे ज्यादा सरल परिभाषा धर्म की क्या होगी? इसमें किसको ऐतराज है या हो सकता है? हम यदि इस नियम या व्याख्या का पालन कर लें तो हमारे जीवन, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व में किसी भी तरह का संघर्ष, मनमुटाव, झगड़ा, तनाव या मतभेद संभव ही नहीं है। यह सार्वजनीन व सर्वकालिक धर्म है। वास्तव में धर्म वही है जो सार्वजनीन व सार्वकालिक हो और जिसमें किसी का मतभेद न हो।

धर्म का पर्यायवाची शब्द है- कर्त्तव्य। हम कई बार बोलचाल की भाषा में बोलते हैं कि 'इस परिस्थिति में मेरा क्या धर्म बनता है'? इसका अर्थ यही होता है कि मेरा क्या कर्त्तव्य है? वास्तव में धर्म का तात्पर्य कर्त्तव्य ही बनता है। जीवन में, परिवार में, समाज या राष्ट्र के प्रति जो भी हमारा कर्त्तव्य है वही हमारा धर्म है। अब कर्त्तव्य की यदि सूची बनाने बैठें तो बहुत लम्बी बनेगी और देश, काल व परिस्थिति के अनुसार सूची बदलती भी रहेगी। कर्त्तव्य की सूची सर्वकालिक एवं सम्पूर्ण कभी भी नहीं बन सकती। अतः सरल उपाय यह लगा कि यदि हम अकर्त्तव्य (न करने योग्य) की सूची बना दें तो जो बचेगा वह कर्त्तव्य ही है। अकर्त्तव्य की सूची बनाना आसान है और जो इसे समझकर पालन करेगा वह स्वतः ही कर्त्तव्य की ओर अग्रसर होगा! यह जरूरी नहीं है कि अकर्त्तव्य से बचने वाला सकारात्मक कार्य करे, परन्तु जो करणीय नहीं है उसे न करने से भी कर्त्तव्य की पूर्ति कर रहा है। देश हित के विरुद्ध काम न करने से देश के प्रति एक अहम् जिम्मेदारी तो पूरी होती है कि किसी देशद्रोही का साथ नहीं देंगे अन्यथा अनजाने या लोभवश यह भी कार्य कर बैठेंगे। इसीलिये धर्म के पैगम्बरों, तीर्थंकरों एवं सन्त पुरुषों ने धर्म की प्रथम सीढ़ी नकारात्मक ही बताई। भगवान्

महावीर, भगवान् बुद्ध, ईसामसीह, मोहम्मद साहिब, गुरुनानकदेव आदि सबने सर्वप्रथम यही कहा कि किसी प्राणी को मत मारो **(Thou shall not kill)**। इसी तरह झूठ मत बोलो, चोरी मत करो, परस्त्रीगमन मत करो आदि सभी आदेश **(Command)** निषेधात्मक हैं। मोजेज को दस फरमान जो भगवान ने दिये जिन्हें **Ten Commandments** के नाम से जाना जाता है वे सब नकारात्मक हैं। अकर्त्तव्य से बचना, अकरणीय को न करना मूल व प्राथमिक धर्म है। जब तक हम निषेधात्मक का पालन नहीं करेंगे, सकारात्मक की ओर कदम बढ़ा नहीं पायेंगे। यह बड़ी विडम्बना होगी कि चोरी या हिंसा करते रहें और दान के स्वरूप धन बाँट कर वाह-वाही लूटें या मन्दिर, धर्मस्थान बनवा कर अपना नाम शिलालेख पर मोटे अक्षरों में लिखवा लें। अकरणीय व हेय को त्याग कर ही विधेयात्मक या सकारात्मक कार्यों को सही रूप से कर सकते हैं। अतः अकर्त्तव्य को छोड़ना सबसे पहला धर्म है।

अकर्त्तव्य को पहचानने के लिये भी किसी शास्त्र या बाहर के उपदेश की आवश्यकता नहीं है। यह भी हमें निज ज्ञान से उपलब्ध है। इसकी एक मात्र कसौटी है कि हम किसी को हानि नहीं पहुँचाएँ, कष्ट अथवा पीड़ा न दें। यह भी नकारात्मक ही है क्योंकि कष्ट या पीड़ा न पहुँचाने की सीढ़ी पार करने के बाद ही लोगों पर दया या अनुकम्पा की बात आ सकती है। किसी एक को पीड़ा पहुँचा कर दूसरे की मदद करने को उचित नहीं ठहराया जा सकता है। ऐसे कई किस्से आते हैं जहाँ धनी व्यक्तियों को लूट कर पैसा गरीबों में बाँट दिया और लोगों ने उसे देवता की उपाधि दी, परन्तु अच्छे लक्ष्य के लिये साधन भी अच्छे होने चाहिये। पीड़ा पहुँचाने और मदद करने को दो धुरी मान लिया जाय तो इसमें चार तरह के व्यक्ति मिलेंगे जिनका वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है:-

1. दूसरे का अहित किसी भी हालत में नहीं करना, लेकिन दूसरों की मदद अवश्य करना, चाहे उसमें स्वयं का नुकसान ही क्यों न हो जाये या जान की बाजी भी क्यों न लगानी पड़े।
2. दूसरे का अहित नहीं करना और हो सके तो दूसरे का हित करना, लेकिन यदि स्वयं को कष्ट में डालना पड़े या कोई आर्थिक भार हो तो हित या मदद नहीं करे या करने से हिचक जाये।

3. व्यक्ति अपना अहित किये बिना दूसरों का नुकसान करता है।
4. व्यक्ति किसी न किसी का नुकसान या अहित करने पर तुला है चाहे इसमें उसका नुकसान भी क्यों न हो जाये।

ये दो विपरीत ध्रुव हैं। पहला व्यक्ति श्रेष्ठ या अत्युत्तम है व दूसरी तरह का व्यक्ति भी उत्तम है और इसी श्रेणी में अपने आप को रखना चाहिये। तीसरी श्रेणी हेय है और चौथी निकृष्ट इन दोनों से बचना चाहिये। हम पहली और दूसरी श्रेणियों में रहें तो धर्म का निर्वाह कर रहे हैं।

धर्म की बात कितनी सरल है और इसे समझाने के लिये निज ज्ञान के अतिरिक्त किसी की सलाह लेने की भी आवश्यकता नहीं है। सबके कल्याण व मंगल में ही हमारा कल्याण, मंगल व अविरल सुख निहित है, अन्य को दुःख देकर हम कभी सुखी महसूस करने की कल्पना नहीं कर सकते। इस सम्बन्ध में एक कवि ने सुन्दर कविता लिखी है उसका अवलोकन प्रेरणादायक रहेगा–

यदि भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना,
अमृत न पिलाने को घर में तो जहर पिलाते भी डरना....।

इसका अन्तिम छन्द निम्न प्रकार है:–

अगर भगवान नहीं तो कम से कम इन्सान बनो,
किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बन कर भी मत मरना।

इस कविता में अकर्त्तव्य पर रोक लगाते हुए इन्सानियत के कार्य करने पर जोर दिया गया है। इन्सानियत का मूल गुण है करुणा, मैत्री, सहानुभूति, और सद्भावना। मैत्रीभाव के बिना जीवन नीरस ही नहीं होता, इन्सानियत से नीचे गिरा देता है। इस सम्बन्ध में गुरुदेव चित्रभानुजी जिन्होंने अमेरिका व अन्य देशो में जैन धर्म का काफी प्रचार प्रसार किया है उनकी मैत्री भावना की पुस्तिका से एक कविता प्रस्तुत कर रहा हूँ–

मैत्री भाव का पवित्र झरना,
मेरे हृदय में बहा करे।
शुभ हो सारे विश्व जीवों का,
ऐसी भावना नित्य रहे।

इसी संदर्भ में 'महावीर इन्टरनेशनल' नाम की सेवाभाव की संस्था जिसका अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष रहने का मौका मुझे मिला, उसकी प्रार्थना, जो सभा प्रारम्भ करने से पहले गाई जाती है, उसका जिक्र किये बिना नहीं रह सकता। उसकी पहली पंक्ति निम्न प्रकार है:-

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो,
सत्य संयम शील का व्यवहार बारम्बार हो।

इस प्रकार समस्त जैन साहित्य ही नहीं सभी संतों व महापुरुषों की वाणी में यही सुनने को मिलता है कि दया और मैत्री में ही धर्म निहित है और मैत्री एवं करुणा के बिना इन्सान और हैवान में कोई अन्तर नहीं रहता। दया और करुणा हमारे दिल में स्वतः बसी है और इसे मात्र पुष्ट करना है और हमारे कषाय यथा क्रोध, मान, माया व लोभ को इस पर हावी नहीं होने देना है। यदि ये कषाय हावी न हों तो दया, मैत्री, प्रमोद, आदि गुण स्वतः ही प्रकट होंगे और उनके अनुसार आचरण करना ही धर्म है और उसी में हमारा कल्याण है।

निज ज्ञान का आदर करना ही विवेक है और विवेक ही धर्म है। उत्तराध्ययन सूत्र में भी आया है कि प्रज्ञा से धर्म की समीक्षा करो (पन्नाए समिक्खए धम्मं)। अतः निज ज्ञान या आत्मा की आवाज को सुनने का प्रयास करें, उसे दबायें नहीं और उसी के अनुसार आचरण धर्माचरण कहलायेगा।

-सी 1703, लेक कॉसल, हीरानन्दानी गार्डन, पवई, मुम्बई-400076

जिनवाणी पर अभिमत

आप द्वारा सम्पादित 'जिनवाणी' किसी से लेकर पढ़ता रहता हूँ। इस पत्रिका का हर पुष्प अपने आपमें सशक्त, अमिट और सौरभयुक्त है। पत्रिका के प्रसूनों की दिव्य गंध ने मानवीय मूल्यों में निखार लाने का प्रयास किया है। ऐसे ही स्वर प्रत्येक पाठक को जीवन्त, उत्साहपूर्ण, कर्तव्यनिष्ठ, सदाचारी एवं आत्मविभोर बनायें, यही शुभ भावना है।

-ए.एल. कोठारी, 54, ताम्बावती मार्ग, उदयपुर (राज.)

चिन्तन

कर्मवाद से पुरुषार्थवाद की पुष्टि

श्री चन्द्रप्रकाश गाँधी

जब कभी मानव को आशा के विपरीत विपत्तियाँ घेरती हैं तो वह एकदम पूछ उठता है कि मैंने कभी किसी का बुरा नहीं किया, फिर मेरे ऊपर इतनी मुसीबत क्यों? जो लोग झूठ, बेईमानी करते हैं उनके घर मौज है, मांसाहारी मुल्क समृद्ध हैं, भारत जैसा धर्मप्रधान देश गरीब है। उच्चकोटि के महात्मा भी भीषण बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। दो व्यक्ति लगभग समान स्थितियों में काम करते हैं, पर एक सफलता प्राप्त करता है, दूसरा नहीं। एक ही व्यक्ति जीवन में कभी सही निर्णय लेता है वहीं भिन्न समय में वह बिल्कुल गलत निर्णय लेता है। सभी को उतार चढ़ावों की अप्रत्याशितता से गुजरना पड़ता है। इन प्रश्नों को समाहित करते हुए कुछ लोग तो इस निर्णय पर पहुँचे कि यह सब कुछ भगवान् की मर्जी से होता है, और यह निर्णय इतना व्यापक हो गया है कि विश्व की अधिकतम जनसंख्या ने इसे सिद्धान्त के रूप में स्वीकार कर लिया। ''ईश्वरप्रेरितो गच्छेत् स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा'' ईश्वर की प्रेरणा से जीव स्वर्ग-नरक में जाता है।

ईश्वरवाद की अपनी खामियाँ हैं। तर्क प्रधान चिन्तकों ने पहले तो उस अदृष्ट ईश्वर के अस्तित्व को ही पहले सिरे से नकार दिया, दूसरा उसे सर्व शक्तिमान, दयालु आदि विशेषण देने से संसार के दुःखमय भाग का खुलासा नहीं हुआ। अतः कुछ चिन्तकों ने उस ईश्वर की जगह प्रकृति को दे दी ''प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः'' प्रकृति के गुण ही सब काम निष्पन्न करते हैं। इसी बात को आम लोगों ने कुदरत का खेल कह दिया। जो इस सिद्धान्त से सन्तुष्ट नहीं हुए उन्होंने सारी जिम्मेदारी काल पर डाल दी ''कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।'' काल हर प्राणी को फल प्रदान करता है और काल ही प्रजा का संहार करता है। असमाहित मन आगे बढ़ा। उसने होनी की नियति को पकड़ा। जो होना है वही होता है, जो नहीं होना होता वह नहीं होता है। ज्योतिष, हस्त रेखा, अंक विद्या आदि के सैंकड़ों गप्पी गुरु इसकी खिदमत बजाते हैं। इसने बड़ी-बड़ी कहानियाँ घड़ी। एक आदमी निश्चित स्थान,

निश्चित समय, निश्चित विधि से ही मरता है, अन्यथा नहीं, इस तरह के सिद्वान्तों के बावजूद मनुष्य का तर्कशील मस्तिष्क संतुष्ट नहीं हुआ, क्योंकि जो कुछ सिद्धान्त समाधान के रूप में परोसा गया वह युक्तिसंगत प्रतीत नहीं हुआ। मनुष्य ने अपने हाथों से ऐसे कार्य भी किये जो ईश्वराधीन माने ज़ाते थे। इसने प्रकृति का दोहन किया। किस्मत की लकीरों पर भी अपने दम पर पौंछा फेरा। जो प्रत्यक्ष है उसे कैसे नकारें। उसके स्वर कुछ यों मुखरित हुए ''अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य'' आत्मा अपने सुख-दुःख का कर्ता-विकर्ता स्वयं है। ऐसे मौके पर आया जैन दर्शन का कर्मवाद, जिसमें दृष्ट और अदृष्ट दोनों ही पक्षों की सत्यता को स्वीकार किया गया। धार्मिक जगत में जैन दर्शन ने यह घोषणा की थी कि मानव पुरुषार्थ से अपने जीवन का निर्माता है।

यह पुरुषार्थवाद ईश्वरवाद के लिए एक चुनौती थी। जब जैन धर्म ने ईश्वर की सत्ता को चुनौती दी और आत्म कर्तृत्ववाद (पुरुषार्थवाद) का बिगुल बजाया। जैन धर्म की मान्यता है कि आत्मा स्वतन्त्र है, वही कर्म का कर्त्ता है और कर्म के माध्यम से सुख-दुःख की स्थिति के लिये खुद ही जिम्मेदार है। जीवन की विषमताओं, विचित्रताओं, विविधताओं में कर्म प्रमुख कारण है। विविध प्रकार का बौद्धिक सामर्थ्य, शारीरिक संवेदनों की अनुकूलता-प्रतिकूलता, आयु की दीर्घता-अल्पता, शरीर का सौष्ठव, सामाजिक प्रतिष्ठा, शक्ति की न्यूनाधिकता तथा मानसिक संवेगों की प्रबलता-अप्रबलताओं के पीछे मुख्यतः कर्मशक्ति काम करती है, यह जैन दर्शन की धारणा है। जैन आगमों में कहा है कि भले ही सृष्टि-व्यवस्था में कर्म का बहुत बड़ा हाथ है, पर आत्मा (जीव) कर्म से भी ऊपर है। वह कर्म को बनाता है, बिगाड़ता है, फल देने का सामर्थ्य प्रदान करता है, उसका सामर्थ्य छीन लेता है। उसके फल-प्रदान करने के स्वरूप को परिवर्तित भी कर देता है, अर्थात् जैनों के कर्मवाद-सिद्धान्त में भाग्यवाद का प्रभाव अल्प है, पुरुषार्थवाद की संभावना अधिक है। पुरुषार्थ प्रेरक कर्मवाद ही जैन दर्शन की विशेषता है, जो किसी अन्य दर्शन में नहीं है। गजसुकुमाल मुनि के सिर पर अंगारे रखे गये, भगवान् महावीर के कानो में कीलें ठोकी गईं आदि दृष्टान्तों के द्वारा कर्म की सर्वोच्च सत्ता सिद्ध हुई। इस कर्मसत्ता पर विजय प्राप्त करके, आत्म-शक्ति को उजागर कर, जीव की मुक्ति संभव हुई।

एक गरीब बालक भी पूरी श्रम निष्ठा से अध्ययन करते, नाना सघर्षों को जीतते-जीतते अन्ततः देश के सर्वोच्च सम्मान को प्राप्त करता है जैसे कि लिंकन और ए.पी.जे.अब्दुल कलाम। तब भी जनसाधारण की एक ही प्रतिक्रिया होती है कि इसने पूर्व जन्म में कोई अच्छा कर्म किया है, जो इतने ऊँचे पद पर पहुँचा है। वह इसी प्रकार का निर्णय करने से पूर्व भूल जाता है कि चर्चित व्यक्ति ने इस जीवन में जो श्रम किया है वह कहाँ गया? उसको वहाँ तक पहुँचाने में उसका बहुमुखी पुरुषार्थ ही काम आता है। लौकिक सफलता के लिए शारीरिक, बौद्धिक एवं सामुदायिक श्रम की आवश्यकता होती है तो आध्यात्मिक उत्थान के लिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ की। भगवान् महावीर को 'श्रमण' विशेषण इसीलिए मिला है क्योंकि इनके दर्शन में मुक्ति के लिये श्रम करना पड़ता है। वह किसी परमात्मा या कर्मों की देन नहीं है, अपितु स्वश्रम से अर्जित आत्म-समृद्धि है।

मनुष्य का पुरुषार्थ सामूहिक भी हो सकता है। भूमण्डलीय ताप (Global Warming) की खतरनाक हालात मनुष्य के सामूहिक पुरुषार्थ से जन्मी है और नई-नई उपलब्धियों के लिये मनुष्यों ने सामूहिक पुरुषार्थ किया है। कितनी ही महामारी कारक व्याधियों पर आज मानव ने विजय पाई है, चीन ने अपने दारिद्र्य को मिटाया है, जापान बर्बादी के कगार से ऊपर उठकर समृद्धि के शिखरों पर है, यह वहाँ के नेतृत्व और प्रजा के सामुदायिक उपयुक्त पुरुषार्थ का परिणाम है।

भगवती सूत्र, उपासकदशांग आदि आगमों में पुरुषार्थ को ही कार्य जगत् का मूल निर्धारक प्रस्तुत किया गया है। पुरुषार्थ को भी कुछ सहयोगियों की आवश्यकता पड़ती है। वे सहयोगी कर्म, नियति, काल और स्वभाव भी हो सकते हैं। मानव ने पुरुषार्थ के बल पर जहाँ हवा में छलांग लगाई, पहाड़ों में सुरंगें बनाई, सागरों की सतहों को नापा, कम्प्यूटर बनाया, वहीं अध्यात्म के क्षेत्र में परम शान्ति, सदाचार तथा मोक्ष तक को प्राप्त किया है।

कर्मवाद को भाग्यवाद का रूपान्तरण या नामान्तरण बनाना भगवान् महावीर को अभीष्ट नहीं था। वे इसे प्रबल पुरुषार्थवाद का पर्याय बनाना चाहते थे। तभी तो भगवान् ने कहा कि कर्म तो भौतिक पौद्गलिक (Material) है, जबकि आत्मा उपयोगवान् है और उपयोग पुरुषार्थ का सूचक है।

शेर पिंजरे में है तो बलवान शेर है या पिंजरा? उत्तर–शेर। पुनः प्रश्न–फिर शेर पिजरें में बन्द क्यों है? उत्तर– शेर को पीछे हटकर छलांग लगाने जितनी जगह नहीं है, इतनी जगह होती तो शेर पिजरें को तोड़ देता।

ऐसे ही आत्मा पर कर्म हावी है, पर जैसे ही जीव ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र का पुरुषार्थ अपनाता है, कर्म छिन्न–भिन्न हो जाते हैं।

अतः इस सारी चर्चा का सारांश यह है कि कर्मवाद पुरुषार्थवाद को पुष्ट करता है, भाग्यवाद को नहीं।

–37, अरिहंत कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.)

मृत्यु हँसती दो बार

कवि कस्तूर चन्द जी जैन 'अष्टम'

मृत्यु हँसती दो बार, चिकित्सक कहता है निश्चिन्त रहो।
जल्दी ही ठीक हो जाओगे, ये लो औषधि बेफिक्र रहो।।
जब कोई भी मर जाता है, कहते बेचारा चला गया।
तो फिर मृत्यु हँस कर कहती, क्या तेने पट्ट लिखा लिया।।

घर में इकलौती बेटी है, माँ-बाप प्यार अति करते हैं।
पालन-पोषण कर बड़ा किया, शिक्षा में भी रुचि रखते हैं।।
दामाद देख उसको हँसता, आखिर मैं लेकर जाऊँगा।
कितना ही कर लो प्यार इसे, तुमसे बिछोह करवाऊँगा।।

दिन-रात परिश्रम कर-करके मुखिया धन-माल कमाता है।
खाने का भी है होश नहीं, वह भूखा ही मर जाता है।।
हँसता है पुत्र अरे दद्दू, तुम जोड़-जोड़ मर जाओगे।
ये पैसा, धन, दौलत, गहना सब काम हमारे आयेंगे।।

प्रतिदिन शृंगार साज, सज्जा, हम इस शरीर की करते हैं।
साबुन दातुन और तेल, फुलेलों से हम इसे सजाते हैं।।
हँसती है मौत देख करके, चाहे कितना सज पायेगा।
नित-प्रति सजके मूरख, आखिर मेरी गोद में आयेगा।।

–नृसिंह कॉलोनी, वार्ड नं. 18, खेरलीगंज–321606, जिला–अलवर (राज.)

पत्र-वार्ता

प्रेम का आदान-प्रदान

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दर जी म.सा.

(दो भाइयों में उत्पन्न रुक्ष व्यवहार के पश्चात् एक भाई को लिखा गया पत्र)

यश,

तुम्हारा पत्र मिला।
एक बात तुम्हें बता दूँ कि तुम दोनों भाइयों के आपस में
रुक्ष व्यवहार की बात मेरे कानों तक कब की आ चुकी है।
रेत के दो कण चाहे बरसों तक साथ रहें,
वे कभी एक-दूसरे में एकरूप होते ही नहीं हैं।
पानी के संपूर्ण बर्तन पर चाहे तेल फैला हुआ दिखाई देता हो,
पानी और तेल के बीच कभी संबंध बंधता ही नहीं है।
कदाचित् ऐसी ही स्थिति का सर्जन हुआ है तुम दोनों भाइयों के बीच।
साथ होने पर भी तुम दोनों साथ नहीं हो।
घर दोनों का एक है, पर मन अलग हो चुके हैं।
दोनों के शरीर में एक ही माँ-बाप का खून बह रहा है, पर
प्रेम की मानो शवयात्रा निकल चुकी है।
और ऐसी स्थिति में तुमने जो लिखा है वही होगा-
आदमी पागल बन जाए अथवा जीवन समाप्त करने के लिए तैयार हो जाए।
क्या लिखूँ तुम्हें?
छोटा बच्चा खेलता भले ही खिलौने से है, परन्तु
जीने के लिए तो उसे दूध ही चाहिए।
गाड़ियों की भरमार या आकर्षक बंगले से,
विपुल संपत्ति या प्रचंड कीर्ति से,
विशाल व्यापार या पुरस्कारों की भरमार से,
मनुष्य एक बार अपने मन को बहला सकता है,
अपनी इन्द्रियों को बहका सकता है, परन्तु
यदि वह प्रसन्न रहना चाहता है, जीवन को रसपूर्ण बनाए रखना चाहता है,
हृदय को उत्साहपूर्ण बनाए रखना चाहता है,
सकारात्मक व्यवहार का स्वामी बने रहना चाहता है,
तो प्रेम के आदान-प्रदान के बिना,
संवेदनशीलता को आत्मसात् किए बिना,

हृदय को प्रधानता दिए बिना उसे किसी भी हालत में सफलता नहीं मिल सकती।
दुःखद वास्तविकता तो यह है कि बहुजनवर्ग को यह सत्य तभी
समझ में आता है जब संवेदनाओं को कुचलते रहकर,
संबंधों में रही आत्मीयता की उपेक्षा करते रहकर और
संवेदनशीलता को फ्रिज में रखकर,
दुनिया की दृष्टि में 'सफल' घोषित होने में वह सफल हो चुका होता है।
परन्तु, अग्नि जैसे अपने साथ धुआँ लेकर आती है,
साँप जैसे अपने पीछे केंचुली छोड़ जाता है,
भूकम्प जैसे अपने साथ विनाश ले आता है, वैसे ही यह 'सफलता' अपने साथ
निराशा, नकारात्मक वृत्ति, निष्ठुरता, यही नहीं
निर्दयता को लेकर ही आती है।
मन की इस पीड़ा से मुक्त होने के लिए यह वर्ग पागल बनकर चारों ओर
दौड़ता रहता है।
कोई क्लब की शरण में चला जाता है तो
कोई व्यभिचार के अड्डे पर चक्कर लगाता है।
कोई ड्रग्स के चुंगल में फँस जाता है तो
कोई घंटों तक टी.वी. के डिब्बे के सामने बैठा रहता है।
कोई मनोचिकित्सक की राय लेने पहुँच जाता है तो
कोई रेल की पटरी के नीचे आकर जीवन समाप्त कर बैठता है।
यश,
ये बातें मैं तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ कि तुम आत्मनिरीक्षण कर सको।
मैं तुम्हारे स्वभाव को जानता हूँ।
तुम महत्त्वाकांक्षी हो।
स्पष्टवादिता तुम्हारा स्वभाव बन चुका है।
कहीं गलत हो रहा हो तो विद्रोह करना तुम्हारे लिए सहज बन चुका है।
रौब जमाने की वृत्ति तुमने आत्मसात् कर रखी है।
शायद इनमें से ही कुछ कारण बड़े भैया और
तुम्हारे संबंधों में रुक्षता पैदा करने में निमित्त बने हों ऐसी पूर्ण संभावना है।
इस पत्र में मैं तुम्हें यही बताना चाहता हूँ कि शक्कर को एक कोने में
रखकर मिठाई नहीं बनाई जा सकती, वैसे ही हृदय को एक ओर
ढकेलकर जीवन के एक भी पल को प्रसन्नतापूर्ण नहीं बनाया जा सकता।
यह बात हमेशा याद रखना।

धारावाहिक (क्रमशः 61)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः- तुच्छ कामभोगों में फंस कर दुर्लभ मानव-भव को वृथा न करने के जम्बूकुमार के उद्‌बोधन से प्रभावित उनकी आठों पत्नियों का मोह रूपी अन्धकार नष्ट हो गया और हानोपादान विवेक जाग्रत हुआ। सुख के एक मात्र उपाय संयम को धारण करने के लिए सभी पत्नियाँ अपने पति के साथ तैयार हो गईं। वाणिज्य कर्म में हाथ बंटाने के पिता के कथन को सुनकर जम्बूकुमार कहते हैं कि इस जीवन में अब ऐसा व्यापार करूँगा कि उससे परम अर्थ की प्राप्ति हो। सांसारिक विषयों के लिए मानव भव व्यर्थ करना भयंकर अविवेक है। अतः पिताजी आप भी मेरे साथ इस पथ का अनुसरण करें। अब आगे.....

जम्बूकुमार का यह कथन सुनकर उनके पिता और माता के नेत्र खुल गए। जम्बूकुमारजी के सबल और निश्चयपूर्ण कथन के आगे उन्हें कुछ कहना न सूझा। अन्त में उन्होंने जम्बूकुमार की पत्नियों के माता-पिता के पास यह संदेश भेजा। वे सब अत्यन्त व्याकुलता के साथ आए। उन्होंने भी अपनी सारी शक्ति जम्बूकुमार को समझाने में खर्च कर दी, पर जम्बूकुमार टस से मस न हुए। जम्बूकुमार के सास-ससुर कहने लगेः-

जम्बूकुमारजी! तथा पुत्रियों! यह जानकर हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रही कि आप सब आज ही दीक्षा ग्रहण करने का हठ कर रहे हैं। भला यह उम्र भी क्या संयम-साधना के लिए है? कल विवाह हुआ और आज दीक्षा लेने को तैयार हो गए, यह क्या शोभनीय बात है? जीवन का बहुत अंश अभी शेष है। उसमें आनन्द के साथ दीक्षा लेना। उस समय हम लोग रोकने नहीं आएंगे। भला, हमारे इन सफेद केशों की तो लाज रखो। हम सब वृद्ध हैं, मृत्यु की तरह देखते हुए जीवन के अंतिम किनारे पर खड़े हैं। इस दशा में हमें छोड़कर तुम्हारा चला जाना क्या उचित है? वृद्ध अवस्था

में हमारी सेवा करोगे, यह सोचकर बड़ी आशा के साथ तुम्हारा पालन-पोषण किया है। आज तुम अचानक हमें निराश करके तमाम आशाओं पर पानी फेर कर चल देने को उद्यत हो गए हो। क्या यही तुम्हारा कर्तव्य है? जन्म से लेकर बड़े होने तक हमने तुम्हारा जो पालन-पोषण किया है सो क्या इस रूप में किया है? उसका फल तुम्हारी ओर से क्या इस रूप में मिलना चाहिए? नहीं ऐसा न होगा। आपको घर में रहना होगा। इस समय भूलकर भी साधु बनने की बात अपने मुँह पर न लाइए।

जामाताजी! आप तो समझदार हैं। पुत्रियां अभी नादान हैं। वे समझती ही क्या हैं? उन्हें अभी आप कुछ भी समझा सकते हैं, वे समझ जाएंगी। थोड़ी देर के पश्चात् उससे विरुद्ध बात समझाने और स्वीकार कराने में भी कोई कठिनाई न होगी, विचारों की प्रौढ़ता प्रायः अवस्था की प्रौढ़ता पर अवलम्बित रहती है। उनकी उम्र अभी बिल्कुल कच्ची है। उनके विचार पर अभी कोई भरोसा नहीं रखना चाहिए और न किसी ऐसे कार्य के लिए उद्यत कर देना चाहिए जिसका सम्पूर्ण जीवन पर प्रभाव पड़ता है। ऐसा करना अत्यन्त अनर्थकारी हो सकता है। इसके अतिरिक्त आपको भी उतावल से काम नहीं लेना चाहिए। आपके माता-पिता को और हमें आपका ही पूरा सहारा है। एक क्षण के लिए भी आपका वियोग सहन नहीं हो सकता, फिर यह स्थायी वियोग कैसे सहन होगा? हम लोग आपके वियोग में जीवित ही न रह सकेंगे।

एक बात और है। आप हमारे अनुनय को स्वीकार नहीं करते हैं। मगर जरा यह भी सोचिए कि हम लोगों की आज्ञा प्राप्त किए बिना क्या आप दीक्षा ले कैसे सकते हैं? और सुधर्मा स्वामी भी ऐसी दीक्षा कैसे देंगे? हम सब आपके मार्ग में आड़े पड़े रहेंगे। यदि आप इतनी कठोरता को बटोर कर ला सकें तो ले आइए और हमारी छाती के ऊपर पैर रखकर हमें पांव तले कुचल कर चले जाइए।

जम्बूकुमार ने उत्तर दिया-माता-पिताओं! तथा कुटुम्बीजनों! मुझे अत्यन्त आश्चर्य है कि आप तत्त्व की ओर दृष्टि नहीं डालते। आप कहते हैं कि आपसे क्षण भर का भी वियोग सहा नहीं जा सकता, परन्तु यदि इसी

समय यमराज का परवाना आ जाए और मुझे अभी-अभी यमलोक चला जाना पड़े तो आप क्या करेंगे? उस वियोग को आप सहन करेंगे या नहीं? क्या किसी भी एक व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसके समस्त कुटुम्बियों ने अपने प्राण दिए हैं? ऐसा आपने कहीं देखा सुना है? उस समय आप यमराज से क्या कहेंगे? क्या आपमें वह शक्ति है कि आप मुझे यम के पास से बचा लें? संसार तो सराय है। इसमें अनेक दिशाओं से तथा देशों से आकर प्राणी इकट्ठे होते हैं और कुछ समय ठहर कर फिर अपनी-अपनी राह चल देते हैं। संयोग-वियोग संसार में अनिवार्य अवस्थाएँ हैं। जो संयुक्त हुआ है वह अवश्यमेव वियुक्त होगा, इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है। कुटुम्बीजन भले ही रोएँ, चिल्लाएँ या जमीन आसमान एक करें, पर उनकी एक भी नहीं चलती। एक कवि ने कहा है-

तेरे अनुगामी स्वजन, गए कौन सी बाट?
तू रोता ही रह गया, पकड़े-पकड़े खाट।

केसरी वन में जब किसी मृग पर झपटता है तो दूसरे मृग अपने प्राण बचाकर भागते हैं। यदि अनुराग के वश होकर वे न भागें तो भी क्या उसकी रक्षा कर सकते हैं? यमराज रूप सिंह के सामने मनुष्य रूपी मृग की ऐसी असहाय स्थिति है।

आप कहते हैं कि उतावल न करो। पर भगवान् महावीर स्वामी ने कहा है-

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए, थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुआण जीवियं समयं गोयम! मा पमायए।।

दूब के ऊपर लटकता हुआ ओस का बिन्दु जैसे थोड़ा ही ठहरता है, ठीक वैसा ही मनुष्यों का जीवन है। अतएव हे गौतम! एक समय मात्र का भी प्रमाद मत कर।

इह इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए।
बिहुणा हि रयं पुरे कडं, समयं गोयम! मा पमायए।।

अर्थात् आयु थोड़े ही दिनों की है। उसमें भी यह जीवन अनेक प्रकार की विघ्न बाधाओं से परिपूर्ण है। तात्पर्य यह है कि जीवन कायम रहने पर भी कोई पागल हो जाता है, कोई अन्धा हो जाता है, कोई बहरा

हो जाता है, कोई अत्यन्त रुग्ण अवस्था में जा पड़ता है और तब धर्म की संयम की विशेष आराधना करने में असमर्थ हो जाता है। अतएव भगवान कहते हैं- "हे गौतम! जल्दी कर सावधान हो जा, पूर्वोपार्जित कर्मों को धो डाल। एक समय का भी प्रमाद मत कर।"

अब आप ही निर्णय कीजिए कि भगवान् महावीर के उपदेश का अनुसरण करके धर्म आराधन में उद्यत होना उचित है या इस दुःखमय संसार में रहकर भोगोपभोग भोग कर आत्मा का अहित करना ठीक है। भगवान ने यह भी कहा है-

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसन्ति जंतवो॥

अर्थात् संसार में जन्म लेना दुःख रूप है, जरा दुःख रूप है, रोग और मरण दुःख रूप है, अधिक क्या कहा जाए यह सारा संसार ही दुःखमय है। यहाँ प्राणी क्लेश भोगते रहते हैं।

जहा किंपाकफलाण परिणामो न सुन्दरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो॥

अर्थात् जैसे किंपाक फल को भोगने का नतीजा बुरा होता है उसी प्रकार भोगे हुए भोगों का फल भी बुरा ही होता है।

इस प्रकार यह संसार दुःखमय है। इसका परित्याग किए बिना दुःख से मुक्ति नहीं मिल सकती। जीवन क्षणिक है। न जाने वह किस समय समाप्त हो जाए ऐसी अवस्था में उतावल न करना क्या उचित है? भगवान ने कैसा सुंदर कहा है-

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे हुए सिया॥

अर्थात् जिसकी मृत्यु के साथ मित्रता हो अथवा जो मृत्यु के आक्रमण से भाग कर बच सकता है, जिसे यह निश्चय हो कि मैं मरूँगा नहीं, वही कल पर अवलम्बित रहे। तात्पर्य यह है कि धर्मकृत्य कल के लिए भी न छोड़ कर आज ही कर डालना चाहिए, क्योंकि मृत्यु का ठिकाना नहीं है। वह न जाने कब आ धमके?

आदरणीय सज्जनों! संसार में कोई किसी की रक्षा नहीं कर

सकता। आज हम किसी के रक्षक होने का दम्भ भले ही करें, परन्तु समय आने पर वह दम्भ मिथ्या ही सिद्ध होता है। आप कहते हैं कि आपको मेरा सहारा है, पर जब आप अपने कर्मों का फल भोगेंगे तब मैं आपको कैसे बचाऊँगा? बीमारी होने पर क्या मैं आपका दुःख बांट सकूँगा? आज तक किसी ने किसी की वेदना का बंटवारा किया है? वस्तुतः ऐसा होना असम्भव है। भगवान् कहते हैं:-

न तस्स दुःखं विभयंति नाइयो, न मित्तवग्गा न सुता न बांधवा।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं।।

भावार्थ- किसी व्यक्ति के दुःख का बंटवारा न ज्ञातिजन कर सकते हैं न मित्रगण कर सकते हैं, न पुत्र कर सकते हैं और न भाई-बन्धु ही कर सकते हैं, अकेले जीव को स्वयं ही दुःख भोगना पड़ता है, क्योंकि कर्म, कर्ता का ही पीछा करता है।

अतएव आप मेरा जो सहारा खोज रहे हैं, वह संसार का स्वरूप देखते हुए उचित नहीं है। सच्चा सहारा धर्म है। वही आश्रयदाता है, वही त्राण है, वही दुःखों से बचाने वाला है। मैं उसी सहारे को प्राप्त करने की तैयारी कर रहा हूँ। आप भी उसी सच्चे सहारे को प्राप्त करें। मोह के माया-जाल में न पड़िए। मेरे साथ ही आप भी संयम धारण कीजिए और धर्म रूपी कल्पवृक्ष की शीतल छाया में विश्राम कीजिए, जिससे सांसारिक संताप आपके पास भी न फटक सकेगा और उसके अमृत फल का आस्वादन करके सदा के लिए भूख, प्यास, तृष्णा और जन्म-मरण के भय से मुक्त हो सकेंगे।

जम्बूकुमार के इन वैराग्य-युक्त वचनों को श्रवण कर उनके माता-पिता, सास-ससुर आदि सभी को हार्दिक प्रसन्नता हुई। संसार का असार स्वरूप उनकी आँखों के आगे नाचने लगा। संसार रूपी विष वृक्ष का मोह एकदम शिथिल पड़ गया। उसकी जड़ हिल उठी। उन्हें अब सारा संसार एक नए ही रूप में दिखलाई देने लगा। उन्हें जान पड़ने लगा कि हम अब तक जिन नेत्रों से दुनिया को देख रहे थे वे नेत्र वास्तव में हमें धोखा दे रहे थे। जम्बूकुमार ने आज ज्ञान रूपी अंजन आंजकर नेत्रों का विकार दूर कर दिया है। नेत्रों में अब एक अलौकिक निर्मलता आ गई है। सारे संसार

की कायापलट सी हो गई है। वे सब अपने सौभाग्य को सराहने लगे। कहने लगे-धन्य है जम्बूकुमार को, जिन्होंने हमारे अज्ञान-अंधकार का नाश कर दिया है। सचमुच हम अत्यन्त भाग्यशाली हैं जिन्हें ऐसा सुयोग्य, धर्मनिष्ठ और पथ प्रदर्शक पुत्र एवं दामाद मिला है। जम्बूकुमार! तुम्हें पाकर हम कृतकृत्य हो गए हैं। हम संसार समुद्र में डूब रहे थे, तुमने जहाज बनकर हमें उबार लिया है। हम हृदय से तुम्हारे आभारी हैं। तुम अब प्रसन्नता के साथ संयम धारण करो। हम सब लोग भी अत्यन्त संतोष और शांति के साथ तुम्हारा अनुसरण करेंगे। संसार के दुःखों से मुक्त होने का उपाय प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। वह उपाय सिवाय संयम धारण करने के और दूसरा नहीं है। अतएव हम सभी संयम धारण करेंगे और अपनी आत्मा को सर्वोत्कृष्ट कल्याण मार्ग में अग्रसर करेंगे। अज्ञान के वश होकर आपके मार्ग में हमने जो विघ्न उपस्थित करना चाहा था, उसका सबसे अच्छा प्रायश्चित्त यही है। फिर भी आशा है आप हमें क्षमा करेंगे। **(क्रमशः)**

उभयकाल प्रतिक्रमण कीजिए और घर में स्वर्गानुभव लीजिए

श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन, छोटी कसरावद

1. आचार्य शिरोमणि पूज्यपाद हस्तीमल जी म.सा. ने अपने जीवन में स्वाध्याय और सामायिक-साधना पर सदैव सर्वाधिक महत्त्व दिया।
2. उनकी इन पवित्र सद्भावनाओं को वर्तमान में उनके पट्टधर हीराचन्द्राचार्य जी आगे बढा रहे हैं। स्वाध्याय और सामायिक में साधक का आत्मकल्याण सन्निहित है।
3. वर्तमान की व्यस्तता में सामायिक-स्वाध्याय के लिए समय निकालने का सर्वोत्तम तरीका उभयकाल (संधिकाल) प्रतिक्रमण की भावना से सामायिक कीजिए।
4. सुबह 5 से 7 और सायंकाल 6 से 8 इस समय में आप दो मुहूर्त्त की साधना के लक्ष्य से निश्चित रूप से निश्चिन्त होकर आसन बिछाकर, मुँहपत्ति बाँधकर पूर्वाभिमुखी बनकर सामायिक लेकर प्रतिक्रमण कीजिए।
5. याद नहीं है तो कंठस्थ करने का प्रयास करते रहिए, अपना परिवार अद्भुत चमत्कारी ढंग से आनन्द का सहज ही अनुभव करने लगेगा।

उपन्यास (4)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- इंग्लैण्ड में शादी कर लेने के बाद विश्वास घर लौटा तो उसके पिताजी किशनलाल ने उसे भला-बुरा कहा और अन्त में घर से निकल जाने का आदेश दे दिया। विश्वास के घर छोड़कर जाने से शान्ति को गहरा सदमा लगा और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। किशनलाल यह देखकर घबरा गया। पानी के छीटें देने पर जब शान्ति को होश आया तो किशनलाल ने कहा कि मैं विश्वास को ढूँढकर पुनः घर ले आऊँगा। दूसरी तरफ किशनलाल के दूसरे पुत्र आलोक का आगमन होता है-

आगरा हवाई अड्डे पर कोई खास भीड़-भाड़ नहीं है। बम्बई से आने वाला हवाई जहाज, अड्डे पर उतर चुका है। यात्रीगण, अपना-अपना सामान हाथों-कन्धों पर उठाए मुख्य द्वार की ओर चले आ रहे हैं। कुछ यात्रियों को लिवाने आये लोग भी वहाँ चहल कदमी कर रहे हैं।

आलोक को अपने पिता का फोन सुबह-सुबह मिला। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा था- 'तुम तुरन्त घर चले आओ।' बस, उसी समय वह घर के लिए रवाना हो लिया था।

हवाई जहाज से अपने गृहनगर के हवाई अड्डे पर उतर कर वह मुख्य प्रवेश द्वार से बाहर आया, तो सीधा कार-पार्किंग की ओर बढ़ने लगा। उसे पूरी उम्मीद थी कि उसके पिता ने उसे लाने के लिए गाड़ी जरूर भेजी होगी।

पार्किंग में खड़ी गाड़ियों पर अपनी उचटती हुई नजरें दौड़ता वह अभी पाँच-दस कदम ही चल पाया होगा, तभी अपने बायीं ओर से आई आवाज 'हेलो, आलोक!' सुनकर वह ठिठक गया।

'अरे! मीरा तुम!' बाईं ओर मुड़कर ही वह बोला 'यहाँ कैसे घूम रही हो?'

'नन्दन भैया दिल्ली जा रहे हैं। उन्हीं को छोड़ने आई थी। तुम यहाँ दिखाई दे गये तो आवाज दे दी।'

'अच्छा हुआ तुम मिल गईं। वरना, अभी टैक्सी वालों से माथा पच्ची

करनी पड़ती। बहुत भाव बढ़ गये हैं इनके भी।'

'लाओ एक बेग मुझे दे दो!'– कहती हुई मीरा ने आलोक के कंधे से बैग उतारा, और अपने कंधे पर रख कर, अपनी कार के पास पहुँच गई। उसने कार का अगला दरवाजा खोला और ड्राइविंग सीट पर जा बैठी।

आलोक के उसके बगल में बैठते ही, उसने गाड़ी को आहिस्ते-आहिस्ते पार्किंग से निकाला और तेजी से सड़क पर आ गई। फिर, आलोक की ओर, होले से देखकर बोली– 'किधर चलना है? पहले अपने घर चलूँ, या तुम्हारे?'

'तुम्हारे घर किसलिये?'

'घर किसलिये चलते हैं? सफर के थके हुए आये हो। वहाँ चलकर पहिले चाय–नाश्ता ले लो। फिर तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आऊँगी।'

'नहीं मीरा! देर हो जायेगी तो पिताजी क्या सोचेंगे?'

'और मेरे पिताजी कुछ नहीं सोचेंगे? वे भी तो तुम्हें बार–बार याद करते रहे हैं। अभी कल ही शाम को कह रहे थे–'बेटी! इस बार आलोक बहुत दिनों से दिखाई नहीं दिया।'

'क्या कहा तुमने?'

'मैं क्या कहती। कह दिया कि बम्बई में पढ़ रहा है और विदेश यात्रा की तैयारी में लगा हुआ है।'

'ठीक है। जैसी तुम्हारी इच्छा।'

'अरे हाँ! तुमने यह नहीं बतलाया कि अचानक घर कैसे चले आये?'

'आज, सवेरे ही सवेरे पिताजी का फोन आ गया था। बोले– तुरन्त घर चले आओ।'

'कोई विशेष बात?'

'क्या मालूम! घर चलने पर पता चल पायेगा।'

'मुझे मालूम है।'

'क्या?'

'मैंने चर्चा सुनी है कि कल तुम्हारा भाई विश्वास लन्दन से लौटा था। वह वहीं से भारतीय मूल की किसी लड़की को ब्याह करके साथ में ले लाया था। यह देखकर तुम्हारे पिताजी ने उसे घर में ही नहीं घुसने दिया। क्या सच है, क्या

झूठ है? पूर्ण विश्वास से नहीं कह सकती।'

'तो यह चक्कर है।'

''खैर छोड़ो! और यह बतलाओ, बम्बई में कैसी गुजर रही है?'

'दिन भर अध्ययन में लगा रहता हूँ। परीक्षा पास करने के बाद मेरा इंग्लैण्ड जाने का कार्यक्रम है। पर अब मुझे सन्देह हो रहा है, अपने कार्यक्रम के पूरा हो पाने में।'

'कैसा सन्देह?'

'लग रहा है, कहीं पिताजी मुझे इंग्लैण्ड जाने से रोक न दें।'

'क्यों, ऐसी क्या बात है?'

'उनका स्वभाव ही कुछ ऐसा है। देखो क्या होता है?.....अरे! तुमने कुछ नहीं बतलाया कि तुम आजकल क्या कर रही हो?'

'मैं भला करूँगी भी क्या? पढ़ाई तो पूरी हो ही गई है। घर पर कुछ काम है नहीं। दिन भर बैठी-बैठी आलसी होती जा रही हूँ। इसलिए, अब विचार कर रही हूँ कि दिन में दो घण्टे निर्धन-कॉलोनी में जाकर उनके बच्चों को पढ़ा आया करूँगी।'

'अच्छा, तो समाज सेविका बनने का विचार है।'

'यह तो मैं नहीं जानती कि क्या बनूँगी क्या नहीं? पर, खाली समय का सदुपयोग करना चाहती हूँ। इसी बहाने से मन भी बहलता रहा करेगा।'

मीरा की कोठी आ गई। दोनों कार से उतरे, और अन्दर चले गये। आगे-आगे चल रही मीरा कमरे में प्रवेश करके, सामने ही बैठे अपने पिता को देखकर बोली- ''डैडी! देखो तो जरा, कौन आया है?''

'ओ हो! आलोक बेटे तुम!' द्वार पर अपनी दृष्टि डाल कर बोले क्रान्तिलाल-लगता है, ईद का चाँद बन रहे हो आजकल!'

'जी, इस बार काम कुछ ज्यादा था। समय ही नहीं निकाल पाया यहाँ तक आने का।'

'सुना है, इंग्लैण्ड जाने की तैयारी कर रहे हो?'

'हाँ, विचार तो पूरा है। पर, पिताजी ने अभी तक सही-सही उत्तर नहीं दिया है।'

'अरे भाई! घूम आओ न ! एक ही साल की तो बात है। वहाँ जाकर

बहुत कुछ सीख आओगे। मैं भी इधर काफी दिनों से किशनलाल जी से नहीं मिल पाया। अब सोचता हूँ उनसे बात कर ही लूँ। आखिर हम लड़की वाले हैं न। मिलने तो जाना ही पड़ेगा।....अरे बेटी! खड़ी क्यों हो? चाय-नाश्ता लेकर आओ।'

'क्या चलेगा आलोक! ठण्डा या गर्म?' मीरा ने पूछा।

'हाँ, हाँ, बोलो बेटे! यह तो तुम्हारा ही घर है।'

'घर है तभी तो यहाँ पहले आया हूँ पिताजी! अच्छा, एक काम करो मीरा!' वह बेतकल्लुफी में बोला 'जब तक तुम गर्म तैयार कर रही हो, तब तक कुछ ठंडा ही हो जाये।'

'ओ हो, अब समझा!' तीनों एक साथ हंस पड़े।

मीरा मुस्कराती हुई अन्दर गई, और कुछ ही देर बाद, थोड़े से फल लेकर आई और उन्हें मेज पर सजा कर बोली- 'लीजिए। पहिले आप फल लीजिए। तब तक काफी आ रही है।'

तीनों एक साथ बैठकर नाश्ता करने लगे।

'देखो बेटे।' क्रान्तिलाल अपने मन की बात स्पष्ट करते हुए कहने लगे 'मेरी कोई दूसरी सन्तान तो है नहीं। यह घर भी मीरा के ही नाम है। तुम्हारे पिता यदि तुम्हें इंग्लैण्ड भेजने को तैयार न हों, तो तुम्हारा सारा खर्चा मैं उठाने को तैयार हूँ। सिर्फ तुम्हारी स्वीकृति मिलनी चाहिए।'

'आप जो बातें मुझसे कह रहे हैं, पिताजी से कर लेते तो उचित रहता। वैसे, मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैं विवाह करूँगा, तो मीरा से ही करूँगा, अन्यथा नहीं।'

'मीरा ने मुझे सब कुछ बतला दिया है। मैं उसकी भावनाओं की कद्र करता हूँ।.....खैर! एक दो दिनों में, स्वयं तुम्हारे पिताजी से मिलकर बात करूँगा।'

एक नौकर कॉफी ले आया।

आलोक ने काफी पी, और खाली प्याला मेज पर रखकर उठते हुए बोला- जल्दी करो मीरा! काफी समय हो गया है। पिताजी चिन्तित हो रहे होंगे।

काफी पीकर, मीरा भी उठकर खड़ी हो गई। आलोक ने अपना बैग उठाया, और क्रान्तिलाल को नमस्कार करते हुए बोला- 'अच्छा पिताजी! मैं

चलूं अब।'

'बेटी! तुम छोड़ आओ न आलोक को।'

'मैं जा रही हूँ डैडी!' – कहती हुई वह आगे हो ली। और आलोक उसके पीछे-पीछे, कमरे से बाहर निकल आया।

मीरा की कार, अपनी कोठी से निकलकर सीधी किशनलाल की कोठी के प्रांगण में पहुँचकर रूकी।

आलोक, जल्दी से नीचे उतरा, और घर की ओर चल पड़ा। किन्तु चार कदम चलते ही, उसने पीछे मुड़ कर देखा- 'मीरा, अभी भी कार में बैठी हुई है।'' तो वह उसे आवाज देते हुए बोला- 'अरे मीरा! तुम भी आओ न।'

'नहीं, मैं क्या करूँगी?'

'तब फिर शाम को मिलोगी?'

'हाँ, घर आ जाना।.....अच्छा, अब मैं चलती हूँ।' कहते हुए उसने कार स्टार्ट की और पीछे मोड़ने लगी।

'ठीक है, बाय-बाय कहकर हाथ हिलाता हुआ आलोक, कुछ क्षणों तक उसे देखता रहा।

कार के पुनः स्टार्ट होने और वापिस मुड़कर जाने की आवाज सुनकर, किशनलाल जब तक बाहर आया, तब तक कार जा चुकी थी। लेकिन कार की, और उसमें बैठी लड़की की एक झलक, वह पा चुका था।

क्षण भर बाद, उसका ध्यान सामने खड़े आलोक की ओर गया, तो उसने पूछा- 'बेटे तुम! कब आ गये थे यहाँ?'

'बस, अभी-अभी आया हूँ।

'यह किसकी कार थी?..और उसमें बैठी लड़की कौन थी?'

'वो...वो मीरा है न!'-हकलाता सा बोला आलोक।

'कौन मीरा? किसकी मीरा?'

'क्रान्ति भाई सेठ की लड़की। मेरे साथ पढ़ती थी। एअरपोर्ट पर मिल गई। अपने भाई को छोड़ने गई थी वह।'

'हूँ। तो तुम भी शादी से पहले प्रेम का नाटक खेलने लगे हो।'

(क्रमशः)

प्रासङ्गिक

दीक्षा : आत्मशांति की शिक्षा

साध्वी डॉ. प्रतिभा श्री 'प्राची'

जैन दर्शन में दीक्षा पूर्ण त्याग का मार्ग है। यह संसार से भागने का नहीं, परन्तु स्वेच्छा से समझकर पाप की निवृत्तिपूर्वक धर्मप्रवृत्ति में आत्मा को जोड़कर कर्मबंध से छूटने का मार्ग है। कर्ममुक्ति अर्थात् सम्पूर्ण सुख की प्राप्ति।

वर्तमान युग के मानव के मन में उपस्थित प्रश्न को गौतम स्वामी ने पूछा है- ''संजमेणं भंते! जीवे किं जणयइ? (उत्तराध्ययन-29) प्रभु महावीर ने कहा- ''संजमेणं अणहयत्तं जणयइ। संयम से अनास्रव की प्राप्ति होती है अर्थात् नवीन कर्मों के आगमन को रोकना, आत्मशान्ति का अनुभव करने का नाम दीक्षा है। ''आत्मशान्ति की शिक्षा, यही है सच्ची दीक्षा।'' चेतना की दो अवस्थाएँ हैं- चुम्बकीय अवस्था (भोक्ता भाव) और दर्पण अवस्था (द्रष्टा भाव)। चुम्बकीय अवस्था में राग-द्वेष, मोह-ममता का भाव होता है, दर्पण अवस्था में समतापूर्वक द्रष्टाभाव होता है। उसमें पदार्थ प्रतिम्बित होते हैं, किन्तु वह उनसे प्रभावित नहीं होता। चुम्बक अवस्था से दर्पण अवस्था में चेतना का जो रूपान्तर है उसका नाम है - दीक्षा। दीक्षा का प्रतिज्ञा सूत्र है- 'करेमि भंते!' तीन करण तीन योग पाप के व्यापार का संपूर्ण त्याग। भगवान् महावीर ने कहा है-''*अवसोहिय कण्टगापहं ओइण्णोसि पहं महालयं। गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम मा पमायए।*''

हे साधक (गौतम)! संसार अर्थात् काँटों से छाये हुए मार्ग को छोड़कर इस राजमार्ग पर आने के पश्चात् श्रद्धा के साथ आगे बढ़ो। समय मात्र का भी प्रमाद मत करो।

''अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए'' (आचारांग सूत्र)

जगत् के सर्व प्राणियों पर मित्रता साधक का कल्प है, उत्कृष्ट अहिंसा तथा प्रेम भाव की सर्वाधिक सूक्ष्म विचारणा जैन दर्शन का आध्यात्मिक रहस्य है। 'सत्य की साधना और मैत्री का विस्तार' इसका नाम है दीक्षा।

''*असंजमं परियाणामि, संजमं उवसंपज्जामि।*''

अब असंयम के मार्ग को छोड़कर, संयम के मार्ग पर प्रस्थान करता हूँ।

''*जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए।*
तस्सवि संजमो सेओ, अदितस्स वि किंचणं।।''

प्रतिमास दस लाख गायों का दान देने वाले से भी संयमी मुनि श्रेष्ठ है, जो

जीवन भर तीन करण एवं तीन योग से छः काय के जीवों को अभयदान देकर जिनेश्वर के बताये हुए चारित्र मार्ग पर चरण बढ़ाते हैं। चारित्र पालन से बढ़कर कोई उत्कृष्ट धर्म नहीं, आत्मा से पाप की रक्षा करनी चाहिए और वह तभी संभव है जब जीव संयम की आराधना करे।

"जाए सद्धाए निक्खंतो..तमेव अणुपालिया...। (आचारांग सूत्र)

जिस श्रद्धा से, जिस विश्वास से तू संसार से निकला है, मोक्षमार्ग की ओर प्रयाण किया है, उस श्रद्धा और उल्लास को सदा जागृत रखना। उस दृढ़ संकल्प को शिथिल मत होने देना। मानव की आध्यात्मिक उन्नति में संसारियों का संग, आसक्ति, प्रमाद और अहंकार ये विघ्नभूत हैं, इन विघ्नों के त्याग हेतु स्वरूप की जागृति सतत आवश्यक है।

नहीं जन्म दुबारा हो मेरा

(मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी द्वारा अभिनन्दन-समारोह में व्यक्त उद्‌गार)

तर्ज-जिस भजन में प्रभु का

विश्वास दिलाता हूँ सबको, गुरु आज्ञा शीष चढ़ाऊँगा,
नहीं जन्म दुबारा हो मेरा, वो संयम पाल दिखाऊँगा।
नहीं जन्म....।

भव-भव में बांधी हैं मैंने, गाढ़ी कर्मों की जंजीरें
वो मुक्ति की वरमाल बने, यतना से कदम बढ़ाऊँगा।
नहीं जन्म....।

यह गौरवशाली संघ मिला, जिसको पाकर मैं धन्य हुआ,
गुरु हीरा-मान की बगिया को, गुण सौरभ से महकाऊँगा।
नहीं जन्म....।

जब उमड़-घुमड़ कर आयेंगे, उपसर्ग-परीषह के बादल,
जिनवाणी का आश्रय लेकर, मैं समता धर्म निभाऊँगा।
नहीं जन्म....।

है नित्य नहीं कोई जग में, केवल आतम ही नित्य यहाँ,
आओ मेरे संग संयम लो, सिद्धि की शरण दिलाऊँगा।
नहीं जन्म....।

आशीष आपकी चाहता हूँ संकल्प रहे अविचल मेरा,
'गौतम' ने प्रभु से अपनायी, बस वो चर्या अपनाऊँगा।
नहीं जन्म....।

-संकलन-सुमतिचंद मेहता, पीपाड़

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

उपासकदशांग सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (15)

प्रश्न 1.–''दुर्बल आत्माओं में सत्य का प्रकाश जुगनू की चमक के समान होता है। कथन का ससन्दर्भ विवेचन कीजिए।

उत्तर– ''दुर्बल आत्माओं में सत्य का प्रकाश जुगनू की चमक के समान होता है,'' अर्थात् कुछ देर के लिए होता है और विलीन हो जाता है। दुर्बल आत्मा स्वार्थ भाव को सर्वहितकारी प्रवृत्ति में परिवर्तित नहीं कर पाती है, परिणामतः उसके सत्य का बोध टिक नहीं पाता है। कारण कि दुर्बल आत्मा वही होती है, जो संकल्प-विकल्प के जाल में फंसी हुई काम और मोह में आबद्ध होती है। अपने सीमित अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए ऐसी आत्माएँ सत्य को जानती हैं, पर मानती नहीं। जो निरन्तर मिट रहा है, उसके पीछे दौड़ती हैं और जो नित्य प्राप्त है, उससे विमुख रहती हैं। इतना ही नहीं, वे व्यक्ति अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए पराधीनता को स्वाधीनता के समान ही आदर देते हैं। इस तरह जड़ता, परतंत्रता में आबद्ध आत्मा को सत्य का प्रकाश नहीं होता है। केवल आभास-मात्र होता है। उसे तो सत्य पर संदेह रहता है, संदेह होने से उसे वास्तविकता का परिज्ञान नहीं हो पाता है। दुर्बल-आत्मा जो कुछ मानता है, वह इन्द्रिय-मन-बुद्धि आदि के द्वारा ही जानता है, और सत्य तो इन सब माध्यमों से जाना ही नहीं जा सकता। इन्द्रिय अपने द्वारा गृहीत विषय को ही सत्य स्वीकार करती है। मन, पाँचों इन्द्रियों द्वारा गृहीत को सत्य मानता है, जबकि यह सब सत्य का एक अंश मात्र है। जो अनन्त के किसी अंश पर संदेह करते हों और किसी अंश पर विश्वास करते हों उन्हें सत्य का बोधक नहीं कहा जा सकता, तथा उन्हें सत्य उपलब्ध भी नहीं होता और प्रतीति के आधार पर विश्वास करना चाहते हों, उनमें अविचल विश्वास नहीं हो सकता। वे दुर्बल आत्माएँ संशय की अग्नि में भासित होती हुई जन्म-मरण की महावेदना प्राप्त करती हैं। जैसेकि गोशालक को भगवान् महावीर की धर्म प्रज्ञप्ति पर अविचल विश्वास नहीं था। अल्प विश्वास कुछ ही देर में पूर्ण

अविश्वास में बदल गया और वह जुगनू हलका सा प्रकाश का आभास दे समाप्त हो गया। शकडाल पुत्र का 7वां अध्ययन इसका प्रकाशन कर रहा है। गोशालक जी स्वयं भगवान् के गुणों को प्रकट कर रहे हैं। भगवती सूत्र शतक 15 भी बता रहा है, पर जैसे जुगनू की चमक समाप्त होती है, वैसे ही वे पुनः मिथ्यात्व में चले जाते हैं।

प्रश्न 2.– ''जीने की लालसा में मृत्यु का भय समाहित रहता है।'' –इस कथन को सन्दर्भपूर्वक समझाइए।

उत्तर– जीने की लालसा में मृत्यु का भय समाहित रहता है। 'विचिर्-पृथक्करणे' धातु से 'विवेक' शब्द बना है जिसका तात्पर्य है– अलग करना, जीव को अजीव से अलग करना। '' चेतन भिन्ना ये तन भिन्ना'' शरीर आत्मा का भेद–विज्ञान विवेक है। इस प्राप्त विवेक का अनादर कर शरीर के लिए प्रवृत्त होना, अविवेक है। अविवेक देहाभिमान को जन्म देता है। देह को बनाये रखने के लिए साधक कुछ न कुछ करने के लिए प्रवृत्त होता है। करने की भावना, करने की रुचि को जन्म देती है, और करने की रुचि में ही जीने की आशा तथा पाने का लालच निहित है और जीने की आशा में ही मृत्यु का भय विद्यमान है। मृत्यु के भय से रहित होने के लिए जीने की आशा का त्याग, जीने की आशा के त्याग के लिए 15 कर्मादान, उपभोग–परिभोग एवं परिग्रह के परिमाण द्वारा अप्राप्त के लालच का त्याग, अप्राप्त के लालच का त्याग करने के लिए प्राप्त का (10 बल प्राण का) सदुपयोग करना अनिवार्य है। जीने की आशा से ही साधक करने के लिए प्रवृत्त होता है। जिसे कर लिया, उस प्राप्त की ममता और जिसे नहीं किया उस अप्राप्त की वह कामना करता है। इस अर्थ में ममता, भूतकाल की तथा कामना भविष्य काल की सिद्ध होती है। भूतकाल की ममता और भविष्य की कामना में साधक वर्तमान में प्राप्त (10 बल प्राणों का) का सदुपयोग नहीं कर पाता। फलतः करने की रुचि से मुक्त नहीं हो पाता। ममता और कामना उसे भयरहित होने नहीं देती, क्योंकि वस्तु की ममता में हानि का और व्यक्ति की ममता में वियोग का भय रहा हुआ है। अतः ममता भय की जननी है। कामना परिग्रह बढ़ाती है, परिग्रह प्रमाद बढ़ाता है और

आचारांग सूत्र, श्रुतस्कंध के अध्याय 3, उद्देशक 4 के अनुसार ''सव्वओ पमत्तस्स भयं'' प्रमादी को सब ओर से भय लगा हुआ है। उसे प्रतिक्षण मृत्यु का (ये सब मिला है वह लुट जायेगा, जिसे अपना मान लिया, उसका वियोग हो जायेगा) डर रहता है। इस तरह करने में जीने की आशा तथा मृत्यु का भय लगा हुआ है।

अप्राप्त की कामना आर्त्तध्यान है। कितना जीऊँगा? इस तरह लम्बे समय तक जीवन जीने की इच्छा करना आर्तध्यान है जबकि प्राप्त का सदुपयोग, कैसे जीना? जितना जीवन मिला है, उस जीवन में अनुभूति के स्तर पर मृत्यु के दर्शन कर अमरत्व की साधना कर लेना धर्म-ध्यान है। श्रमणोपासक आनन्दजी ने उपभोग-परिभोग, परिग्रह-परिमाण व्रत द्वारा अप्राप्त की कामना (लालच) का त्याग कर दिया तथा प्राप्त के सदुपयोग के लिए अपने ज्येष्ठ पुत्र को घर का मुखिया बनाकर, पौषधशाला में धर्म-ध्यानस्थ हो गये। फलतः जीने की आशा एवं मृत्यु के भय से मुक्त बन गये। किन्तु सुरादेव जी चूलनीपिताजी, चुल्लशतक जी एवं सकडाल जी ये साधक रागवश, मोहवश, आर्तध्यान से युक्त होकर करने के लिये प्रवृत्त हो गये। इन्हें प्राप्त (शरीर-सम्पत्ति-पत्नी-माता) की ममता थी तथा अप्राप्त (अधिक समय तक जीवन जीने) की कामना थी, तभी तो मृत्यु का भय था और इसी वियोग के भय से करने के लिए प्रवृत्त हो गये। महाशतक जी के द्वारा कर्मफल का भयानक परिणाम नरक गति को सुन रेवती काँपने लगी। वह भयभीत, उद्विग्न और त्रासित हो गई। उसके मोह के वेग ने भय का परिवेश धारण कर लिया। उसका उन्माद उद्विग्नता में परिवर्तित हो गया। कारण यही था कि उसे जीने की लालसा थी।

इसके विपरीत आत्मा के अनन्त में निमग्न कामदेव श्रमणोपासक जीवन की लालसा से रहित था, अतः उसे मारणान्तिक उपसर्ग भी भयभीत न कर सके और वह साधक प्राप्त के सदुपयोग में प्रयासरत रहा।

भीतर के अविवेक से देहाभिमान जागृत होता है। देहाभिमान से करने की रुचि बढ़ती है, जिसका हेतु है जीने की आशा और उसी में

समाहित है मृत्यु का भय।

शास्त्र में अन्यत्र भी प्रश्नव्याकरण, अध्ययन 1, साधु के गुणों के विवेचन में 'जीवियासमरणभयविप्पमुक्को', भगवती शूत्र शतक 12, उद्देशक 5 लोक के पर्यायवाची में जीने की आशा व मृत्यु का भय। उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 14/23 मच्चुणा अब्भाहओ लोगो। आवश्यक सूत्र। उपासकदशा सूत्र में, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे। संस्कृत व्याख्या में 'एतस्मात् अन्यत् भयं नास्ति, मरणसमं णत्थि भयमिति। आशय यही कि जब तक अप्राप्त की कामना एवं प्राप्त की ममता रहेगी तब तक जीने की आशा तथा मृत्यु का भय भी रहेगा।

अन्तर उपवन सुरभित हो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

श्रद्धा-भक्ति की सौरभ से, अन्तर उपवन सुरभित हो,
धर्म भावना बढ़े निरन्तर, जीवन मेरा विकसित हो
श्रद्धा-भक्ति की सौरभ से .....।

नाम रटूँ निशदिन प्रभुवर का, चरणों में अरदास करूँ,
ऐसा दो वरदान मुझे प्रभु, उर में नव उद्योत भरूँ।
पाकर ज्ञान की नव ज्योति को, मन मेरा यह पुलकित हो,
श्रद्धा-भक्ति की सौरभ से. ।।1।।

महापुरुषों की वाणी पाकर, नई चेतना जग जावे,
अभिमान हो नहीं हृदय में, सरल भावना नित आवे।
जिनवाणी का सम्बल पाकर, मन मेरा प्रफुल्लित हो,
श्रद्धा-भक्ति की सौरभ से .।।2।।

गुरुजनों के चरण कमल में, ज्ञान-ध्यान को प्राप्त करूँ,
विनय भावना को अपनाकर, सम्यक्ज्ञान का वरण करूँ।
धर्म का शरणा पा करके यह, मन मेरा समर्पित हो,
श्रद्धा-भक्ति की सौरभ से .।।3।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग (छतीसगढ़)

नारी-स्तम्भ

मलिन विचारों से रहें सावधान

श्रीमती मंजू साण्ड

मानव कर्म क्षेत्र में जब संघर्षरत होता है तो उसका मन एवं मस्तिष्क काम, क्रोध, मद, माया, लोभ आदि से दूषित हो जाता है। अभद्र एवं गलत संस्कारों से मन में कूड़ा कचरा भरने लगता है। कुसंस्कार एवं विचारों की भीड़ में मन अशान्त एवं तनावों से भर जाता है। इस गंदगी भरे मन की शुद्धि कैसे हो, इसका चिन्तन उपेक्षित है।

जब हम किसी सम्बन्धी, परिचित, मित्र के घर मेहमान बन कर जा रहें है तो अपने घर की सुख सुविधाएं घर पर ही छोड़ जाएं, उनके संकल्प अपने परिचित के घर न ले जाएं। हो सकता है जो सुख साधन हम अपने घर में प्राप्त करते हैं वे वहाँ न मिलें। जब ये सुविधाएँ नहीं मिलेंगी तो मन अशांत होगा और मन अशान्त होने से परिचित या सम्बन्धी से मिलने का सारा आनन्द समाप्त हो जायेगा। अतः ऐसी किसी भी अपेक्षा को लेकर आप घर से न निकलें, नहीं तो वापस आने पर अपने मित्र या सम्बन्धी को भला-बुरा कहेंगे तथा यहाँ वहाँ उसे बदनाम भी करेंगे। मधुरता के लिए गए थे तथा साथ में वापस कटुता लायेंगे। दिमाग खाली नहीं करने का कैसा भीषण दुष्परिणाम निकलेगा।

मित्र या सम्बन्धी के यहाँ से लौटते हुए भी अपने दिमाग को खाली करके लौटिए। यदि उचित सत्कार सम्मान न हुआ हो। भूल से या अन्य किसी तरह से अपमान हुआ हो मनोनुकूल सुख साधन उपलब्ध न हुए हों तो कोई बात नहीं। प्रायः ऐसा हो जाता है, पर आप इस गंदगी को अपने दिमाग में भरकर न रखें, क्योंकि कभी न कभी और कहीं न कहीं मुँह से मन में रखी बात बाहर आ जाती है और वह स्नेह के मधुर वातावरण को विषाक्त बना देती है। इस तरह एक बार के टूटे हुए मन जीवन भर तो क्या, पीढ़ियों तक परस्पर नहीं मिल पाते हैं।

इसके विपरीत यह भी हो सकता है कि वहाँ घर की अपेक्षा सुख साधन अच्छे मिले हों आसन, शयन आदि बहुत ही रुचिकर प्रतीत हुए हों, भोजन सुस्वाद बना हो, स्वागत कल्पना से भी अधिक अच्छा हुआ हो, इन

सबके लिए सत्कारकर्त्ता के प्रति प्रेम एवं आदर का भाव तो मन में रखें, लेकिन इनका मोह अपने मन मस्तिष्क में न जमने दें। अगर आपने अपना मन मस्तिष्क इनसे खाली नहीं किया तो घर आते ही आप अपनी माँ बहन से झगडेंगे। अपनी पत्नी को आप सौ उलाहने दे देगें, उसे गंवार एवं फूहड़ बतायेंगे, उसके बनाए भोजन में सौ गलतियाँ निकालेंगे और इस तरह अपने घर का वातावरण कलहपूर्ण बना देंगे। उन जैसे सुख साधन न जुटा पाने के कारण हीन भावना से ग्रस्त व मानसिक रोगी बन जायेंगे।

-व्याख्याता, जैन दर्शन, ब्यावर (राज.)

शान्ति-अमृत

डॉ. रमेश "मयंक"

जब हम अहं से छूट जाते हैं
तो-शान्ति को पाते हैं,
स्वयं को गलाना
तृष्णाओं पर विराम लगाना
आवश्यकताओं को सीमित बनाना
कुमार्ग-गमन से बचाना है।
निज अंहकार को गलाकर
राग-द्वेष; छल-प्रपंच को
कचरे के ढेर सम जलाकर
प्रकृति के करीब जाकर
यदि हम
भीतरी ज़हर के घर को
रिक्त कर पाए तो
मन के घट को
शान्ति-अमृत से भर पाए तो
हमें मिलेगा अलौकिक आलोक
जहाँ नहीं रहेगा अन्धकार
हमारा संगी साथी होगा
प्यार भरा सत्कार

- बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

युवा-स्तम्भ

तनाव-मुक्ति का अमोघ उपाय

प्रो. चाँदमल कर्णावट

बालक से वृद्ध तक आज सभी तनावग्रस्त रहते हैं। तनाव एक महारोग है और चिकित्साशास्त्र के अनुसार अनेक रोगों को जन्म देने वाला है। आए दिन लोग तनावग्रस्त होकर आत्महत्या कर लेते हैं। तनाव का इससे भयानक परिणाम और क्या होगा?

तनाव के कारणों में सहनशीलता और धैर्य की कमी, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में समता नहीं रख सकना, भय, धन का लोभ, पद-प्रतिष्ठा इच्छानुकूल नहीं मिलना और सभी अनिच्छित स्थितियाँ हैं।

भौतिक इलाज तनाव को मिटाने में समर्थ नहीं है, परन्तु जीवन में समता का व्यवहार और अभ्यास तनाव-मुक्ति का अचूक उपाय है। प्रश्न होगा समता क्या है? समता है अनुकूल-प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में सम रहना, आकुल-व्याकुल नहीं होना, हर्ष-शोक, लाभ-हानि, दुःख-सुख, निन्दा-प्रशंसा और जीवन-मरण में संतुलित बने रहना, न फूलना, न शोकाकुल होना। कारण कि दुःख में दुःखी वही होता है जो सुख में फूलता है। मान-सम्मान में खुश होने वाला ही अपमान के क्षणों में दुःखी होता है।

विषमता पाप है और समता धर्म है। हिंसा, झूठ, चोरी, दुराचार, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि सभी दुर्गुण विषमता हैं। उनसे व्यक्ति स्वयं दुःखी बनकर दूसरों को भी दुःखी बनाता है। ये हिंसा आदि सभी दुर्गुण तनाव उत्पन्न करते हैं, व्यक्ति भयभीत और व्याकुल रहता है। इसके विपरीत अहिंसा, प्रेम, मैत्री, सत्य, ईमानदारी, अपरिग्रह, क्षमा, संतोष आदि सभी सद्गुण व्यक्ति को तनाव से मुक्त करते हैं। गीता में इस समता की स्थिति को स्थितप्रज्ञता और जैन दर्शन में रागद्वेष से रहित होना या वीतरागता कहा गया है।

समतापूर्ण व्यवहारों के विकासार्थ सभी परिस्थितियों में सम रहने का अभ्यास परमावश्यक है। दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख प्रकृति का सहज क्रम है। रात के बाद मुस्कुराती उषा और पतझड़ के बाद सुहावना वसंत

आता ही है। विषम स्थितियों में सहनशीलता और धैर्य के गुणों का विकास करना अति आवश्यक है।

एक राजा बड़ा दुःखी रहता था। उसके राज्य में कभी विद्रोह होता कभी शत्रु का आक्रमण, तो कभी प्राकृतिक आपदा आती। राजा ने मंत्री से सलाह की। मंत्री ने राजा से कहा- "महाराज, एक अंगूठी बनवाएँ, उस पर एक मंत्र लिखवाया जाये- "यह भी चला जायगा"। राजा जब भी तनाव में होता, वह मंत्र को देख लेता और समता धारण कर लेता।

इसके अतिरिक्त तनाव दूर करने का उपाय है- हर परिस्थिति में ज्ञाता द्रष्टा बने रहकर कोई दुःखोत्पादक प्रतिक्रिया नहीं करना। हम चिंता नहीं करके चिंतन करें और दुःख-निवारण हेतु सजग रहें। विश्वास रखें कि कोई क्रिया निष्फल नहीं होती, उसका फल मिलता ही है। शुभ कर्म करते समय भी यह सोचें कि सुख-दुःख जीवन में आते जाते रहते हैं।

अनुकूल प्रतिकूल सभी दशाओं में समता भाव का हमारे जीवन में विकास हो और हम तनाव मुक्त बनकर शांतिपूर्ण जीवन जी सकें, इसके लिए सतत अभ्यास अपेक्षित है।

-प्लॉट नं. 35, अहिंसापुरी, फतेहपुरा, उदयपुर-313001 (राज.)

श्री जैन रत्न उ0मा0विद्यालय, भोपालगढ़ (जोधपुर)

: आवश्यकता :

प्रधानाध्यापक- एम.ए/एम.एस.सी., बी-एड।

व्याख्याता- भौतिक, रसायन, जीव-विज्ञान, गणित, लेखाशास्त्र, व्यावसायिक प्रबन्ध, अंग्रेजी।

अध्यापक- गणित, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, शारीरिक शिक्षक, क्लर्क।

साक्षात्कार हेतु स्वयं के व्यय पर विद्यालय में प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपि सहित आवेदन करें। सम्पर्क सूत्र :- **सम्पतराज जी बोथरा,** मंत्री, 74 बी, विनोद भवन, हनुवन्त कॉलोनी, सर्किट हाउस के पास, जोधपुर-342001 (राज.) फोन : 0291- 2510009, 2546218, 02920-222280

संस्मरण

संयम पथ के पथिकों को वन्दन

श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया

धन्य-धन्य हैं वे आत्माएँ जो संयम-पथ पर अग्रसर हो रही हैं। जिनका जीवन शुद्ध एवं सरल होता है, वे ही चारित्र मार्ग पर आगे बढ़ने को तत्पर होते हैं। प्रभु महावीर ने जो मुक्ति-मार्ग बताया है, वह त्याग-प्रधान है। संयम वह क्रिया है, जो संचित्त कर्मों को काटने का कार्य करती है। संसार बंधन है और बंधन को काटने की प्रक्रिया संयम है। अपने मन में संयम अंगीकार करने की भावना होना भी पुण्यवानी है और उस भावना को मजबूती एवं दृढ़ संकल्प देकर उस पथ पर कदम बढ़ाते हुए संयम व्रत अंगीकार कर लेना पुरुषार्थ है। हृदय से हर्षित रहकर खुशी-खुशी निर्मल चारित्र का पालन करते हुए स्व-पर कल्याण में लीन रहना, यह सच्ची साधना है। सच्ची साधना से आत्मिक गुणों का विकास होता है और आत्मिक गुण मुक्ति की राह की ओर ले जाते हैं। संयम लेने के लिए पुण्यवानी के संयोग के साथ-साथ पुरुषार्थ का प्रयोग अति आवश्यक है। जिस आत्मा में त्याग-व्रत रूपी विरति भाव तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त के लिए प्रकट हो जाते हैं, उस आत्मा को चारित्र आत्मा के नाम से जाना जाता है।

इसी संयम-पथ पर आगे चरण बढ़ा रहे (अब दीक्षित) विरक्त आत्माओं को हृदय से शत-शत वंदन-अभिनंदन है।

विरक्त बंधु श्री दुलीचंदजी बोहराः-

आपकी जन्म-भूमि कोसाना एवं कर्म-भूमि चेन्नई है। आपका पूरा परिवार संघ-समर्पित है। आपने समाज में व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी उपलब्धि प्राप्त की। आपको घूमने-फिरने का, विभिन्न पर्यटक क्षेत्रों में जाने का पूरा शोक रहा। इस शोक को पूरा करते हुए भी आप हमेशा अपनी आत्मा में स्थिर रहे। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए आपने गृहस्थ अवस्था में कुशल सद्गृहस्थ होने का परिचय दिया। आर्थिक दृष्टि से सर्व-

सम्पन्न होते हुए भी आप 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली विचार धारा से चले एवं संघ से जुड़ा होने के कारण आपसे मेरा विशेष परिचय रहा, आपका प्रेम-स्नेह हमेशा मुझ पर बना रहा। मैंने आपको जिस रूप में जाना, उस आधार से मुझे महसूस हुआ-

(1) आप्र हमेशा सामाजिक-पारिवारिक के साथ-साथ धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन को आडम्बर रहित रखने के पक्षधर रहे। धार्मिक कार्यक्रमों की आड़ में आडम्बर, प्रदर्शन को आप संघ-समाज हित में नहीं मानते हैं। संघ-समाज में आडम्बर-प्रदर्शन दिखावे आदि का आपके दिल में दर्द है। आप हौड़-प्रतिस्पर्धा को ठीक नहीं मानते हैं। जिस तरह साधक आत्मा के मन में संघ समाज में फैली हुई कुरीतियों का दर्द रहता है, उसी तरह आपके मन में भी गहरा दर्द है।

(2) हम अपने मन को टटोलें, अपने अंदर झांकें, हमें अनुभव होगा कि हम पर-पंचायती में, दूसरों की बातों में रुचि रखते हैं। मैंने आपके जीवन में, इस अपेक्षा से महसूस किया कि आपमें गहरा अन्तर है। आप दूसरों की बातों में रुचि नहीं रखते हैं। अर्थात् आप पर-दर्शन की अपेक्षा स्व-दर्शन को लक्ष्य बना कर चल रहे हैं। वास्तव में साधक का लक्ष्य भी ऐसा ही होता है।

(3) आप अनेक वर्षों से संघ के हर कार्य में तन-मन-धन से जुड़े हुए हैं। आपमें पद के प्रति कभी आकर्षण नहीं रहा। आप पद को राग-द्वेष का चक्रव्यूह समझते हैं। सही मायने में जिन्हें नवकार महामंत्र के पाँच पदों में आना हो, वे क्यों इन पद-प्रतिष्ठा के जंजाल में पड़ेंगे। संसार के पद, नवकार महामंत्र के पद के समक्ष कुछ भी नहीं हैं, आप ऐसा मानते हैं। पद पर रहते हुए जीवन को सरल बना पाना मुश्किल है और सरल आत्मा ही संसार रूपी सागर से तिर सकती है।

पूज्य आचार्य भगवन्त के वेपेरी एवं चेन्नई चातुर्मास की बातें मुझे याद आ रही हैं। सायंकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् जब आप श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. के पास सेवा में बैठे रहते, मैं म.सा. को वंदना करने के पश्चात् आपके पास आकर झुककर 'मत्थएण वंदामि' कहता तो म.सा. फरमाते थे कि मद्रास वाला

सभी ठग हो, कुण दीक्षा लेवे, मद्रास वाला आचार्य श्री ने ठगो।'' अब मेरे मन में इच्छा होती है कि आपकी दीक्षा के पश्चात् जब म.सा. के दर्शन करने जाऊँगा, तब निवेदन करूँगा कि हमारे ठगों के बाजार में अभी भी साहुकार मौजूद हैं।

विरक्ता बहन श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा :-

आप सही मायने में आदर्श महिला एवं अर्द्धांगिनी हैं, जिसने शादी के फेरों के वक्त जीवन भर साथ निभाने का वचन लिया, तो साथ ही साथ अपने पतिदेव के संयम-मार्ग में प्रस्थित होने पर साथ देने हेतु संयम-मार्ग का लक्ष्य बनाया है। आपकी स्कूल की शिक्षा तो अवश्य कम है, परन्तु आपने अपने पूरे परिवार को जो संस्कारों की शिक्षा दी है, जिसके फलस्वरूप आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से हरा-भरा है। इससे साबित होता है कि स्कूल-कालेज की शिक्षा से अधिक महत्त्व संस्कारों की शिक्षा का है। आप आदर्श गृहिणी हैं, आपने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का अच्छी तरह दायित्व निभाते हुए, अब अपना लक्ष्य आत्मा की ओर बनाया है। आपके चेहरे पर हर समय मुस्कान बनी रहती है। वीर-प्रभु से मंगल कामना है कि आप इसी मुस्कान के साथ हँसते-हँसते हर कर्म को काटते हुए मुक्ति पथ पर चलें।

विरक्त बंधुवर श्री जितेन्द्र जी कोठारी :-

आपके नाम में भी जीत है। आप अपने नाम के अनुसार इन्द्रियों को अवश्य जीतेंगे। आपकी पुण्यवानी भी ऐसी कि आपका जन्म-स्थल भी पुण्य-धरा निमाज है, जहाँ पूज्य आचार्य भगवन्त का संथारा सहित समाधि-मरण हुआ था। आपसे मेरा कभी मिलना पूर्व में हुआ नहीं, पर मैंने जब साहुकारपेठ जैन स्थानक में जहाँ सकल श्री संघ की ओर से आपका अभिनंदन-कार्यक्रम हुआ, वहाँ आपके चेहरे पर गजब का आत्म-विश्वास देखा। सकल श्री संघ के समक्ष आपने बुलन्द हौंसले के साथ संयम के अर्थ, गुरु के महत्त्व एवं उपकार की बात रखते हुए सभी को इस पथ पर आने का लक्ष्य बनाने को कहा। वीर प्रभु से मंगल-कामना है कि आपके संयमी जीवन में ऐसा ही आत्म-विश्वास बना रहे एवं आप स्व-पर कल्याण के लक्ष्य के साथ-साथ अपनी कर्मों की बेड़ियाँ काटने में सफल हों।

विरक्ता बहन सिन्धु जी कवाड़ :-

इस युवा अवस्था में जब संसारी लोग खेल-कूद एवं भोग में रुचि रखते हैं तंब आपने तप-त्याग के मार्ग में बढ़ने का निर्णय लेकर, नमस्कार महामंत्र के पाँचवें पद में अपना स्थान बनाने का निश्चय किया है। धन्य हैं, आपके आत्म-बल एवं मनोबल को। मूलतः आप राजस्थान में पीपाड़ शहर से संबंधित हैं, पीपाड़ जो दो-दो महान् आचार्यों की जन्म-भूमि है। साथ ही साथ में कवाड़ परिवार में आपका जन्म होना यह पुण्यवानी की बात है, जिस परिवार में बचपन से ही संस्कारों की शिक्षा दी जाती है। धन्य है आपके माता-पिता को जो अपने कलेजे के टुकड़े को, अपनी लाडली को जिनशासन की प्रभावना हेतु आज्ञा दे रहे हैं। आप निर्मल चारित्र का पालन करते हुए स्व-पर कल्याण करते हुए मुक्ति-मार्ग की ओर अग्रसर हों।

-407, मिन्ट स्ट्रीट, द्वितीय फ्लोर, साहुकारपेठ, चेन्नई-600079

वैराग्यस्य समर्थनम्

डॉ. धर्मचन्द जैन

नमस्कृत्य महावीरं, पूज्यान्साधुजनानपि
हीराचन्द्रं गुरुं नौमि, संघं नमामि सर्वदा ।।1 ।।
शं भूयात् मंगल भूयात्, सूक्ष्मबादरचेतसाम्
रागद्वेषौ विजित्याहं, चरेयं न्यायनीतिना ।।2 ।।
मैत्रीप्रमोदकारुण्यं, जीवेषु मे भवेत्सदा।
माध्यस्थं सुखदुःखेषु, एवमात्मा गुणी भवेत् ।।3 ।।
क्षुद्रं स्वार्थं परित्यज्य, समेषां हितं कामये।
विवेकस्य प्रकाशे हि, सत्यं दृष्टिपथे वसेत् ।।4 ।।
ईर्ष्याद्वेषादिपापानि, त्यजेयं हितबुद्धिना
सन्निधिः शास्त्रवाण्या हि, कुर्यात् दोषनिवारणम् ।।5 ।।
अभिनन्दामि भावेन, सर्वानत्र समागतान्।
कुर्याम मनसा वाचा, वैराग्यस्य समर्थनम् ।।6 ।।

-3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

कसौटी

संकलयिता : श्री गौतमचन्द जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जुलाई 2009 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

विस्सं तु पीयं जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।
एसोवि धम्मो विसओववण्णो, हणाइ वेयाल इवाविवण्णो।।

-उत्तराध्ययन 20/44

कालकूट विष अगर शोधन न करके वैसे ही पी लिया जाय या शस्त्र भी उलटे रूप में पकड़ लिया जाय तो वह स्वयं को ही मारने वाला बन जाता है, इसी प्रकार यदि धर्म को विपरीत प्रकार से पाला जाये तो वह उसी प्रकार *घातक हो जाता है जिस प्रकार अविधि से बुलाया गया बेताल होता है।*

रामू माली और सत्तू सुनार में अच्छी दोस्ती थी। रामू माली अपने बगीचे को सुगन्धित फूलों से सजाने के लिए दिन-रात कठोर परिश्रम करता था। बगीचे में भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़-पौधे बगीचे की शोभा में चार चाँद लगा रहे थे। उसे अपने बगीचे एवं उसकी साज-सज्जा पर बड़ा गर्व था। मानव का स्वभाव होता है कि वह अपने उद्यम का बखान अपने सगे-सम्बन्धियों और परिचित-दोस्तों के मुँह से सुनने का इच्छुक रहता है। इस प्रकार अपने अहं की तुष्टि करके सुख पाता है।

रामू माली ने अपने मित्र सुनार से एक दिन कहा-"क्या अपनी दुकान पर बैठे ठुकठुक करते रहते हो, एक दिन मेरे बगीचे में आकर भिन्न-

भिन्न प्रकार की सौरभ से साक्षात्कार करो, जिससे तुम्हारा मन-मयूर नाच उठेगा।''.

सत्तू सुनार ने कहा- ''मेरे दोस्त! मैं जरूर आऊँगा।''

एक दिन सत्तू सुनार रामू माली के बगीचे में पहुँच जाता है। साथ में वह अपने हाथ में सोने को कसने की कसौटी भी ले जाता है।

बगीचे में प्रवेश कर सत्तू सुनार ने प्रत्येक फूल को सोने की कसौटी से कसना प्रारम्भ कर दिया। वह एक-एक फूल को कसौटी पर कसता और मुँह बिचकाकर दूसरे पौधे की तरफ रुख कर देता। इस प्रकार वह फूलों की सुगन्ध से सरोकार न रखकर फूलों में स्वर्ण की खोज करता रहा। सुनार को इस प्रकार उस उद्यान में आनन्द की अनुभूति नहीं हुई। रामू माली को भी सुनार की प्रतिक्रिया से बड़ी अन्तर्वेदना हुई और मन ही मन सोचा कि मैं भी निरा पागल हूँ, जो मैंने इसे आमन्त्रित किया।

कौतुहलवश इसके पश्चात् सत्तू सुनार ने भी माली को अपनी दुकान पर आने का निमन्त्रण दिया। रामू माली ने सत्तू सुनार का आमन्त्रण स्वीकार कर लिया। एक दिन वह सत्तू सुनार की दुकान पर पहुँच जाता है।

वहाँ वह रामू माली प्रत्येक जेवर को उठाता, सूँघता और खुशबू नहीं मिलने पर निराश होकर रख देता। यही प्रक्रिया पुनः-पुनः सभी प्रकार के जेवरों को हाथ में लेकर करता रहा और वह सोने में भी सुगन्ध की खोज में लगा रहा। उसे भी वहाँ उतनी ही निराशा हाथ लगी जितनी कि सुनार को बगीचे में लगी थी।

वास्तव में हम संसारी प्राणियों की दशा भी उस सुनार और माली से भिन्न नहीं है। जीवन में सुख-सन्तोष खोजने की हमारी अपनी-अपनी कसौटियाँ हैं। कठिनाई यह है कि हम फूलों को सोने की कसौटी पर कसते हैं और सोने में सुगन्ध खोजते हैं।

जिस प्रकार फूलों में स्वर्ण और स्वर्ण में सुगन्ध की खोज करना मूर्खता है उसी प्रकार जड़-पदार्थों में सुख को खोजना मूर्खता का ही लक्षण है।

कर्म यदि शुभ है तो शुभ फल ही मिलेगा,
शूल अगर बोओगे तो फूल कैसे खिलेगा?
शुभ कर्म से जिंदगी को नई महक दो तुम,
आग में धरा पाँव भला कैसे नहीं जलेगा?

प्रश्न :-

1. क्या मानव अहं की तुष्टि करके सुख पाता है ? स्पष्ट कीजिए।
2. रामू माली और सत्तू सुनार ने क्या मूर्खता की?
3. मुहावरों का वाक्य-प्रयोग कीजिए-
   चार चाँद लगाना, मन मयूर नाचना
4. अर्थ लिखिए-
   कसौटी, अन्तर्वेदना, साक्षात्कार, प्रतिक्रिया, गर्व, उद्यम, शूल।
5. दो-दो पर्यायवाची लिखिए :-
   सौरभ, फूल, मित्र, सोना, उद्यान।
6. आपके सुख-सन्तोष की कसौटी क्या है?
7. मूर्खता का लक्षण समझाइए।

-'प्रेरक कथाएँ' पुस्तक से साभार

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2009] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2009 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'माँस सस्ता या महंगा?' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 24 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 25 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	सेजल भंसाली-जलगाँव	24.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़ सिटी	23.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	पल्लवी जैन-जोधपुर	23
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	पारुल खिंवसरा-जोधपुर	22.5
	गौरव खिंवसरा-जोधपुर	22
	चारू गोलेच्छा-सोजतसिटी	22
	आयुषी जैन-जयपुर	21.5
	अर्पित जैन-जोधपुर	21.5

10 जून 2009
जिनवाणी 72

स्वास्थ्य विज्ञान

चिकित्सा सेवा में अहिंसा

डॉ. चंचलमल चोरडिया

दवाइयों के निर्माण हेतु जीवों के अवयवों का बिना किसी परहेज उपयोग होता है। औषधियों के परीक्षण हेतु जीवों को यातनाएँ दी जाती हैं। उनकी मान्यतानुसार मनुष्य के लिए सभी अपराध क्षम्य होते हैं। क्या आपने कभी सोचा आपके दुःख, दर्द, रोग अथवा पीड़ा का क्या कारण है? यह तो आपके ही किए की प्रतिक्रिया है। 'क्रिया की प्रतिक्रिया' तो इस सृष्टि का सनातन सिद्धान्त है। हमने अतीत जीवन में या जन्मों में किसी को मारा है, पीटा है, सताया है, रुलाया है, प्रताड़ित किया है, उसी की सजा के रूप में रोग आते हैं। स्पष्ट है रोग का कारण हमारी क्रूरता, कठोरता, कामुकता से जुड़ा हुआ है। मस्तिष्क में अविवेक एवं प्राणिमात्र के प्रति अशुभ चिन्तन सबसे बड़ा ब्रेन हेमरेज है तथा हृदय में दया, करूणा नहीं होना सबसे बड़ी हार्ट ट्रबल है। अपराध करने, करवाने और करने में सहयोग देने वाले प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में अपराधी होते हैं। हिंसा को प्रोत्साहन देने वालों की संवेदना प्रायः प्राणिमात्र के प्रति विकसित नहीं होती। आधुनिक चिकित्सक कभी-कभी रोग का सही कारण न जानने के बावजूद अपनी गलती न स्वीकार कर, येन-केन-प्रकारेण रोगों को दबा वाहवाही लूट, न केवल अपने अहं का पोषण करते हैं, अपितु रोगी को प्रयोगशाला बना अपना स्वार्थ साधते हैं। अतः दुःख से बचने वालों को अन्य प्राणियों को दुःखी बनाने में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सहयोगी नहीं बनना चाहिए। सेवा कर्म-निर्जरा का सशक्त माध्यम है और हिंसा कर्म-बन्धन का प्रमुख कारण। अतः सेवा के साथ साधन और सामग्री की पवित्रता आवश्यक होती है, उसके अभाव में की गई रोगी की सेवा घाटे का सौदा है। कर्ज चुकाने के लिए ऊँचें ब्याज पर कर्ज लेने के समान है। अतः चिकित्सा जितनी ज्यादा अहिंसक होगी, उतनी ही आत्मा के विकारों को दूर कर पवित्र बनाने वाली होगी। यही स्थायी स्वास्थ्य प्राप्ति का सम्यक् मार्ग होता है।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर- 342003 (राज.)
E-mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com, swachikitsa@therapist.net

संवाद (24)

माह अप्रेल-2009 की जिनवाणी में पूछे गये निम्नांकित प्रश्न के कतिपय उत्तर मई माह की जिनवाणी में प्रकाशित हुए हैं, उसी क्रम में आगे उत्तर यहाँ प्रकाशित हैं-

प्रश्न-मैं जिनवाणी में प्रकाशनार्थ रचना भेजती हूँ, किन्तु वह प्रकाशित नहीं हो पाती है। आप मुझे सुझाव दें कि मैं किस प्रकार अपनी रचना में सुधार करूँ, जिससे वह प्रकाशित हो सके।

- चेतना जैन (काल्पनिक नाम)

श्री महेन्द्र तिल्लानी, रतलाम- 'जिनवाणी' में आपकी रचना प्रकाशन योग्य बन सके यह जानने के लिए आपको कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा। सर्वप्रथम तो हमें इस बात का सूक्ष्मता से अध्ययन करना होगा कि किसी भी रचना के प्रकाशन के सन्दर्भ में पत्रिका के आधारभूत नियम एवं नीतियाँ क्या हैं? इसके लिए आप जिनवाणी के कई अंकों में प्रकाशित अन्य लेखकों की रचनाओं का ध्यानपूर्वक पठन-मनन करें। 'जिनवाणी' एक जैन दर्शन पर आधारित धार्मिक पत्रिका है और इसका उद्देश्य जन सामान्य में आध्यात्मिक और नैतिक चेतना का जागरण एवं सुदृढ़ीकरण करना है। अन्य किसी मत की निन्दा या आलोचना या किसी व्यक्ति अथवा समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली रचनाओं को इसमें स्थान नहीं दिया जाता। इसमें जैन दर्शन से सम्बन्धित, शास्त्रसम्मत तथ्यों पर आधारित, अहिंसा तथा नैतिकता को बढ़ाने वाली रचनाएँ प्रमुखता से स्थान पाती हैं। अतः आप जिनवाणी में प्रकाशन हेतु अपनी रचना उक्त रीति-नीति के अनुसार तैयार करें।

दूसरे, रचना हेतु आप जिस विषय का भी चयन करें, उसके सम्बन्ध में यथा सम्भव अधिकारिक जानकारी एकत्र करें। आपकी रचना तथ्यों पर आधारित, संक्षिप्त, किन्तु विषय को स्पष्ट करने वाली हो। विषय से भटकें नहीं और संदर्भहीन बातों को रचना से दूर रखें।

(शेषांश पृष्ठ 115 पर)

पुण्यधरा पीपाड़ में चार मुमुक्षुरत्नों का दीक्षाभिषेक

ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी विक्रम संवत् 2066, गुरुवार दिनांक 28 मई 2009 को पुण्यधरा पीपाड़ के श्री ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र (कोट) में पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से एवं परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द सें चार मुमुक्षु रत्नों का दीक्षाभिषेक सम्पन्न हुआ। दीक्षास्थली पर परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., श्री यशवन्तमुनि जी म.सा., श्री लोकचन्द्र जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 13 के पावन सान्निध्य में दूर-निकट के ग्राम-नगरों से समागत हजारों श्रद्धालुओं की साक्षी में दीक्षा समारोह की शोभा नयनों को आनन्द प्रदान कर रही थीं। चार मुमुक्षुरत्न थे- 1. श्री दुलीचन्द जी बोहरा-चेन्नई (मूल निवासी कोसाणा) 2. श्री जितेन्द्र जी कोठारी-निमाज 3. श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा-चेन्नई (मूल निवासी कोसाणा) 4. सुश्री सिन्धु जी कवाड़-पीपाड़शहर।

दीक्षाभिषेक के एक दिन पूर्व शोभायात्रा एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन हुआ। यहाँ पर समस्त कार्यक्रमों का क्रम से उल्लेख किया जा रहा है।

शोभायात्रा

ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया, बुधवार, 27 मई, 2009 को माहेश्वरी समाज भवन से प्रातः करीब 8 बजे मुमुक्षु भाई श्री जितेन्द्र जी कोठारी एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री सिन्धु जी कवाड़ की शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। दीक्षार्थी भाई-बहिन हाथी पर विराजे, जिससे वे दूर तक दृष्टिगोचर हो रहे थे। दीक्षार्थियों के साथ उनके माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजन सुसज्जित बग्गियों में विराजमान थे। यह उल्लेखनीय है कि बोहरा मुमुक्षु दम्पती श्री दुलीचन्द जी बोहरा एवं श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा प्रत्याख्यान के कारण शोभायात्रा में सम्मिलित नहीं हुए। शोभायात्रा के आगे-आगे सुसज्जित घोड़ों पर समाज बन्धु बैठे थे। शोभायात्रा में बैण्ड एवं भजन मण्डलियों की समुचित व्यवस्था थी। श्री जैन रत्न युवक परिषद्

पीपाड़शहर के युवारत्न बन्धुओं एवं रूपासती महिला मण्डल की सदस्याओं ने रास्ते की सुन्दर व्यवस्था सम्भाल रखी थी। शोभायात्रा में दीक्षा-महोत्सव के भजन गीतों के अलावा श्रमण भगवान महावीर स्वामी, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. निर्ग्रन्थ संत-सतीवृन्द एवं दीक्षार्थी भाई-बहिनों के जय-जयकार के जयनाद पूरे रास्ते गुंजायमान हो रहे थे, वहीं संयम के नारों के साथ गुरु हस्ती के दो सन्देश-सामायिक-स्वाध्याय विशेष, गुरु हीरा का है आह्वान-निर्व्यसनी हो हर इंसान, जैन जगत के दिव्य सितारे-हस्ती हीरा मान हमारे के नारे भी गूंज रहे थे। दीक्षा प्रसंग के मंगल गीत गाती बहिनों के समवेत स्वर बहुत प्रभावी थे। संघ संरक्षकगण, शासन सेवा समिति के सदस्यगण, संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, समीपवर्ती-सुदूरवर्ती ग्राम-नगरों से पधारे श्री संघों एवं श्रद्धालुगणों और हर क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं, युवक-युवतियों तथा बालक-बालिकाओं की विशाल उपस्थिति से शोभायात्रा अत्यन्त मनोरम, भव्य ओर प्रभावी लग रही थी। पीपाड़ शहर के बाजारों में शोभायात्रा स्वप्रेरित अनुशासन से चल रही थी जो काला भाटा, राता उपासरा, इलाजी बाजार, मूथों का बास, सदर बाजार होती हुई लगभग चार घंटों में ओसवाल लोड़े साजन विकास केन्द्र कोट पहुँची, जहाँ विरक्तभाई-बहिनों एवं पारिवारिक-परिजनों ने तथा संघ-सेवियों ने परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण का लाभ लिया। वीर परिवारों ने सभा में अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की। परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर सहित मुनिमण्डल एवं महासती-मण्डल ने भी सभा को आशीर्वचन प्रदान किये। शोभायात्रा में स्थान-स्थान पर शीतल पेय एवं शीतल जल की व्यवस्था थी। शोभायात्रा का आर्कषण इतना प्रभावी था कि चार घंटे कैसे व्यतीत हुए भाई-बहिनों को पता ही नहीं चला।

अभिनन्दन-समारोह

दिनांक 27 मई को रात्रि में आठ बजे श्री ओसवाल वाटिका में मुमुक्षुओं एवं उनके परिवारजनों का अभिनन्दन-समारोह आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि थे- राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न

हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे- निमाज के श्री भगवती सिंह जी ठाकुर साहब। संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना, पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघकार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, संघ के महामंत्री श्री नवरतन जी डागा, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ पीपाड़ के अध्यक्ष श्री अमरचन्द जी बोहरा एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ के अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी बोहरा ने भी मंच को सुशोभित किया।

अभिनन्दन-समारोह के प्रमुख केन्द्र बिन्दु थे- मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी एवं मुमुक्षु सुश्री सिन्धु जी कवाड़। वे दोनों भव्य समारोह में सुन्दर आसनों पर विराजित होकर जनसमूहों के नयनों को आनन्दित कर रहे थे। मुमुक्षु बोहरा दम्पती प्रत्याख्यान व पूर्व अंगीकृत नियम के कारण अभिनन्दन-समारोह में सम्मिलित नहीं हुए। संघ के अत्यधिक निवेदन पर वे मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी व मुमुक्षु सुश्री सिन्धु जी कवाड़ का संघ की ओर से अभिनन्दन करने हेतु कुछ क्षणों के लिए पधारे तथा मुमुक्षु दम्पती इन मुमुक्षु भाई-बहनों का माल्यार्पण कर वापिस पधार गये। मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी के वीर दादाजी श्री कनकमल जी कोठारी, वीर पिता श्री कुशलराज जी कोठारी, वीर भाभी श्रीमती सरिता जी कोठारी धर्मपत्नी श्री पदमचन्द जी कोठारी एवं मुमुक्षु सुश्री सिन्धु जी कवाड़ के वीर दादाजी श्री रामलाल जी कवाड़, वीर दादी श्रीमती मोहिनी देवी जी कवाड़, वीर पिता श्री गौतम जी कवाड़, वीरमाता श्रीमती शोभा देवी जी कवाड़ ने भी मंच को सुशोभित किया।

अभिनन्दन-समारोह का प्रारम्भ मंगलाचरण से शासन सेवा समिति के सदस्य श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा ने "उपाध्याय पूज्य मानचन्द्र रो दर्शन मनभावन....वन्दन करण मैं वाणी सुणन मैं पीपाड़ शहर में आवण" काव्य पाठ के माध्यम से ओजस्वी वाणी में किया। स्वागत गीत श्रीमती पुष्पा जी मेहता एवं रूपा सती महिला मण्डल की सहयोगी सदस्याओं ने प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, समारोह अध्यक्ष का स्वागत अभिनन्दन करने के अनन्तर मुमुक्षुओं के परिवारजनों का माला पहनाकर एवं शाल ओढाकर हार्दिक

अभिनन्दन समारोह के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, समारोह अध्यक्ष, संघ-कार्याध्यक्ष एवं वीर पिता श्री सुभाषचन्द जी डागा-जयपुर, वीर पिता श्री नवरतनमल जी गादिया-पीपाड़, वीर पिता श्री नेमीचन्द जी बाफना-कुड़ी, वीर पिता श्री बंशीलाल जी जैन-अलीगढ़, वीर पिता श्री उत्सवराज जी सालेचा-हुबली, वीर पिता डॉ. विमलचन्द जी जैन-हिण्डौन, श्रीमती लीला जी सुराणा-चेन्नई, श्रीमती चन्द्रा जी मुणोत-मुम्बई, तथा पीपाड़ संघ के धर्मनिष्ठ सुश्रावकगण, सुश्राविकागण एवं युवारत्न सदस्यों के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

स्वागत भाषण श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पीपाड़ के अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी बोहरा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने पीपाड़ में इस समारोह के आयोजन पर प्रमोद व्यक्त किया तथा आचार्यप्रवर एव संघ की कृपा का उल्लेख किया। मुमुक्षुओं के परिवारजनों के स्वागत का क्रम बराबर बना रहा। वीर भ्राता श्री पदमचन्द जी कोठारी एवं श्री महावीर जी कोठारी-निमाज, वीर भ्राता श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई, वीर सुपुत्र तपस्वी श्री राजेश जी बोहरा, श्री विमल जी बोहरा, श्री पवन जी बोहरा एवं वीरमाता श्रीमती अमराव बाई जी बोहरा, कवाड़ परिवार के श्री झूमरलाल जी कवाड़, श्री शान्तिलाल जी कवाड़, रतनलाल जी कवाड़ एवं श्री अमृतलाल जी कवाड़ तथा नाना श्री शान्तिलाल जी रांका-जोधपुर का स्वागत पीपाड़ के श्रावक-श्राविकाओं द्वारा किया गया। मुमुक्षु श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा के वीर पिता श्री सज्जनराज जी दुग्गड़ का भी अभिनन्दन किया गया।

मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी को संघ द्वारा प्रदत्त अभिनन्दन पत्र मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया ने अर्पित किया, जिसका वाचन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने किया। मुमुक्षु सुश्री सिन्धु जी कवाड़ को अभिनन्दन पत्र संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने अर्पित किया, जिसका वाचन श्री प्रकाश जी सालेचा ने किया।

सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्यातिथि न्यायमूर्ति श्रीमान् प्रकाशचन्द जी टाटिया ने मुमुक्षु बन्धु-भगिनियों एवं उनके परिवारजनों को नमन करते हुए कहा कि हमें गुरु के दर्शन, गुरु के सान्निध्य एवं उनके मार्गदर्शन का लाभ लेना चाहिये। गुरु के प्रति श्रद्धा से सिर स्वतः झुक जाता है। आज इन्टरनेट से हम अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु उसके समक्ष श्रद्धा से सिर नहीं झुकता। भौतिक सुखों को त्यागकर जो ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की उपासना में लगे

हैं, वे गुरु श्रद्धेय एवं पूज्य हैं। गुरु के सान्निध्य में हमारा ज्ञान पुष्ट होता है, हम गुरुओं के माध्यम से धर्म के सही स्वरूप को जान सकते हैं। जैन धर्म में धन दौलत की पूजा नहीं त्याग की पूजा है, हमें विचार करना चाहिए कि हम संघ के लिए क्या दे सकते हैं एवं कितना दे सकते हैं। श्री सम्पतराज जी चौधरी दिल्ली ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि ये मुमुक्षु आत्माएँ गुरुत्व एवं देवत्व को प्राप्त करें एवं धर्म के सही स्वरूप को जीवन में धारण करें। उन्होंने अपनी मंगल कामनाएँ गीतिका के माध्यम से प्रस्तुत की। गीतिका के बोल थे-

संयम पथ पर जाने वाले तेरी राह सदा खुशहाल बने।
जंजीर तेरी ये कर्मों की वो मुक्ति की जयमाल बने।।

मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी ने अपनी भावभिव्यक्ति में कहा कि आज संसार में हर व्यक्ति समस्याग्रस्त दृष्टिगोचर होता है। समस्या अथवा दुःख का मूल कामना है एवं दुःख मुक्ति का मार्ग संयम है। संयम वह मशाल है जो जीवन को प्रकाशित कर देती है। निमाज वह पुण्य धरा है, जहाँ आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का संथारापूर्वक महाप्रयाण हुआ। पूज्य श्री कुशलो जी म.सा. की नेश्राय में साध्वियों की दीक्षा निमाज से हुई। आचार्य समता सागर जी म.सा. का संथारा निमाज में हुआ। मेरे जीवन में दादाजी, पिताजी एवं भ्राता श्री तथा परिवारजनों का पूर्ण सहयोग रहा है। पूज्य आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर, साध्वी प्रमुखा जी एवं महासती मण्डल का संयम के पथ पर कदम बढाने में अनन्य उपकार रहा। गीतिका के माध्यम से उन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति इस प्रकार की -

विश्वास दिलाता हूँ सबको संयम पाल दिखाऊँगा

उन्होंने श्रावक-श्राविकाओं को लक्ष्य कर कहा कि उपासकदशांग सूत्र में साधु-साध्वी के माता-पिता श्रावक-श्राविकाओं को बताया गया है। अतः मेरा निवेदन है कि समय-समय पर मार्गदर्शन करते हुए मेरे संयम जीवन को उन्नत बनाने में सहयोग करें। गुरु भगवन्तों के बताए हुए मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हुए उन्होंने कहा-

गुरु ने राह दिखायी, अभी चलना है बाकी।

मुमुक्षु बहिन सुश्री सिन्धु जी कवाड़ ने अपने भाव कविता में प्रस्तुत किए-

अभिनन्दन मेरा नहीं पीपाड़ धरती का।

अभिनन्दन सुमेरु आचार्य भगवन्त का।
अभिनन्दन शान्ति गुरुणी, इन्दुबाला का।
अभिनन्दन दादा-दादी का, माँ-बाप का।
अभिनन्दन राग का नहीं त्याग का है।

अपने संकल्प की अभिव्यक्ति करते हुए उन्होंने कहा कि-

शासन री सेवा में जीना है मरना है।
उन्नति हो शासन की यह हमको करना है।
प्राणों के स्पन्दन में यह भाव समाया है।
मर्यादामय जीवन हमने पाया है।
उत्तम जीवन शासन सुरतरु की छाया है।

मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी के वीर भ्राता श्री महावीर जी कोठारी-निमाज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शूरों के मार्ग संयम पथ को आप स्वीकार कर रहे हैं। आप 22 परीषह को जीतकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में वीरता का परिचय दें। उन्होंने कहा-

आज अभिनन्दन है जितेन्द्र भैया
कल तुम्हें वन्दन है।
सिन्धु दीदी कल तुम्हें वन्दन है।

मुमुक्षु श्री दुलीचन्द जी बोहरा एवं श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा के वीर सुपुत्र श्री राजेश जी बोहरा-चेन्नई ने कहा- "दीक्षा का यह सुन्दर पावन प्रसंग है। माता-पिता के इस प्रकार छोड़कर जाने से मोहग्रस्त होने के कारण मन उदास है, दिल भारी हो रहा है, आपने हमारे लिए क्या नहीं किया। आपके वीरता पूर्ण कदम के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। संयम समाधान का पथ है, आपका पथ मंगलमय बने, कल्याणकारी बने तथा हमें भी आशीर्वाद दें कि हम भी उसी संयम पथ पर आगे बढ सकें।"

वीर भ्राता श्री बुधमल जी बोहरा-चेन्नई ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि "मन भारी होते हुए भी खुशी है कि भाई-भाभी ने सालेचा-बोहरा परिवार का एवं कोसाणा का नाम रोशन किया, मुझे पुत्रवत् स्नेह दिया। रत्नसंघ के प्रति आज मेरे मन में जो दृढता है उसमें पूज्य भ्राता श्री का महनीय योगदान रहा। संघ सेवा में सदा तत्पर रहूँगा तथा संघ का आदेश मान्य करूँगा।" वीरमाता श्रीमती शोभा देवी जी कवाड़ ने कहा- "हे पुत्री! तुम्हारे पुरुषार्थ को धन्य है, तुम्हारी वीरता को, दृढता को धन्य है। संयमपथ पर प्रतिकूलता आए तो कभी घबराना

नहीं, गुरुणी जी की आज्ञा में रहना।" शासन सेवा समिति के सदस्य श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना ने मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी की विनयशीलता, सेवाभावना को अनुकरणीय बताया तथा कहा कि उनको पाकर हमारा संघ धन्य हुआ है।

शासनसेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफना ने कहा कि संयम धारण करने वाले को देवता भी नमस्कार करते हैं। हे मुमुक्षु! संयम-जीवन में निरन्तर आगे बढ़ें तथा रत्नसंघ की एवं परिवार की शोभा को बढ़ायें। संघ संरक्षक मण्डल के सदस्य श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपनी विचाराभिव्यक्ति में इस दीक्षा आयोजन को पीपाड़ का सौभाग्य माना। उन्होंने कहा कि यहाँ जो चार दीक्षाएँ हो रही हैं, उन सबका सम्बन्ध पीपाड़ से है। क्योंकि पीपाड़ निमाज ठिकाने में आता है तथा कोसाणा पीपाड़ के निकट है इसलिए सभी दीक्षाएँ पीपाड़ से सम्बन्ध रखती हैं। जो मुमुक्षु भाई-बहिन दीक्षित हो रहे हैं, वे ज्ञान-दर्शन चारित्र में आगे बढेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। हम श्रावक-श्राविका आज इनकी दीक्षा की अनुमोदना कर रहे हैं तथा आगे इनके ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधना में सहायक बनें।

विशिष्ट अतिथि श्री भगवती सिंह जी ठाकुर-निमाज ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्मभूमि को नमन किया। उन्होंने कहा कि 52 वर्षों के पश्चात् मेरे जीवन में ऐसा शुभ अवसर आया, मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ। मेरे पास आप त्यागियों को देने के लिए कुछ भी नहीं, आप मुझे मार्गदर्शन देते रहें। आप मुमुक्षु अपने गाँव का नाम ऊँचा करें। मुमुक्षु सुश्री वर्षा जी सालेचा, बालोतरा ने 'गुरु को लाखों प्रणाम' भजन प्रस्तुत किया तथा प्यारे जितेन्द्र भैया एवं प्यारी बहिन सिन्धु के संयम जीवन हेतु गीतिका के माध्यम से मंगल कामना की। उन्होंने अपने माता-पिता से एवं दादा-दादी से निवेदन किया कि मेरी दीक्षा का शीघ्र आवेदन करावें।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पीपाड़ की धरा को नमन। पीपाड़ की टीम सशक्त है, जिस पर हमें गौरव है। बोहरा परिवार, कोठारी परिवार व कवाड़ परिवार का त्याग वस्तुतः अनुकरणीय है। आपका संघ-समर्पण इसी प्रकार बढ़ता रहे, मुमुक्षु आत्माएँ अपना कल्याण करती रहे, यही मंगल कामना है। अन्त में संघ महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था के लिए सकल संघ-पीपाड़, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं रूपा सती महिला मण्डल को हार्दिक

धन्यवाद देते हुए आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन स्थानीय संघ मंत्री श्री सुमतिचन्द जी मेहता ने किया।

अभिनिष्क्रमण यात्रा

28 मई को प्रातः 6.45 बजे मुमुक्षु बन्धुओं ने बैंड बाजे के साथ अपने निवास स्थान से दीक्षा-स्थली हेतु अभिनिष्क्रमण किया। मार्ग में उपाध्यायप्रवर, संतवृन्द एवं महासतीवृन्द के दर्शनों का भी लाभ लिया। लगभग 7.30 बजे सभी मुमुक्षुरत्न दीक्षा-स्थली विकास केन्द्र, कोट पहुँचे। अभिनिष्क्रमण यात्रा के अनन्तर दीक्षास्थली जनसमूह से अटी हुई थी। यह एक ऐतिहासिक अवसर था जब रत्नसंघ में एक श्रेष्ठी दम्पती ने सांसारिक सुविधाओं को त्यागकर संयम का मार्ग श्रेष्ठ समझा। चेन्नई के स्वाध्यायी सुश्रावक श्री दुलीचन्द जी बोहरा एवं उनकी अर्द्धांगिनी श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा के बारे में अधिकांश जनसमूह को यह ज्ञात नहीं था कि एक दम्पती की भी दीक्षा यहाँ हो रही है। मात्र दो दीक्षाओं की अनुमोदना करने आए श्रावक-श्राविकाओं को चार दीक्षाओं की अनुमोदना का लाभ प्राप्त हो गया।

दीक्षाभिषेक

प्रारम्भ में परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आशीर्वचन एवं प्रेरक उद्‌बोधन पत्र का मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने अन्तर की भावना से ओजस्वी वाणी के साथ वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन स्थानीय संघ के मंत्री श्री सुमतिचन्द जी मेहता ने कुशलता से किया। महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने उपस्थित दीक्षा सभा को सम्बोधित करते हुए कहा- "जैन धर्म का सार समता है। सत्, चित्त, आनन्द को पाने का उपाय समता या सामायिक है। हम शुभकामना करें कि आजीवन सामायिक को ग्रहण करने वाले ये मुमुक्षु रत्न संसार सागर को शीघ्र पार कर जायें। महासती जी ने कहा चद्‌दर के चार कोने ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप के चार कोने हैं। इस निर्मल चद्‌दर पर कोई दाग नहीं लगे। चारित्र का चोलपट्टा, जीवरक्षा के लिए मुखवस्त्रिका, कर्मरज को झाड़ने के लिए रजोहरण तथा गुरु आज्ञा को स्वीकार करने के लिए पात्र ग्रहण किए जाते हैं। इस प्रकार संयम जीवन का आनन्द आता है। आनन्द की अनुभूति होती है अभिव्यक्ति नहीं। गुरुणी जी श्री शांतिकंवर जी म.सा. की आन्तरिक इच्छा थी

कि कोई दम्पती संयम स्वीकार करे, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की भी यह हार्दिक भावना रही है। आज उनकी यह भावना सफल हुई।'' महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. ने कहा- ''जो प्रतिमाह 10 लाख गायों का दान करता है उससे भी श्रेष्ठ संयम ग्रहण करने वाला साधक स्वीकार किया गया है। यदि संसार सुखों का धाम होता तो चक्रवर्ती राजा क्यों उसका त्याग करते? जाति के जंजाल एवं काया के कारागृह को मिटाना है तो संयम स्वीकार करना होगा।'' महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने कहा - ''संयममय जीवन शाश्वत सुख का कारण है। मोक्षमार्ग में एडमिशन के लिए संयम का सलेक्शन अनिवार्य है तथा वही कॉन्ग्रेच्युलेशन का पात्र होता है। प्रमाद संयम जीवन का प्रबल शत्रु है, अतः प्रमाद से दूर रहना आवश्यक है।'' श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया- ''आचार्य शय्यंभव ने दशवैकालिक सूत्र के प्रथम श्लोक में संयम को मंगल कहा है। संयम का मार्ग सुखों का मार्ग है, आनन्द का मार्ग है। आज अमृतसिद्धि का योग है। चार मुमुक्षु पंचमी के दिन पाँच महाव्रतों को स्वीकार कर रहे हैं।''

चारों मुमुक्षुजन मस्तक मुंडन करा, वेश परिवर्तन कर जयनिनाद के मध्य परमपूज्य उपाध्यायप्रवर की सेवा में अपने स्वप्न को साकार कर संयम जीवन अंगीकार करने की तीव्र उत्कंठा के साथ प्रफुल्लमन पधारे तो हजारों जन अन्तर्हृदय से धन्य-धन्य के भाव अभिव्यक्त करते हुए अभिनन्दन कर सहज ही नतमस्तक हो रहे थे।

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के समक्ष मुमुक्षुजनों के उपस्थित परिजनों, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-पीपाड़ के पदाधिकारियों ने खड़े होकर मुमुक्षुजनों की दीक्षा हेतु आज्ञा प्रदान की। परिजनों एवं संघ की अनुमति प्राप्त कर परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने चतुर्विध संघ की साक्षी में चारों मुमुक्षुओं को कायोत्सर्ग की विधि सम्पन्न कराते हुए करेमि भंते के पाठ से जीवन पर्यन्त के लिये संयम धन प्रदान किया। 'करेमि भंते' के पाठ ने मानों इन मुमुक्षु आत्माओं के समस्त कर्मकलुष को नष्ट कर अजर अमर निराबाध सुख के पथ प्रयाण की सूचना की हो। कुछ क्षणों पूर्व आज्ञा अनुमति लेने वाले, परिजनों को वंदन करने वाले मुमुक्षु इस महनीय प्रतिज्ञा पाठ द्वारा संयम आरोहण कर वंदनीय अभिनन्दनीय श्रद्धेय व पूज्य बन गये। सारा

पंडाल श्रमण भगवान् महावीर स्वामी की जय, परमपूज्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जय, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परमपूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., निर्ग्रन्थ गुरु भगवन्तों, पूज्या महासतीवृन्द एवं जैन धर्म की जय-जयकार के साथ ही नवदीक्षित साधुवृन्द एवं नवदीक्षिता महासतीवृन्द की जय-जयकार से गूँज उठा। इसी समय मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने गीतिका प्रस्तुत की जिसके बोल थे-

''संयम का पाठ पढ़ा है, अभी चलना है बाकी।''

दीक्षा पाठ के अनन्तर उपाध्यायप्रवर ने नवदीक्षित श्री दुलीचन्द जी एवं जितेन्द्र जी का केश-लुंचन किया। महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. ने नवदीक्षित मैनादेवी जी एवं सिन्धु जी का केश लोच किया।

दीक्षाविधि सम्पन्न होने के साथ ही पाण्डाल भगवान् महावीर स्वामी की जय से गूँज उठा। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने कहा कि धन्य है इन मुमुक्षुओं को, इनके त्याग-वैराग्य को। गुरुवार के दिन गुरु-चरणों में समर्पित बने हैं। आज पंचमी का दिन है आज से पाँच समिति का पालन करने का अभियान प्रारम्भ हुआ है। 28 तारीख में (2) राग-द्वेष को जीतने एवं (8) अष्ट-कर्मों के नाश करने की प्रेरणा कर रही है। मई अर्थात् 'मति', हमारी मति संयम में लगी रहे। ज्येष्ठ माह है जो श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा कर रहा है। उन्होंने नवदीक्षितों के प्रति मंगलकामना करते हुए निम्नांकित पंक्तियाँ कहीं-

मैं बनूँ आराधक इस भव में, मेटूँ भव-भव का फेरा।
हो सफल मनोरथ मेरा...॥

इस अवसर पर धर्मनिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री चम्पालाल जी बोथरा-चेन्नई एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री महावीरचन्द जी तातेड़ ने अपने मित्र श्री दुलीचन्द जी बोहरा व उनकी सहधर्मिणी श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा की दीक्षा के पावन प्रसंग पर सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर सच्ची मैत्री का प्रदर्शन किया। वीरभ्राता युवारत्न श्री पदमचन्द जी कोठारी-निमाज ने पाँच वर्ष के लिए शीलव्रत अंगीकार किया।

श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा- ''प्रभु वीर का शासन जयवन्त है। दीक्षा ग्रहण करने वाले धन्यवाद के पात्र हैं तथा मोह त्यागकर दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने वाले भी धन्यवाद के पात्र हैं। आचार्य

भगवन्त की कृपा बरस रही है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की कृपा का फल है कि पीपाड़ में दीक्षा का प्रसंग बना। नवदीक्षित संत-सती गुरु आज्ञा पालन में सदैव तत्पर रहेंगे, ऐसा विश्वास है।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने कहा कि पीपाड़ बड़ा भाग्यशाली है। रत्नसंघ की पीपाड़ शहर पर असीम कृपा रही है। आचार्यप्रवर के साथ उपाध्यायप्रवर की भी असीम कृपा है। पीपाड़ संघ के कार्यकर्ता भी टीम भावना से मिलजुल कर प्रेमपूर्वक कार्य करते हैं। मुमुक्षु आत्माओं ने जिस उत्साह से संयम ग्रहण किया है, वे उस उत्साह को अवश्य बनाए रखेंगे। न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम पीपाड़ की पावनधरा के प्रति कृतज्ञ हैं। इस पावन धरा ने संघ को दो आचार्य दिए हैं। मुमुक्षु श्री दुलीचन्द जी एवं मैनादेवी जी ने सजोड़े संयम अंगीकार कर संघ में नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

संघ कार्याध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने मुमुक्षुओं के जीवन में नये प्रभात की मंगलकामना की तथा प्रेरणा की और कहा कि हम मात्र दर्शक बनकर न रहें यथाशक्ति व्रत-नियम स्वीकार करें।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने नवदीक्षितों के सफल संयम जीवन की मंगल कामना की तथा पीपाड़ संघ, युवक परिषद्, रूपा सती मण्डल को सुन्दर व्यवस्था के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया है।

दीक्षा प्रसंग पर श्री दुलीचन्द जी बोहरा के परिवार ने संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं को महनीय अर्थ सहयोग प्रदान करने की घोषणा की तथा मैनादेवी दुलीचन्द बोहरा ट्रस्ट के गठन की जानकारी दी। उनके लघु भ्राता श्री बुधमल जी बोहरा ने गजेन्द्र निधि का ट्रस्टी बनने हेतु स्वीकृति प्रदान की। कोठारी परिवार एवं कवाड़ परिवार ने दीक्षा के अवसर पर शुभकार्य में महनीय अर्थ सहयोग की घोषणा की।

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति हेतु घोषणाएँ

दीक्षा प्रसंग पर आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति हेतु उत्साह से सहयोग राशि की घोषणाएँ हुईं। लगभग 40 छात्रों की छात्रवृत्ति हेतु विभिन्न श्रावकों ने सहयोग प्रदान करने हेतु भावना व्यक्त की एवं कइयों ने तत्काल सहयोग प्रदान किया।

समाचार-विविधा

संवत् 2066 के स्वीकृत चातुर्मास

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.ने साधु मर्यादा के समस्त आगारों के साथ संवत् 2066 वर्ष 2009 के अब तक निम्नांकित चातुर्मासों की स्वीकृति फरमाई हैं-

1. परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	पालड़ी-अहमदाबाद (गुज.)
2. परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	ब्यावर (जिला-अजमेर) राज.
3. साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा	घोड़ों का चौक-जोधपुर (राज.)
4. सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा. आदि ठाणा	भकरी (जिला-अजमेर) राज.
5. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	नागपुर (महा.)
6. व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा	लक्ष्मीनगर-जोधपुर (राज.)
7. विदुषी महासंती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	कोटा (राज.)
8. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. अदि ठाणा में कुछ सतियाँ जी	पालड़ी-अहमदाबाद (गुज.)
9. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा	जयपुर शहर (राज.)
10. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा	शांतिनगर-बैंगलोर (कर्नाटक)
11. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा	पीपाड़ शहर (जिला-जोधपुर)
12. महासती वृन्द का चातुर्मास (नाम नहीं खोले)	मणिनगर, अहमदाबाद (गुज.)

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नजर में

(1 जून, 2009)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 9	:	अहमदाबाद के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर शाहीबाग में विराजित हैं, आगे नारायणपुरा, साबरमती आदि उपनगरों में धर्मप्रभावना करना संभावित।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	पीपाड़ से विहारकर खेजड़ला पधारे। दिनाँक 4.05.09 को निमाज पधारना संभावित, तदुपरान्त अग्र विहार ब्यावर की ओर।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	चौपड़ा भवन, सरदारपुरा में धर्म प्रभावना कर आगे विभिन्न उपनगरों को फरसना संभावित।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	पीह होते हुए पुष्कर आदि मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसकर भकरी की ओर विहार चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6	:	वर्धा से विहारकर नागपुर की ओर पधार रहे हैं।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	लोनावाला में धर्मप्रभावना कर अग्रविहार मुम्बई की ओर संभावित।
विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	बून्दी में धर्मप्रभावना कर नमाना रोड़ पधारे हैं। अग्रविहार कोटा की ओर चल रहा है।
व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 11	:	अहमदाबाद के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	पीपाड़शहर से विहारकर रणसीगाँव होते हुए निमाज की ओर पधार रहे हैं। तत्पश्चात् मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरस

		कर जयपुर की ओर पधारना संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7	:	बैंगलोर के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 4	:	पीपाड़शहर से विहारकर निमाज की ओर पधार रहे हैं।
व्याख्यात्री महासती श्री इन्दिराप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5	:	अहमदाबाद के विभिन्न उपनगरों को लाभान्वित कर रहे हैं।
महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-4	:	पीपाड़शहर से विहारकर रणसीगाँव होते हुए निमाज की ओर पधार रहे हैं। अग्रविहार जोधपुर की ओर संभावित है।
महासती श्री पुष्पलता जी म.सा. आदि ठाणा-5	:	सिन्धी रेलवे (महा.) में महती धर्म प्रभावना कर रहे हैं। महासतीवृन्द का अग्रविहार नागपुर की ओर संभावित है।

आचार्यप्रवर का अहमदाबाद में पदार्पण

दो सम्प्रदायों के संघनायकों का मधुर मिलन

मार्ग में अनेक संत-सतियों द्वारा दर्शन-वन्दन

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.आदि ठाणा 9 ने बड़ौदा नगर में 27 अप्रेल 2009 को अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर व्रत-प्रत्याख्यान का सोत्साह प्रसाद प्रदान कर अहमदाबाद की ओर कदम बढ़ाए। दिनांक 2 मई को बोरसद में गुजराती बरवाला सम्प्रदाय के गच्छाधिपति श्री सरदारमल जी म.सा. आदि ठाणा 3 का परमपूज्य आचार्यभगवन्त से मधुर मिलन का प्रसंग बना, जो दोनों महापुरुषों के लिए अत्यन्त प्रमोद दायक था। पूर्व परिचय एवं आत्मीय सम्बन्ध के कारण अतीत की घटनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई तथा तत्त्वज्ञान का आदान-प्रदान हुआ। संयोग से इसी दिन वैशाख शुक्ला अष्टमी होने से पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 18वाँ पुण्य-स्मृति दिवस

था। श्रद्धेय तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व-कृतित्व पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला, जिसे गच्छाधिपति श्री सरदारमल जी म.सा. के संतों ने स्वीकारा और सराहा। मुनि श्री ने 37 वर्षों से चले आ रहे पारस्परिक आत्मीय सम्बन्धों का यथा तथ्य विवेचन किया। इसके पश्चात् परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने मार्मिक प्रवचन में 70 वर्षों तक पूज्य आचार्यदेव द्वारा जिनशासन की सेवा करने के अपूर्व आदर्श को चित्रित किया। सिवांची पट्टी के विषमय विरोध को मिटाने, साहित्य के क्षेत्र में जैन धर्म के मौलिक इतिहास सदृश ग्रन्थों की रचना करने, ज्ञान-क्रिया के क्षेत्र में सामायिक-स्वाध्याय, धार्मिक पाठशालाओं की प्रेरणा करने, पर्युषण सेवा, विद्वत्त परिषद् के गठन आदि अनेक जीवन-निर्माणकारी कार्यों का उल्लेख किया। संघ एवं समाज उत्थान के लिए उन महामनीषी द्वारा किए गए महनीय कार्यों का हृदयग्राही दृश्य उपस्थित हुआ। आचार्यप्रवर ने सहृदयता और आत्मीयता का परिचय देते हुए कहा कि- आपश्री से मिलने के लिए दूसरा रास्ता छोड़कर यह मार्ग लिया है। गच्छाधिपति श्री सरदारमल जी म.सा. ने भी अपने प्रवचन में पूज्य गुरु भगवन्त के साथ अतीत में स्थापित आत्मीय सम्बन्धों के विवेचना की तथा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को फरमाया कि- "आप तो सुखसाता पूर्वक पालड़ी में ही नहीं अहमदाबाद में खूब खुले मन से विचरण करो।" उन्होंने फरमाया कि सादड़ी सम्मेलन में आपके गुरुदेव और मेरे गुरुदेव श्री चंपकमुनि जी म.सा. एक ही कमरे में विराजे थे। इस प्रकार की आत्मीय वाणी सबको गद्‌गद् करने वाली थी। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की हृदय की विशालंता एवं असाम्प्रदायिकता का परिचय दक्षिण भारत में विचरण से उन्हें ज्ञात हो गया था। संतों की परस्पर आत्मीय भावना आनन्ददायी रही। दोनों संघनायकों का प्रवचन के पश्चात् भी सायंकाल 4 बजे विचार-विमर्श हुआ तथा प्रवचन समाप्ति के पश्चात् दिन में भी महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि संतों ने सभी प्रकार के विषयों पर लम्बी चर्चा की।

3 मई को आचार्यप्रवर का विहार बोरसद से कावेठा हुआ। यहाँ पर संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा जयपुर से पावन दर्शनार्थ पधारे। 4 मई को दंताली, 5 मई को सुणाव होते हुए 6 मई को आचार्यप्रवर चांगा पधारे। चांगा से 7 मई को विहार कर समोल पधारे जहाँ पर बरवाला सम्प्रदाय की महासती-मण्डल ने आचार्य भगवन्त के दर्शनों का लाभ लिया। 8 मई को वसो कस्बे में विराजने के

पश्चात् 9 मई को विहार कर संघाणा पधारे। यहाँ दरियापुरी सम्प्रदाय की महासती श्री मधुश्री जी म.सा. आदि ठाणा 7 आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन हेतु पधारे। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत ने यहाँ आचार्यप्रवर के दर्शन-वंदन का लाभ लिया। सूरत से श्रीमान् प्रेमचन्द जी चौपड़ा ने पधारकर यहाँ आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत का नियम ग्रहण किया।

10 मई को संघाणा से विहार कर आपश्री का खेड़ा पदार्पण हुआ। रविवार का दिन होने से यहाँ हैदराबाद, अहमदाबाद, हुबली आदि दूरस्थ एवं निकटस्थ क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाएँ दर्शन-वन्दन का लाभ लेने हेतु पधारे। यहाँ पर ज्ञानगच्छ की महासती श्री संजू जी, श्री कमला जी म.सा. आदि ठाणा ने भी आचार्यप्रवर दर्शन लाभ लिया तथा सुखसाता पूछी। 11 मई को खेड़ा से विहार कर आचार्यप्रवर काजीपुर तथा 12 मई को वारेजा पधारे। वारेजा में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा ने दर्शन लाभ प्राप्त किया। शाहीबाग, अहमदाबाद से शिष्ट मण्डल ने भी यहाँ उपस्थित होकर आचार्यप्रवर के चरणों में क्षेत्र को फरसने की विनति रखी। 13 मई को यहाँ से विहार कर असलाली, 14 मई को नारोल क्षेत्र को पावन करते हुए 15 मई को अहमदाबाद के उपनगर मणिनगर में आचार्यप्रवर का पदार्पण हुआ। यहाँ को कोट बाजार निवासी श्री सुरेश जी गांग एवं श्री कन्हैयालाल जी हिरण ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से ग्रहण कर गुरुभक्ति का परिचय दिया। 17 मई को यहाँ विरक्ता सुश्री सिन्धु जी कवाड़ आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुई तब मणिनगर संघ ने उनका स्वागत व बहुमान किया। 19 मई को बरवाला सम्प्रदाय के श्री गौरवमुनि जी म.सा. आचार्यप्रवर की सेवा में पधारे और दर्शनों का लाभ प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने 19 मई तक मणिनगर विराजने की कृपा कर क्षेत्रवासियों को भरपूर धर्म-लाभ प्रदान किया।

20 मई को आचार्यप्रवर मणिनगर स्थानक भवन से विहार कर मणिनगर के ही गुजराती स्थानक में पधारे। 21 मई को यहाँ निम्बोल निवासी श्री पारसमल जी लुणावत ने आजीवन शीलव्रत का नियम ग्रहण किया। यहाँ से 22 मई को विहार कर आचार्यप्रवर सारंगपुर के स्थानक भवन में पधारे, जहाँ ज्ञानगच्छ की महासती श्री निर्मलकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ने दर्शन-वंदन का लाभ लिया तथा सुख-साता की पृच्छा की।

23 मई को सारंगपुर से विहार कर आचार्यप्रवर का शाहीबाग-ओसवाल

भवन में पदार्पण हुआ। रविवार, 24 मई को यहाँ संघ-सदस्यों की विशेष उपस्थिति रहने के साथ धर्म-साधना, त्याग-प्रत्याख्यान आदि धर्म-प्रभावना हुई। यहाँ गुरुभक्त श्री अजितराज जी बिरानी के आकस्मिक निधन पर शोक विह्वल परिवार, पूर्व संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, वर्तमान संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा व अन्य गुरुभक्त गुरु चरणों में दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण हेतु आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में उपस्थित हुए। शाहीबाग से आपश्री संत-मण्डल के साथ नारायणपुरा, साबरवती आदि उपनगरों में धर्मप्रभावना करते हुए चातुर्मासार्थ पालड़ी पधारेंगे।

सम्पर्क सूत्र- *श्री पदमचन्द जी कोठारी, 37-न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद-380002(गुजरात), मोबाइल-09429303088, 09427011111 (श्री चैनराज जी कोठारी), 09428055555 (श्री मृगेश जी कोठारी), 09427711111(श्री संजय जी कोठारी), 09904374734(श्री कन्हैयालाल जी हीरण), 09328150900 (श्री ललित जी गोलेछा), फैक्स-079-22160675*

चातुर्मास स्थल- *श्री एलिजब्रिज स्थानकवासी जैन संघ, जेठा भाई पार्क, बस स्टेण्ड के पास, नूतन नागरिक बैंक के सामने, शांति वन, नारायणनगर रोड, अहमदाबाद (गुजरात), फोन नं. 079-26611448*

उपाध्यायप्रवर का विहार ब्यावर की ओर

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में पीपाड़ शहर में ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी, दिनांक 28 मई को चार मुमुक्षु रत्नों ने भागवती दीक्षा अंगीकार की। मुमुक्षु श्री दुलीचन्द जी बोहरा एवं श्रीमती मैनादेवी जी बोहरा ने सजोड़े दीक्षा अंगीकार कर रत्नसंघ में नया कीर्तिमान स्थापित किया। मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी एवं मुमुक्षु सुश्री सिन्धु जी कवाड़ ने ब्रह्मचर्य अवस्था में संयम की ओर कदम बढ़ाकर वीरता का एवं अपने दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। दीक्षा के प्रसंग पर लगभग 4000 श्रद्धालुओं की उपस्थिति से पीपाड़ की पुण्यधरा के श्रावक-श्राविका प्रमुदित हो उठे। 27 मई को शोभायात्रा एवं अभिनन्दन समारोह के आयोजन में अपार उत्साह देखा गया। वहीं 28 मई को अभिनिष्क्रमण यात्रा एवं दीक्षाभिषेक के प्रसंग पर त्याग-प्रत्याख्यान के प्रति आस्था एवं संकल्प में अभिवृद्धि हुई। दीक्षा के अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 13 की उपस्थिति से सबको दर्शन-वन्दन का

विशेष लाभ मिला।

दीक्षा के सम्पन्न होने के पश्चात् उपाध्यायप्रवर नवदीक्षित संतों के साथ ठाणा 6 से उसी दिन सायंकाल राता उपासरा से विहार कर गए। महासती-मण्डल का भी यहाँ से निमाज की ओर विहार हो गया। बड़ी दीक्षा निमाज में होने की संभावना होने से उपाध्यायप्रवर का एवं महासती-मण्डल का विहार निमाज की ओर हुआ। उपाध्यायप्रवर वहाँ से चातुर्मासार्थ ब्यावर पधारें, ऐसी संभावना है।

सम्पर्क सूत्र- *श्री शांतिलाल जी सुराणा, खजांची गली, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.), फोन नं. 01462-255890, 9414003494, 9414555420*

चातुर्मास स्थल- *जैन स्थानक, पिपलिया बाजार, ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.), फोन नं. 01462-255899*

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति आध्यात्मिक शिक्षण शिविर पुण्यधरा पीपाड़ शहर में सम्पन्न

पुण्यधरा, धर्मधरा पीपाड़ शहर में आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति आध्यात्मिक प्रशिक्षण शिविर दिनाँक 23 मई से 27 मई, 2009 को आयोजित हुआ। शिविर के अन्तर्गत जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, कोटा, खेरली, गंगापुर, हिण्डौन सिटी, कुस्तला, अलीगढ़, पचाला, अलवर, दूणी, पीपाड़, रतकुड़िया, चौथ का बरवाड़ा, समिधि, साक्री (महा.) सिकंदराबाद (उ.प्र.) आदि विविध स्थानों से लगभग 106 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

कक्षाओं का वर्गीकरण उनके शैक्षणिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर चार भागों में किया गया। चारों कक्षाओं को क्रमशः विनय, विवेक, अनुकम्पा एवं आस्था नाम से चिह्नित किया। शिविरार्थियों का परम सौभाग्य रहा कि इस शिविर के दौरान परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

इस शिविर की प्रमुख विशेषता यह रही कि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्तोक, सूत्रादि के अध्ययन-अध्यापन के साथ पूज्य संत-सतीवृन्द एवं अध्यापकों द्वारा अध्यात्म की विशेष प्रेरणाएँ प्राप्त हुईं। परिणामस्वरूप शिविरार्थियों ने जमीकन्द त्याग, व्रत-मर्यादा एवं संघ-सेवा हेतु सदैव तत्पर रहना आदि प्रत्याख्यान व दृढ़

संकल्प धारण किए।

प्रातःकाल महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. ने 'परिवार में व्यवहार', 'व्रतः जीवन की छत' आदि विषयों पर प्रभावात्मक प्रवचन दिया। सायंकाल श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने बालकों को एवं महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. ने बालिकाओं को विरक्ति हेतु विशेष प्रेरणा प्रदान की। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा., महासती श्री विनीत प्रभा जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा. एवं महासती श्री देवांगना जी म.सा. द्वारा कक्षाओं के माध्यम से शिविरार्थियों के अध्यापन में सहयोग प्रदान किया गया।

अनुशासन व समयबद्धता का शिविरार्थियों द्वारा एक आदर्श प्रस्तुत किया गया। छात्रवृत्ति शिविर में नव प्रयोग करते हुए एक सुझाव-पेटी प्रथम दिन से ही शिविर स्थल पर रखी गयी, जिसमें शिविरार्थियों ने अपने सुझावों व अनुभवों को लिखकर पत्र डाले। प्राप्त सुझावों में अध्यापकों की शिक्षण प्रविधि, उनके व्यवहार, अनुशासन संबंधी प्रशंसा, शिविर की समुचित व्यवस्था, अध्ययन-अध्यापन आदि की सराहना के साथ-साथ इस शिविर से स्वयं के जीवन में हुए परिवर्तनों का लेखन शिविराथियों द्वारा किया गया। दोपहर के समय विविध प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिविरार्थियों की रचनात्मक प्रतिभाओं को निखारने का प्रयास किया। शिविरावधि में अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निदेशक श्री अशोकजी कवाड़-चेन्नई, अध्यक्ष श्री कुशलजी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई, कार्याध्यक्ष श्री प्रमोदजी हीरावत-जयपुर, महासचिव श्री महेन्द्रजी सुराणा-जोधपुर, उपाध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली आदि महानुभाव भी समुपस्थित थे।

भोजन के समय मौन एवं शिविरावधि में पूर्ण अनुशासित रहने हेतु संकेत किया गया एवं अपूकाय के जीवों की विराधना न हो तथा स्वावलम्बन का गुण विकसित हो, एतदर्थ शिविरार्थी एवं अध्यापकों द्वारा भोजन उपरान्त अपने बर्तनों को लकड़ी के बुरादे से स्वयं साफ किया गया। अनुशासनहीनता करने पर विशेष दण्डस्वरूप स्टीकर का उपयोग किया गया। तीन स्टीकर लगने पर उस शिविरार्थी को पूर्ण अनुशासनहीन मानकर उसके लिए विशेष कार्रवाई का प्रावधान था, परन्तु उनके सम्यग् व्यवहार एवं समयबद्ध अनुशासन के कारण कोई भी इस श्रेणी में नहीं आया। विशेष प्रतिभा प्रकट करने वाले शिविरार्थियों को स्टार भी प्रदान किये गये।

शिविर के अन्तिम दिन शिविरार्थियों की लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। प्रश्न पत्र में वैकल्पिक प्रश्न दिये गये। सभी शिविराथियों ने परीक्षा में उपस्थित रहकर अच्छे अंक प्राप्त किये। परीक्षोपरान्त सभी शिविरार्थियों ने दीक्षा प्रसंग पर आयोजित मुमुक्षु भाई-बहिनों के वरघोड़े में उपस्थित होकर समवेत स्वर में जयनाद किया तथा दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना कर अपने आपको धन्य-धन्य माना।

समापन समारोह के अवसर पर श्रीमती सीमा जी भंसाली बैंगलोर (पीपाड़) ने बालक-बालिकाओं द्वारा दो नाटकों का प्रभावी प्रस्तुतीकरण कराया, जिसके अन्तर्गत **"DON'T USE ME"** नामक प्ले में शराब, गुटखा, कोल्डड्रिंक्स, पटाखे, छोटे कपड़े, अण्डा आदि त्याज्य वस्तुओं को छोड़ने की प्रेरणा प्रदान की एवं दूसरे नाटक में **अन्तरजातीय विवाह** के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला गया। परिणाम स्वरूप सभी शिविरार्थियों और उपस्थित जनमेदिनी ने सामूहिक संकल्प किया कि हम अन्तरजातीय विवाह नहीं करेंगे एवं त्याज्य वस्तुओं का सेवन भी नहीं करेंगे।

इस शिविर में विशेष अर्थ सहयोगी श्री सम्पतराज जी चौधरी-दिल्ली, श्री रतनराज जी भण्डारी-मुम्बई एवं श्री धनरूपचन्द जी मेहता-बैंगलोर का सम्मान एवं अभिनन्दन किया गया।

सभी शिविरार्थियों एवं अध्यापकों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पीपाड़ शहर द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कुशलचन्द जी गोटेवाला ने श्री जैनरत्न हितैषी श्रावक संघ-पीपाड़शहर, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न श्राविका मंडल एवं बालिका मंडल के साथ-साथ सभी कार्यकर्ताओं को उत्तम व्यवस्था हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

आचार्य श्री हस्ती की 18वीं पुण्यतिथि पर विभिन्न कार्यक्रम

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सभी सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में 2 मई 2009 को इतिहास मार्त्तण्ड, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 18 वीं पुण्य तिथि सामायिक स्वाध्याय दिवस के रूप में दया, संवर, एकासन, आयम्बिल, उपवास, व्रत-नियम एवं 3

सामायिक के साथ स्वाध्याय भवन साहुकारपेट, चेन्नई में सानन्द मनाई गई। इस पावन प्रसंग पर मुमुक्षु बहिन सुश्री सिन्धु कवाड़ का अभिनन्दन तथा धार्मिक एवं नैतिक शिविरों में गत 4 वर्षों से अध्यापन कार्य करने वाले भाई-बहिनों का अभिनन्दन कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। वहाँ उपस्थित संयम की ओर अग्रसर दृढ़ संकल्पी श्री दुलीचन्द जी बोहरा एवं उनकी धर्म सहायिका श्रीमती मैनादेवी बोहरा ने अपनी अभिव्यक्ति में गुरु भगवन्तों का अनन्त-अनन्त उपकार मानते हुए गुरुदेव का गुणानुवाद कर संयम की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर मुमुक्षु बहिन सिन्धु कवाड़ ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति करते हुए कहा कि आप जो अभिनन्दन कर रहे हैं वह मेरा नहीं बल्कि संयम का चारित्र का अभिनन्दन है। गुणानुवाद सभा में श्री अखेचन्द जी भिड़कचा, श्री शांतिलाल जी तातेड़, श्री शिवराज जी खाबिया, श्री रतनलाल जी कोठारी, श्री धर्मीचन्द जी खारिवाल, श्री ज्ञानचन्द जी सुराणा, श्री सुमेरचन्द जी बाघमार, श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, श्री कैलाशमल जी दुग्गड़, सुश्री कविता कोठारी, श्रीमती मधु सुराणा, श्रीमती ताराबाई बाघमार आदि ने भी गद्य-पद्य द्वारा आचार्य श्री के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए गुणगान एवं श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री जवाहरलाल जी बाघमार की मंगल स्तुति से एवं समापन संघमंत्री श्री जवाहरलाल जी कर्णावट की मंगल कामनाओं से हुआ।

- जवाहरलाल कर्णावट, मंत्री

कोलकाता- श्री जैन हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता द्वारा आचार्यश्री हस्ती की 18 वीं पुण्यतिथि 3 मई, 2009 को राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विदुषीरत्ना डॉ. श्रीमती सुषमा जी सिंघवी के विशेष व्याख्यान का आयोजन कर मनाई गई। डॉ. सिंघवी ने "आचार्य हस्ती के चिन्तन की वर्तमान जीवन में सार्थकता" विषय पर मार्मिक उद्‌बोधन दिया। समारोह के अध्यक्ष श्रीमान् रिखबदास जी भंसाली और विशिष्ट अतिथि श्रीमान् सरदारमल जी कांकरिया ने भी भावाञ्जलि दी। समारोह में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड से उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पुरस्कार वितरण किया गया। कार्यक्रम में गुमानसिंह जी पीपाड़ा, महामन्त्री, श्रीमती मन्जु प्रेमजी भण्डारी, उपाध्यक्ष, जैन कान्फ्रेंस और श्री सुमेरचन्द सा मेहता, कार्यवाहक उपाध्यक्ष की महती भूमिका रही।

इन्दौर- आचार्य श्री उमेशमुनि जी म.सा. ने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के 18 वें पुण्य स्मरण दिवस पर आयोजित गुणानुवाद सभा में कहा कि आचार्य श्री

हस्तीमल जी म.सा. ज्ञान एवं क्रिया के संगम थे। उन्होंने अल्पवय में संयम ग्रहण कर आगमों का तल स्पर्शी अध्ययन कर जन-जन को आधि, व्याधि एवं उपाधि के दुःखों से बचाने के लिए सामायिक और स्वाध्याय का राजमार्ग बताया। कार्यक्रम के प्रारंभ में महासती श्री कौशल्या कंवरजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीद्वय पूनम श्री जी एवं सपना श्री जी की बड़ी दीक्षा भी सम्पन्न हुई।

आचार्य श्री के गुणानुवाद करते हुए डॉ. सागरमल जी जैन ने कहा कि जन्म एवं मृत्यु हमारे हाथ में नहीं हैं, परन्तु जन्म एवं मृत्यु के बीच का जीवन हमारे हाथ में है। जो व्यक्ति अपने जीवन को तप, संयम, सेवा, परोपकार आदि सद्गुणों में लगाता है, उन्हीं की जन्म जयंती एवं पुण्यतिथि मनाई जाती है। जैन कान्फ्रेंस प्रांतीय शाखा के अध्यक्ष श्री चंदनमल जी चौरड़िया ने कहा कि आचार्य श्री सरल एवं शान्त स्वभाव के धनी थे। श्री हस्तीमल जी झेलावत ने आचार्य श्री के गुणों का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने जन-जन को सामायिक स्वाध्याय की प्रेरणा दी है। सामायिक का अर्थ है समता भाव की साधना एवं स्वाध्याय का अर्थ है आत्म-चिंतन एवं सद् साहित्य का पठन-पाठन। हमें प्रतिदिन कम से कम एक सामायिक एवं 15 मिनिट सद् साहित्य का स्वाध्याय करना चाहिये। यही आचार्य श्री के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ के महामंत्री श्री अशोक जी मण्डलिक ने वर्ष 1978 के आचार्य श्री के चातुर्मास की स्मृतियों को ताजा करते हुए बताया कि उस समय इन्दौर नगर में 4-5 व्यक्तियों को ही प्रतिक्रमण आता था। आचार्य श्री की प्रेरणा से युवक-युवतियों में धार्मिक, नैतिक एवं चारित्रिक सुसंस्कार प्रदान करने के उद्देश्य से श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला की स्थापना हुई। स्वाध्याय शाला के माध्यम से हजारों भाई-बहिनों ने सामायिक प्रतिक्रमण के साथ सुसंस्कारों को ग्रहण किया है इसी प्रकार संत-सतियाँजी म.सा. के चातुर्मास लाभ से वंचित क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना करवाने हेतु स्वाध्यायी भिजवाने के लिये श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ की स्थापना हुई। दोनों संस्थाएँ विगत 31 वर्षों से निरंतर गतिशील हैं। स्वाध्याय संघ के माध्यम से पर्युषण पर्व पर सेवा देने वाले स्वाध्यायियों में से 11 भाई-बहनों ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की एवं वर्तमान में जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। श्रीमती सूरज बहन बोहरा, श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा, श्री शिखरचंद जी बाफना ने भी आचार्य श्री के गुणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य श्री के बताए हुए सद्गुणों को आचरण में लाना ही उनके प्रति सच्ची

श्रद्धांजलि है। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन श्री जितेन्द्र जी चोपड़ा ने किया।

न्यूयार्क- जैन सेण्टर ऑफ अमेरिका, न्यूयार्क के स्थानक में प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य तिथि पर 24 घण्टे नवकार मन्त्र का अखण्ड जाप किया गया। जाप में हमेशा की तरह अच्छी उपस्थिति रही एवं रात्रि में अधिक लोगों ने जाप में हिस्सा लिया। यहाँ स्थानक में प्रत्येक माह के दूसरे रविवार को सामायिक का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी साधर्मिक बन्धु एवं बहनें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। जाप का आयोजन एवं उसको सफल बनाने का श्रेय श्री सुनील जी डागा, श्री संजय जी बैद, श्री मनीष जी लोढ़ा, श्रीमती रश्मि जी कर्नावट एवं श्रीमती श्वेता जी कोठारी को जाता है। हर माह की सामायिक में श्री विनय बाबूजी कोठारी, श्री अन्नू बाबूजी हीरावत एवं श्रीमती श्वेता जी कोठारी का विशेष योगदान रहता है। *-मुन्ना जी कर्नावट*

जिनवाणी के श्रेष्ठ लेखकों का सम्मान

दीक्षा समारोह की पूर्व संध्या पर आयोजित अभिनन्दन समारोह के अन्तर्गत जिनवाणी के श्रेष्ठ लेखकों को भी सम्मानित किया गया। अप्रेल 2009 की जिनवाणी में प्रकाशित परिणाम के अनुसार दस विद्वान्/विदुषी लेखकों को सम्मान ग्रहण करने हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से आमन्त्रित किया गया था। उनमें से निम्नांकित श्रेष्ठ तीन श्रेष्ठ लेखक/ लेखिकाओं ने संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा के कर-कमलों से पुरस्कार राशि के चैक ग्रहण किये-

1. श्री पदमचन्द जी गाँधी, जयपुर	- युवा स्तम्भ	5100/-
2. डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर	- संवाद स्तम्भ	3100/-
3. डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर	- प्रेरक प्रसंग	2100/-

समस्त पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के उदारमना और विवेकशील अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा साहब के सौजन्य से प्रदान की गई। जो लेखक/लेखिका समारोह में उपस्थित नहीं हो सके, उन्हें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के द्वारा उनके पते पर चेक प्रेषित किये जा रहे हैं।

-प्रेमचन्द जैन, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

मीट प्रोसेसिंग प्लान्ट पर रोक हेतु प्रधानमंत्री को ज्ञापन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री श्री नवरतन जी डागा ने भारत के प्रधानमंत्री को अजमेर के माखूपुरा में 30 करोड़ रुपये खर्च कर लगाये जाने वाले अत्याधुनिक मीट प्रोसेसिंग प्लान्ट को स्थगित करने हेतु ज्ञापन भेजा है। उन्होंने 5 मई, 2009 के राजस्थान पत्रिका के समाचार के आधार पर निवेदन किया है कि करोड़ों, निरपराध जानवरों को अभयदान दें और देश की प्रगति हेतु अन्य आयामों पर विचार करें। महात्मा गाँधी जैसे महापुरुषों के जीवनादर्शों, अहिंसा व शाकाहार प्रेमियों की भावना के विपरीत यह कार्य करना कहाँ तक उचित है? इस सुरम्य संस्कृति पर कलंक के छींटे लगाने से बचायें एवं हिंसा के ताण्डव नृत्य पर अंकुश लगाने का आदेश जारी करें। आपकी सरकार के कार्यकाल में इस प्रकार हिंसक कार्यवाही देश की गौरव गरिमा के अनुरूप नहीं है। जयपुर में श्री पारसमल जी कुचेरिया ने इस प्लाण्ट का विरोध अनशन करके किया तथा राजस्थान के स्वायत्त शासन मंत्री के आश्वासन पर अनशन पूर्ण किया है।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा 19 जुलाई को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा रविवार 19 जुलाई, 2009 को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जा रही है। आवेदन-पत्र जमा कराने की अन्तिम दिनाँक 30 जून 2009 है।

1. परीक्षा के दिन नये रोल नम्बर नहीं दिये जायेंगे। अतः जो भी परीक्षा में भाग लेना चाहें वे निर्धारित समय में आवेदन-पत्र शिक्षण बोर्ड कार्यालय में अवश्य जमा करायें।
2. परीक्षा की तैयारी हेतु जो भी केन्द्र शिक्षण-शिविर आयोजित कराना चाहें वे शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें।
3. कक्षा 10 से 11 के प्राकृत-व्याकरण सम्बन्धी पाठ्यक्रम में संशोधन किया गया है। संशोधित पाठ्यक्रम सम्बन्धित परीक्षार्थियों को भेजा जा चुका है। यदि किसी को प्राप्त न हुआ हो तो वे शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करें।
4. कक्षा 10 से 11 में प्राकृत व्याकरण के पूर्णांक पूर्व में 20 थे। अब संशोधित कर 10 अंक किये गये हैं। पूर्व में प्राकृत पाठ भी 10-10 थे, उन्हें संशोधित

कर 5-5 पाठ किये गये हैं।

5. 4 जनवरी 2009 की परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों के प्रोत्साहन पुरस्कार शीघ्र ही भिजवाने की व्यवस्था की जा रही है।
6. 19 जुलाई 09 की परीक्षा में स्वयं भी भाग लें तथा अन्य भाई-बहिनों को भी परीक्षा में भाग लेने हेतु अवश्य प्रेरित करावें।
7. आवेदन-पत्र, पाठ्यपुस्तकों आदि की आवश्यकता हो तो तुरन्त शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें।
8. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन ऑनलाइन भी किया जा सकता है। इसके लिए वेबसाइट : www.jainratnaboard.com का प्रयोग करावें।
9. शिक्षण बोर्ड से कोई सूचना प्राप्त करनी हो अथवा आप कोई सूचना शिक्षण बोर्ड को भेजना चाहते हो तो E-mail: absjrasboard@ yahoo.com पर भेज सकते हैं।
10. केन्द्राधीक्षकों, निरीक्षकों एवं परीक्षार्थियों से निवेदन है कि वे अपना ई-मेल पता शिक्षण बोर्ड कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करावें ताकि उन्हें समय-समय पर परीक्षा सम्बन्धी नवीनतम जानकारी उपलब्ध करायी जा सके।

-सुशीला बोहरा-संयोजक, फोन : 0291-2630490, 94141-33879

अहिंसात्मक चिकित्सा संबंधी नियमित मार्गदर्शन अब इण्टरनेट पर

अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के विशेषज्ञ एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के संयोजक श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के प्रचार-प्रसार हेतु प्रयासरत हैं। उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'आरोग्य आपका' मानव शरीर के अधिकांश रोगों का इलाज करने में सहायक सिद्ध हुई है। आज के इस बढ़ते आधुनिक युग में चोरडिया जी ने इण्टरनेट के माध्यम से भी अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी एवं विभिन्न रोगों के उपचार की विधि को सभी तक पहुँचाने का लक्ष्य बनाया है। अतः जो भी स्वास्थ्य प्रेमी प्रभावशाली अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के बारे में नियमित जानकारी प्राप्त करना चाहे, वे इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं। इच्छुक महानुभाव अपना ई-मेल पता चोरडिया जी के ई-मेल पर अवश्य मेल करें, ताकि उन्हें नियमित रूप से इन पद्धतियों की जानकारी प्राप्त हो सके। चोरडिया जी के ई-मेल है-

cmchoradia.jodhpur@gmail.com; swachikitsa@therapist.net; drchordia.jodhpur@gmail.com.

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में आयोजित ज्ञान-क्रिया के पर्याय सामायिक-स्वाध्याय विषयक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम-	श्री अनिल कुमार जैन-कोटा	1000 रुपये
द्वितीय-	श्री पारसमल चण्डालिया-ब्यावर	500 रुपये
तृतीय-	सौ. सोनाली मनीष कुमार पींचा-इगतपुरी, नासिक	251 रुपये
चतुर्थ-	श्रीमती ऋतु जैन-ब्यावर	251 रुपये

-डॉ. मंजुला बम्ब, अध्यक्ष, 93142-92229 (मो.)

राजस्थान के स्वाध्यायियों का शिविर जोधपुर में

स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास हो, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष भी पर्वाधिराज पर्युषण में बाहर क्षेत्रों में पधारकर सेवा देने वाले राजस्थान के स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 13 से 18 जून 2009 तक जोधपुर में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में भाग लेने वाले स्वाध्यायी 12 जून को सायंकाल तक शिविर स्थल सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर में पधारें। शिविर में पधारने की स्वीकृति फोन द्वारा स्वाध्याय संघ कार्यालय को अवश्य दें। *-मोहनकौर जैन, सचिव, फोन नं. 01291-2624891, 2633679, 9351590014*

जयपुर में वीतराग-ध्यान शिविर सम्पन्न

जयपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में तृतीय वीतराग ध्यान साधना शिविर 17 मई, 2009 से 23 मई, 2009 तक आचार्य हस्ती भवन, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर में श्री कन्हैयालाल जी लोढा के निर्देशन में आयोजित किया गया, जिसमें 12 श्राविकाओं एवं 9 श्रावकों ने शिविर के पूर्णकाल तक तथा 10 साधकों ने अंशकालीन साधना की, शिविर काल प्रातः 4.30 से सायंकालीन 9.30 तक रहता था। करीब नौ घण्टे तक ध्यान साधना कराई जाती थी। परामर्शदाता श्री डी.आर. मेहता ने तीन दिन शिविर में आंशिक

रूप से भाग लेकर साधकों को प्रोत्साहित किया। 23 मई, 2009 को सायंकाल ध्यान शिविर सम्पन्न हुआ। समापन कार्यक्रम में संघ अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने पधारकर साधकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। आपने ध्यान हेतु आगामी 5 शिविर विभिन्न स्थानों पर लगाने की भावना व्यक्त की जिससे श्रावक-श्राविकाएँ अधिक से अधिक ध्यान साधना का लाभ ले सकें। बोथरा साहब ने माउण्ट आबू, मुम्बई, जलगाँव, चेन्नई, सवाईमाधोपुर आदि स्थानों पर ध्यान शिविर आयोजित करने की भावना व्यक्त की तथा अगला शिविर चातुर्मास काल में परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में लगाने की संभावना बतायी। इस शिविर में श्री इन्दरचन्द जी कर्णावट, श्रीमती शान्ता जी मोदी, श्रीमती सुशीला जी बोहरा, श्री विजयराज जी मेहता, श्री संजय जी अग्रवाल का विशेष सहयोग रहा। डॉ. मंजुला जी बम्ब, श्रीमती लाड़कंवर जी हीरावत, श्रीमती पुष्पा जी जैन ने भी पूर्ण रुचि से भाग लिया। - *श्रीमती शान्ता मोदी-संयोजक*

संक्षिप्त समाचार

हैदराबाद- श्री जैन सेवा संघ, हैदराबाद द्वारा 17 मार्च, 2009 को आयोजित चुनाव प्रक्रिया में निम्न सदस्य निर्वाचित हुए :- अध्यक्ष- निर्मल सिंघवी (C.A.) उपाध्यक्ष- अशोक बरमेचा, सुभाष कुमार साभद्रा, महासचिव- नवरतनमल गुन्देचा, सहमंत्री- अशोक कुमार मूथा, अभयकुमार सुराणा, कोषाध्यक्ष- सुनील बोहरा एव 25 कार्यकारिणी सदस्य चुने गए। *-श्रीपाल देशलहरा*

चेन्नई- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के तत्त्वावधान में 6 वर्ष से 21 वर्ष की आयु तक के बालक-बालिकाओं हेतु 1 से 3 मई तक त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में 230 बालक-बालिकाओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, 67 बोल, कर्म-प्रकृति आदि अनेक थोकड़ों का अध्ययन किया। बालक-बालिकाओं के लिए पाँच कालांशों का वर्गीकरण कर उनको 12 विभागों में विभक्त कर लगभग 25 प्रशिक्षकों द्वारा बच्चों को व्यवस्थित ज्ञानार्जन करवाया गया। सामूहिक कक्षा में अनुकम्पा, सादा जीवन उच्च विचार, नैतिकता, प्रामाणिकता आदि विषय सारगर्भित विवेचन के साथ समझाए गए तथा कई ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कारों का वपन किया गया। शिविर का आयोजन श्रीमती रुक्मादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री उदयराज जी सुराणा के परिवार द्वारा किया गया तथा संचालन श्री विरेन्द्र जी कांकरिया, श्री विनोद जी जैन एवं श्री सुरेश

जी हिंगड़ ने किया। शिविर समापन के दौरान गत चार वर्षों से रविवारीय शिविर में सेवाएँ प्रदान करने वाले प्रशिक्षकों को विशेष सम्मान दिया गया। कार्यक्रम में श्रीमान् पी.एस. सुराणा, श्री गौतमराज जी सुराणा, श्री सुरेश जी चोरड़िया उपस्थित थे। धन्यवाद श्री अशोक ली लोढ़ा ने दिया तथा संचालन श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार ने किया।

लासलगाँव- श्री महावीर जैन विद्यालय वसतीगृह में नये साल के लिये 25 जून 2009 से कक्षा 5 वीं से 10 वीं (माध्यमिक), कक्षा 11 वीं और 12 वीं आर्ट्स, कॉमर्स, साइन्स (उच्च माध्यमिक) के छात्रों को और आई.टी.आई के लिये इलेक्ट्रिशियन एवं फिटर ट्रेड के छात्रों को प्रवेश देना प्रारम्भ कर दिया है। होनहार और आर्थिक स्थिति से कमजोर छात्रों को संस्था की ओर से सहयोग मिलेगा। अतः आप संस्था से प्रवेश फॉर्म लेकर निम्न पते पर आवेदन कर सकते हैं- *ऑनरेरी सेक्रेटरी, श्री महावीर जैन विद्यालय, लासलगाँव, जिला-नाशिक-422306 (महा.) फोन: 02550-266358*

इन्दौर- दिगम्बर जैन जातियों के राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों के पदाधिकारियों तथा विभिन्न जातियों की राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रतिभाओं तथा समाज सेवियों का बृहद् राष्ट्रीय सम्मेलन, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा 18 एवं 19 जुलाई 2009 को दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र, 'सिद्धवरकूट', जिला-खण्डवा (म.प्र.) में आयोजित होगा। इस सम्मेलन में विभिन्न दिगम्बर जैन जातियों के राष्ट्रीय संगठनों के मध्य परस्पर समन्वय, सौहार्द, सूचनाओं के आदान-प्रदान तथा सहयोग हेतु कार्य योजना पर विचार कर उसे अंतिम रूप दिया जायेगा। इस कार्यक्रम हेतु समिति का एक नियमित कार्यालय महावीर ट्रस्ट कार्यालय, 63 महात्मा गांधी मार्ग, गांधी प्रतिमा (रीगल चौराहा), इन्दौर में स्थापित किया गया है। सम्पर्क सूत्र:- *श्री हँसमुख जैन गांधी-संयोजक, फोन नं. 0731-2700109, 09302103513, हुकमचन्द जैन 'शाहबजाज', फोन : 0731-3260550 मो. 09329544806*

बैंगलोर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर की कार्यकारिणी सभा में बैंगलोर सहित सम्पूर्ण कर्नाटक प्रदेश के रत्नसंघ के बन्धुओं की निर्देशिका बनाने हेतु निर्णय किया गया है। इस हेतु आवेदन पत्र दो रंगीन पासपोर्ट आकार के फोटोग्राफ के साथ भेजने की कृपा करें। इसके द्वारा हम सब गुरु भाई-बहिन एक दूसरे को पहचानेंगे, सम्पर्क में आयेंगे तथा भाईचारा बढ़ाकर संघ-सेवा में तत्पर

रह सकेंगे। - दशरथमल चोरडिया, संयोजक, *Chordia Finance corporation, 11/1, king street, Richmond Town, Banglore-560025, Phone : 93417-18891, 22213135*

उदयपुर- श्री गणेश जैन छात्रावास, पद्मिनी मार्ग, राणा प्रतापनगर, सुन्दरवास, उदयपुर के छात्रावास में प्रवेशार्थी छात्र 30 जून के पूर्व अपना आवेदन-पत्र जमा करा सकते हैं। छात्रावास में भोजन, बुक बैंक आदि की समुचित व्यवस्था है। सम्पर्क करें- **धर्मचन्द ढाबरिया**, गृहपति, फोन-0294-2494375

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा वर्ष में दो बार महिलाओं हेतु धार्मिक एवं नैतिक शिविर का आयोजन किया जाता है। इसी कड़ी में इस वर्ष 18.06.2009 से 24.06.2009 तक ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का आयोजन घोड़ों का चौक पौषधशाला में रखा गया है जिसमें 20 वर्ष से अधिक वय वाली महिलाएँ भाग ले सकेंगी। शिविर का समय दोपहर 12.00 से 4.00 बजे तक रहेगा। शिविर में पहली से दसवीं कक्षा तक बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिविर के आवेदन-पत्र सभी शाखाओं से प्राप्त किये जा सकेंगे। *-शशि टाटिया-सचिव*

जयपुर- डॉ. गुलाबसिंह जी दरडा रोटरी इण्टरनेशनल के प्रकल्प रोटरी ईस्ट में निदेशक व पर्यावरण प्रधान बनाए गए तथा उन्होंने आचार्य श्री द्वारा प्रेरित व्यसन-मुक्ति के संदेश को अपनाने पर बल दिया।

बधाई/चुनाव

सवाईमाधोपुर- श्री जैन सिद्धांत शिक्षण संस्थान के पूर्व छात्र श्री लोकेश जी जैन

पुत्र श्री ज्ञानचन्द जी जैन निवासी सवाईमाधोपुर ने भारतीय प्रशासनिक सेवा **(IAS)** 2008 की वरीयता सूची में 416 वां स्थान प्रथम प्रयास में प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। श्री लोकेश जैन की 10 वीं तक की स्कूल शिक्षा सवाई माधोपुर में हुई। 11 वीं से बी.ए. तक का अध्ययन श्री जैन सिद्धांत शिक्षण संस्थान, जयपुर में रहकर किया। वहाँ अध्ययनरत रहते हुए धार्मिक अध्ययन में भी पूर्ण मनोयोग से संलग्न रहे। शिविर में अध्यापन कार्य, संत-सतियों के दर्शन एवं आगम-थोकडों का अध्ययन तथा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाएँ (12वीं तक) आपके अध्ययन काल में रुचि के क्षेत्र रहे। राजनीतिक विज्ञान में एम.ए.

करने के बाद **NET-JRF** भी उत्तीर्ण की। उन्होंने दिल्ली में **JITO** हॉस्टल में रहकर देश की सर्वोच्च सेवा में सफलता प्राप्त की। वे अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरु-भगवन्तों के आशीर्वाद तथा लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण को देते हैं। उनकी इस अप्रतिम सफलता को हार्दिक बधाई। दीक्षा प्रसंग पर आयोजित अभिनन्दन समारोह में 27 मई, 2009 को पीपाड़ में आपका न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया ने अपने कर कमलों से माला एवं शॉल अर्पित कर हार्दिक सम्मान किया।

वाराणसी- प्रोफेसर डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', जैन दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, को उनके समग्र साहित्यिक योगदान के लिए नई दिल्ली के श्रीराम सेन्टर सभागार में दिनाँक 26.04.2009 को आयोजित समारोह में अहिंसा इण्टरनेशनल डिप्टीमल आदीश्वर लाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें इकतीस हजार रुपये की पुरस्कार राशि का चेक, अङ्गवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व प्रो0 जैन को महावीर पुरस्कार, श्रुतसंवर्धन पुरस्कार, गोम्मटेश्वर विद्यापीठ पुरस्कार, चम्पालाल साहित्य पुरस्कार, आचार्य श्री ज्ञानसागर पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान का विशिष्ट पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है। आप अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष रहे हैं।

सवाईमाधोपुर- श्री सुरेश जी जैन,कुस्तला पोरवाल संघ के मंत्री पद पर भारी बहुमत के साथ निर्वाचित हुए हैं। वर्तमान में आप रत्न संघ की कार्यकारिणी में पोरवाल संभाग के क्षेत्रीय प्रधान भी हैं एवं लगभग 20 सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं के पदों को सुशोभित कर रहे हैं।

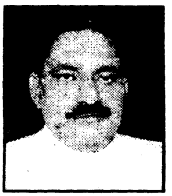

मुम्बई- श्री हर्ष जैन सुपुत्र श्रीमती अंजु-शांतिलाल जी बोहरा ने श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. की प्रेरणा से डेढ़ महीने में प्रतिक्रमण कंठस्थ किया है। मुम्बई के माहौल में 10 वर्ष की वय में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर उन्होंने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

10वीं बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ

1. सुश्री शिखा जैन (कांकरिया) सुपुत्री श्री संजय जी कांकरिया, जोधपुर (दौहित्री श्री नरपतराज जी चौपड़ा) ने 92.40 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

2. श्री अभिनव लोढ़ा सुपुत्र श्रीमती महिमा एवं श्री कमल जी लोढ़ा-जयपुर ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।
3. सुश्री राशिका सुराणा सुपुत्री श्रीमती अलका एवं श्री राकेश जी सुराणा, ब्यावर ने 92 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

श्रद्धाञ्जलि

जयपुर- अनन्य गुरु भक्त, समर्पित श्रद्धानिष्ठ, आदर्श श्रमणोपासक श्रद्धेय श्री

अजीतकुमार जी बिरानी (सुपुत्र जिला-अजमेर में विजयनगर के श्रेष्ठिवर्य व्हाइट साहब के उपनाम से प्रसिद्ध श्रीमान् रतनलाल जी साहब बिरानी) का 10 मई, 2009 को स्वर्गगमन हो गया। आपका व्यक्तित्व धर्मनिष्ठा से ओतप्रोत था। आपने विजयनगर से जयपुर आकर स्व पुरुषार्थ से देश-विदेश में व्यापारिक प्रतिष्ठा अर्जित की वहीं गुरु के प्रति समर्पण एवं संघ-सेवा में वे बेजोड़ रहे।

भगवतीसूत्र शतक दो उद्देशक 5 में आदर्श श्रमणोपासक के गुणों का जो उल्लेख किया गया है उनमें से अनेक गुण आपमें विद्यमान थे। आप आपत्ति में भी देवादिगणों की सहायता से निरपेक्ष थे। "स्वकृत स्वयं ही को भोगना होगा", अतः सम्यक्त्व की रक्षा के लिये दूसरों की सहायता नहीं लेते थे। घर में कोई सत्पुरुष पदार्पण करे तो उन्हें अधिक प्रसन्नता होती थी।

श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं रत्न संघ के प्रति वे सर्वतोभावेन समर्पित थे। यह कोई खास बात नहीं, किन्तु वे भक्त धन्य होते हैं जिनके मन में गुरु का निवास होता है। उससे भी ज्यादा वह भक्त धन्य होता है जिसका निवास गुरु के मन में होता है। ऐसे गुरु के मन में स्थान बनाने वाले भक्त आप थे। वे गुरु-वचनों को भगवद्वचन समझकर स्वीकार करने वाले विरले श्रावकरत्न थे। मुनि-मण्डल के दर्शन, प्रवचन-श्रवण, वन्दन-नमन, विनय-भक्ति, पर्युपासना आदि को महाकल्याणकारी समझकर वहाँ पहुँचने वाले अद्वितीय भक्त थे। अन्य परम्परा के सन्त-सतियों की भी आपने विनय-भक्ति एवं पर्युपासना की थी।

स्वाध्याय रसिक श्री बिरानी सा. ने वेदना के क्षणों में धैर्य-समता का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह उनकी जिनशासन के प्रति रसिकता एवं दृढनिष्ठा को प्रकट करती है। वे आचार्यप्रवर को निवेदन करते-"अन्तिम समय जागरूकता

बनी रहे, यह आशीर्वाद प्रदान करावें।''

रत्नसंघ के दीक्षा-समिति के संयोजक का कार्य सम्पूर्ण मनोयोग, सूझ-बूझ एवं तन-मन-धन से जिस प्रकार निभाया था वह सबके लिये प्रेरणास्पद है। आपके वियोग से संघ की अपूरणीय क्षति हुई है। आप अपने पीछे धर्मपत्नी मधु जी बिरानी (सुपुत्री आदर्श श्रमणोपासक, परमगुरुभक्त श्रेष्ठिवर्य श्री उगरसिंहजी सा. बोथरा तथा सम्प्रति अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के माननीय संघाध्यक्ष श्रीमान् सुमेरसिंह जी सा. बोथरा की अनुजा) पुत्र अमित एवं संस्कारनिष्ठ दो पुत्रियों एवं पोते-पोती, दोहिते-दौहित्री सहित खुशहाल परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- श्रावकरत्न श्री आसूलाल जी संचेती का 86 वर्ष की वय में 8 मई 2009

को देहावसान हो गया। आप उत्तर रेलवे के मुख्य लेखाधिकारी एवं वित्तीय सलाहकार पद से सेवानिवृत्त हुए तथा राजस्थान विद्युत मण्डल के निदेशक रहे। बचपन से ही आंपकी स्वाध्याय के प्रति रुचि थी। आप पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की विशेष कृपा दृष्टि रही। आचार्य श्री की प्रेरणा से ही श्री संचेती जी ने अंग्रेजी में FIRST STEPS TO JAINISM नामक पुस्तक लिखी, जो देश और विदेश में बहुत लोकप्रिय है। मेघदूत का 14 भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित करने से आपका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस में दर्ज किया गया। अजमेर में आचार्यप्रवर से आपने उत्कोच न लेने का नियम स्वीकार किया था। आप अभी भी नियमित रूप से स्वाध्याय एवं लेखन कार्य में प्रवृत्त थे। जिनवाणी में उनके यथासमय लेख प्रकाशित हुए हैं। आप अपने पीछे पुत्र डॉ. सूरजप्रकाश जी, चन्द्रप्रकाश जी, जयप्रकाश जी संचेती एवं भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

सतारा- प्राकृत-पालि के विद्वान्, स्वतंत्रता सेनानी श्री माधवराव जी रणदिवे का

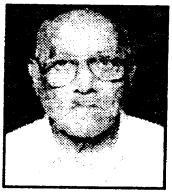

24 अप्रेल, 2009 को 87 वर्ष की वय में निधन हो गया। आप एच.एस.सी. बोर्ड-पुणे, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर, पुणे विद्यापीठ-औरंगाबाद विद्यापीठ, मुम्बई नागपुर विद्यापीठ तथा अर्द्धमागधी प्राकृत-पालि भाषा मण्डल आदि संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आप गुणसागर सूरि प्राकृत विद्यापीठ के कुलगुरु थे। आचार्य कुंदकुंद भारती-दिल्ली, जैन सभा-सांगली संस्थाओं द्वारा सम्मानित किये गये थे। आपकी प्राकृत रचनाएँ 'स्वाध्याय-शिक्षा' पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं।

जोधपुर- श्रावकरत्न, सेवाभावी श्री नरेन्द्र जी मेहता का 12 मई,2009 को आकस्मिक देहावसान हो गया। आपकी आचार्यश्री एवं उपाध्यायप्रवर के प्रति अगाध भक्ति थी। आपने बड़ोदरा से अहमदाबाद की ओर विहार करते हुए आचार्य श्री की विहार सेवाओं का लाभ लिया। आप सरल, सहिष्णु और उदार प्रवृत्ति के थे।

चौथ का बरवाड़ा- श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी जैन का 82 वर्ष की उम्र

में संलेखना संथारा पूर्वक 24 अप्रेल, 2009 को देवलोक गमन हो गया। आपने लगभग 25 वर्ष तक प्रत्येक रविवार आयम्बिल तप की आराधना की थी। आप विगत 30 वर्षों से आजीवन चौविहार, चार स्कंध का त्याग व सजोड़े शील व्रत का पालन कर रहे थे। आपके सांसारिक दोहिते श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. रत्नसंघ में दीक्षित होकर जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं।

मैसूर- सरलमना, सुश्राविका श्रीमती शान्ता बाई भंसाली पटवा धर्मपत्नी स्व. श्री

नेमीचन्द जी भंसाली पटवा (जैतारण वाले) का 8 अप्रैल, 2009 को निधन हो गया। आप गत 3 वर्षों से बीमार थीं। आप मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल महिला थीं। आप अपने पीछे भरा पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

विल्लीपुरम- अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ, सेवाभावी, सुश्रावक श्री गौतमचन्द

जी बम्ब सुपुत्र स्व. श्री किशनलालजी बम्ब का 19 अप्रेल, 2009 को 63 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आप अग्रणी श्रावकों में से थे। आपने श्री एस.एस. जैन संघ, विल्लीपुरम में रहकर संघ व समाज को अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। सुश्रावक अपने पीछे भरा पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. गौतम राज जी सिंघवी का 90 वर्ष की वय

में 22 मार्च, 2009 को हृदयाघात से निधन हो गया। आपका जीवन धार्मिक भावना से ओत-प्रोत था। नित्य प्रातः सामायिक, प्रतिक्रमण व स्वाध्याय के साथ यथासामर्थ्य तपाराधना में संलग्न रहते थे। सुबह 10.30 बजे से पहले अन्न जल ग्रहण नहीं करते थे। 90 वर्ष की आयु होते हुए भी प्रतिदिन 10-12 घण्टे तक

मरीजों को देखा करते थे। उन्होंने एक चिकित्सक के रूप में 60 वर्षों की अवधि में अनेक असाध्य रोगों को ठीक किया, जिसके कारण वे भारत सरकार व राजस्थान सरकार के द्वारा समय-समय पर सम्मानित हुए। पर्युषण पर्व में वे साधु संतों के साथ आठ दिन पौषध में रहते थे। आपने अपने जीवन काल में कई बार अठाइयाँ, बेले, तेले किये। आप पर आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का सदैव आशीर्वाद रहा, जिसके कारण डॉ. सिंघवी ने अपने जीवन काल में स्वाध्याय, सामायिक व माला जाप कभी नहीं छोड़ा।

बाड़मेर- सुश्रावक श्रीमान् मोहनलाल जी चौपड़ा का 25 अप्रेल, 2009 को देहावसान हो गया। सुश्रावक श्री चौपड़ा सा. की आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। साथ ही साम्प्रदायिक भावना से परे धर्माराधना-तपाराधना एवं संघ-सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे। अभी उपाध्यायप्रवर के शेखेकाल विचरण के समय आपने ग्राम रावतसर में संघ-सेवा का अपूर्व लाभ लिया। आपने सर्वतोभावेन समर्पित होकर दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण आदि का लाभ लेकर भक्ति का परिचय दिया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

बैंगलोर- सुश्रावक श्री भीकमचन्द जी गादिया का 15 मई, 2009 को 87 वर्ष की वय में संलेखना संथारा सहित स्वर्गवास हो गया। आप 35 वर्षों से चारों स्कन्धों का पालन कर रहे थे। आपको जैन तत्त्व, थोकड़ों एवं शास्त्रों की विशेष जानकारी थी। आपके अध्यक्ष-काल में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का शूले, बैंगलोर में ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न हुआ। आप अ.भा. श्री जैन श्रावक संघ के परामर्शदाता हैं तथा श्री सुधर्म जैन पौषधशाला, बैंगलोर के ट्रस्टी हैं। सहनशीलता, वात्सल्य, व्यवहारकुशलता, निःस्वार्थ सेवाभावना आदि अनेक गुणों से सम्पन्न थे। आपने महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण कर पंडित मरण का वरण किया।

राजानांदगाँव (छ.ग.)- दृढ़धर्मी, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मोहनी देवी जी कांकरिया धर्मपत्नी श्री रतनलाल जी कांकरिया का 68 वर्ष की वय में 2 मई, 2009 को सागारी संथारे एवं नवकार मंत्र के जाप के साथ देहावसान हो गया। आपका जन्म भोपालगढ़ में हुआ था। आचार्य श्री हस्ती के संदेश को आत्मसात्

करते हुए आप पूरे जीवनभर सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती रहीं। आपके रात्रिचौविहार त्याग, जमीकंद का त्याग आदि कई प्रकार के व्रत प्रत्याख्यान किए हुए थे। रत्नसंघ में महासती शान्तिकंवर जी म.सा. आपकी सांसारिक जेठानी थी तथा आपकी पुत्री ऋजुप्रज्ञाजी म.सा. ज्ञानगच्छ में श्री सुमतिकंवर जी म.सा. के नेश्राय में विगत 12 वर्षों से जिनशासन की प्रभावना कर रही है।

रायचूर- सुश्रावक श्री गजराज जी बोकड़िया का 22 मई, 2009 को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में वक्ताओं ने उन्हें उच्च मनोबली, कुशल स्वाध्यायी, प्रखरवक्ता, सत्यपक्ष का हिमायती, जिनशासन की रौनक आदि विशेषणों से अलंकृत किया।

जोधपुर- श्रावकरत्न श्री बादलचन्द जी छाजेड़ का 18 मई 2009 को देहावसान

हो गया। सुश्रावक श्री छाजेड़ सा. की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, सहिष्णुता, उदारता आदि गुणों से ओतप्रोत था। आप व आपका सम्पूर्ण परिवार संघ-सेवा, संत-सतीवृन्द सेवा के साथ-साथ धर्माराधना में सदैव तत्पर है। संघ द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय भागीदारी रहती थी।

जोधपुर- श्राविकारत्न श्रीमती प्रसन्नकंवर जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री मानराज जी

मेहता का दिनाँक 24 मई, 2009 को देहावसान हो गया। आपकी श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के प्रति आगाध भक्ति और श्रद्धा थी। श्रीमती मेहता का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आपका अधिकांश समय सामायिक-स्वाध्याय, साधना-आराधना में व्यतीत होता था। आपने नौ उपवास और तेले की तपस्याएँ की हैं।आप अपने पीछे पुत्र श्री सुनील जी मेहता, प्रवीण जी मेहता एवं भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त वीर भ्राता श्री जवाहरलाल जी आबड़ का 11 मई 2009

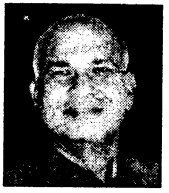

को रात्रि में 64 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आचार्य हस्ती-हीराचन्द्र एवं उपाध्याय मानचन्द्रजी के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आप व्रत-नियमों का पूर्ण पालन करते थे। रत्नसंघ में दीक्षित मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के सांसारिक

पक्ष में आप भ्राता थे। आपके सुपुत्र श्री पुखराज जी आबड़ श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्यकर्त्ता हैं। आपकी दो सुपुत्रियाँ श्रीमती मंजु जी-उगमराज जी कोठारी-रायपुर एवं श्रीमती अन्जु जी-सुरेश जी सुराणा (श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. के सांसारिक पक्ष में पुत्र) हैं। आपकी पुण्यस्मृति में परिवारजनों ने 51,000/- रुपये शुभकार्य में देने की घोषणा की है।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी, वयोवृद्ध सुश्रावक श्री राजमल जी

ओस्तवाल (मूल निवासी भोपालगढ़) का 87 वर्ष की वय में 20 मई, 2009 को पीपाड़ में स्वर्गवास हो गया। आप नित्य 5-7 सामायिक करते थे। आपने 500 से अधिक स्तवन रचे तथा 50 पर्युषण पर्वों पर अपनी महनीय सेवाएँ स्वाध्यायी के रूप में दीं। आप श्री जैन रत्न विद्यालय एवं छात्रावास-भोपालगढ़ के गृहपति एवं अध्यापक रहे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति समर्पित श्रावक ने पिछले 40 वर्षों से रात्रि-भोजन त्याग का नियम ले रखा था। गीत-संगीत में आपकी गहरी रुचि थी, आप स्पष्ट वक्ता एवं अनुभवी श्रावक थे। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल बैंगलोर में मोक्षद्वार पत्रिका के सम्पादक हैं। आपके सुपुत्र श्री नवरतनचन्द जी, अजितराज जी, डॉ. राकेश जी, मनीषकुमार जी सभी संस्कारशील एवं धर्मनिष्ठ हैं।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ दृढ़धर्मी सुश्रावकरत्न श्री मूलचन्द जी ओस्तवाल का 85 वर्ष

की उम्र में दिनांक 14 मई 2009 को देहावसान हो गया। आप संत-सतीवृन्द की सेवा के साथ-साथ धर्माराधना में एवं तपस्या में तत्पर रहते थे। आपकी पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल के काकाजी थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

5000/- विदेश में आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

134-F Mr. (dr.) Narpat S. Jain Ji, Nj-07624 (U.S.A.)
135-F Mr. (dr.) Subhash Ji Jain, Alpine, Nj 07620 (U.S.A)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

11971 श्री पारसमल जी कुचेरिया, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)
11972 Shri Rajesh Kumar ji Jangda, Koppal (Karnataka)
11973 श्री पारस कुमार जी वाणावत, आदित्य प्लाजा, चौराया रोड़, ऋषभदेव, उदयपुर (राजस्थान)
11974 श्री पुनीत कुमार जी संचेती, डावरा, वाया–लवेरा भावडी, जिला–जोधपुर (राजस्थान)
11975 श्री कन्हैयालाल जी मालू, रमेश मित्रा रोड, भवानीपुर, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
11976 श्री कमल जी जैन, निर्मल पार्क, डॉ. बी.ए. रोड, बाईकला (ईस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
11977 श्री पीयूष जी सुराणा, रामदेव चौक के पास, लुंकडों की घाटी, नवचौकिया, जोधपुर (राज.)
11978 श्री संजय जी भंडारी, जालोरिया का बास, नागोरी गेट के अन्दर, जोधपुर (राजस्थान)
11979 श्री गोपालसिंह जी कोठारी, 6 ए 12, महावीर नगर-III, कोटा (राजस्थान)
11980 श्री खेमचन्द जी चोरड़िया, झाँसी चौक, गणपति पेठ, सांगली (महाराष्ट्र)
11981 श्रीमती वन्दना जी रूणवाल, शांतिनगर, हरमाला रोड, रतलाम (मध्यप्रदेश)
11982 श्री चम्पालाल जी खिंवसरा, जैन रेडिमेड स्टोर्स, स्टेशन रोड, दोंडाईचा, धुले (महाराष्ट्र)
11983 श्री आनंद जी बम्ब (जैन), ताहाराबाद रोड, सटाणा, नाशिक (महाराष्ट्र)
11993 Shri D. Mitthalal ji Toderwal, Hyderabad (A.P.)
11994 Shri Naveen ji Natha, Bowenpalli, Secundrabad (A.P.)
11995 Shri Dinesh Kumar ji Gandhi, Balal Nagar, Hyderabad (A.P.)
11996 Mahaveer Markets, West Marredpally, Secundrabad (A.P.)
11997 Shri Ugamraj ji Gandhi, Kamlapuri Colony, Hyderabad (A.P.)
11998 Shri Devraj ji Kothari, Rasoolpura, Secundrabad (A.P.)
11999 Shri Ajay Kumar ji Kothari, King Kothi, Hyderabad (A.P.)
12000 Shri Mahveer Chand ji Parakh, Hyderabad (A.P.)
12001 Shri Shermal ji Gandhi, Batakuma Kunta, Hyderabad(A.P.)
12002 Shri Navratanmal ji Mootha, Fateh Nagar, Hyderabad (A.P.)
12003 Shri Ashok Kumar ji Gandhi, X Road, Hyderabad (A.P.)
12004 Shri Amichand Jhota, Near Masjeed, Hyderabad (A.P.)
12005 Shri GyanChand ji Merlecha, Station Road,Secundrabad (A.P.)
12006 Shri Naresh Kumar ji Vedi, Rani Gunj, Secundrabad (A.P.)
12007 Shri Ashok Kumar ji Rampuria, Secundrabad (A.P.)
12008 Shri (Dr.) Rajenra ji Jain, Bangalore (Karnataka)
12009 Shri Chaganlal ji Sri Srimal, Bangalore (Karnataka)
12022 श्री रतनलाल जी जैन, रेलवे डी.एस.कॉलोनी, मेडिकल कॉलेज के पास, जोधपुर (राजस्थान)
12026 श्री सुधीर कुमार जी डागा, बी.जी. खेर मार्ग, वर्ली नाका, मुम्बई (महाराष्ट्र)
12028 Shri Padam Chand ji Oswal, Canning Street, Kolkata (W.B.)
12029 Shri Bimal Chand ji Jain, Canning Street, Kolkata (W.B.)

12030 श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन, दीप्ति पर्ल, जे.वी. नगर, अन्धेरी (ईस्ट), मुम्बई (महा.)
12031 श्री उम्मेदमल जी जैन, 4-बी-7, महावीर नगर-तृतीय, कोटा (राजस्थान)
12032 श्री कांतिलाल जी बोथरा, पोहना, तालुका–हिंगणघाट, जिला–वर्धा (महाराष्ट्र)

250/- श्री व्ही. पारस भय्या चोरड़िया, उज्जैन के सौजन्य से

11964 श्री प्रेमचन्द जी जैन, अणु प्रताप कॉलोनी, भाभानगर, वाया कोटा, रावतभाटा (राज.)
11965 श्री माँगीलाल जी कटारिया, सदर बाजार, रावटी, रतलाम (मध्यप्रदेश)
11966 श्री संजय कुमार जी कटारिया, सदर बाजार, कन्या शाला के सामने, रावटी, रतलाम (म.प्र.)
11967 श्री विनोद कुमार जी पीपाड़ा, खोब दरवाजा, रामद्वारे के पास, बड़नगर, उज्जैन (म.प्रदेश)
11968 श्री मनोज कुमार जी पीतलिया, अम्बा माता स्कीम, उदयपुर (राजस्थान)
11969 श्री प्रकाशचन्द जी पारख, धनारीकलॉ, तहसील–बावडी, जिला–जोधपुर (राजस्थान)
11970 श्री जगदीश प्रसाद जी जैन, रूनकता, जिला–आगरा (उत्तरप्रदेश)
11984 श्री मोहनलाल जी खटोड, वर्धमान, प्लॉट नं. 5, गली नं. 6, राम नगर, अजमेर (राजस्थान)
11985 श्री राजेन्द्र कुमार जी बाफणा, 8, परवाना नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
11986 श्री नगीन चन्द जी दलाल, 86, सुभाष नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
11987 श्री बी. एल. जैन जी, एम.आई. जी., ए 18/3, वेद नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
11988 श्री शैलेन्द्र कुमार जी बाफणा, 85, संत नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
11989 श्री शालिभद्रजी लोढ़ा, चन्दनबाला जैन स्थानक, नीम चौक, नया पुरा, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
11990 श्री विजयराज जी गादिया (जैन), कोजी मेंशन, चौथा माला, गिरणी पार्क, पुणे (महाराष्ट्र)
11991 श्री जयेश कुमार जी दुगड़, द्वारा श्री सतीश कुमार जी दुगड़, खैरादीवाडा, नागौर (राजस्थान)
11992 श्री विजयकुमारजी जैन, द्वारा : श्री समर्थमल जी जैन (छै गाँव वाले), खाचरोद (मध्यप्रदेश)
12010 श्री नीरज कुमार जी गाँधी, सदर बाजार, रावटी, जिला–रतलाम (मध्यप्रदेश)
12011 श्री पारसमल जी तातेड़, बोहरवाडी बाजार के अन्दर, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12012 श्री पारसमल जी मोदी, अपर्णा हॉउसिंग सोसायटी, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12013 श्री जयंतीलाल जी दूधेडिया, पेठ गल्ली, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12014 सौ. अलका बाई जी भटेवरा, उषा ऑटोमोबॉइल्स, शांति नगर, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12015 श्री दिलीप कुमार जी चोरड़िया, मार्केट यार्ड, गाला नं. 4, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12016 श्री सुभाषचंद जी बाफणा, बी 342, शांतीनगर, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12017 श्री पवन कुमार जी सांखला, जे.ई. 1/37/2, रायगढ़ चौक, सिडको 4, नाशिक (महाराष्ट्र)
12018 श्री धरमचन्द जी ओस्तवाल, श्री मतोबा महाराज मार्ग, नैताले, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12019 श्री बाबूलाल जी सुराणा, भगवान महावीर मार्ग, पेठ गल्ली, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12020 श्री बाबुलाल जी चोरड़िया, पेठ गल्ली, निफाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)
12021 श्री अशोक कुमार जी खारीवाल, कोर्ट का मौहल्ला, सोजतसिटी, पाली (राजस्थान)
12023 डॉ. लोकेशजी मेहता,कमला नेहरू नगर द्वितीय,अरोड़ा पार्क के सामने, जोधपुर (राजस्थान)
12024 श्री राकेश कुमार जी सेठिया, प्लॉट नं. 2, धनारीकलॉ, जोधपुर (राजस्थान)
12025 श्री चन्द्रसिंह जी जैन, नालन्दा विहार, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर (राजस्थान)
12027 श्री धर्मचन्द जी जैन, 75/42, टैगोर लेन, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12033 श्री चन्द्रप्रकाश जी सिंघवी, नाकोड़ा साबुन भंडार, मोती चौक, जोधपुर (राजस्थान)
12034 Shri Nilesh ji Modi, Deepmala Complex, Pune (M.H.)
12035 श्री कमल जी नाहर, चैन्नई (तमिलनाडु)
12036 श्री गजेन्द्र जी गांग, अहमदाबाद (गुजरात)

जिनवाणी हेतु साभार

11000/- श्रीमती मधुजी बिरानी, जयपुर, अपने पतिदेव श्रद्धानिष्ठ समर्पित सुश्रावक श्री अजीत कुमारजी बिरानी का 10 मई 2009 को स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में भेंट।

5111/- श्री माणकचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी, सुनील कुमार जी एवं रांका परिवार, अजमेर श्रीमती प्रेमकँवर जी रांका धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्द जी रांका की पुत्रवधू श्रीमती विमला कुमारी जी रांका धर्मपत्नी श्री माणकचन्द जी रांका का वर्षीतप गुरु कृपा से सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री कनकमल जी, कुशलराज जी, पदमचन्द जी, महावीर जी कोठारी, निमाज, मुमुक्षु श्री जितेन्द्र जी कोठारी की भागवती दीक्षा के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री रणजीत कुमार जी जैन, विल्लीपुरम् सुश्रावक श्री गौतमचन्द जी बम्ब सुपुत्र स्व. श्री किसनलाल जी बम्ब का स्वर्गवास दिनांक 19/04/2009 को होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमान् जयचन्द जी, सुशील कुमार जी लूणिया, पल्लीपट्ट (तमिलनाडु), अपनी सुपुत्री सौ. का प्रिया का शुभ विवाह चि. श्रीपाल जी (सुपुत्र श्री हेमराज जी बाफना) कोलार के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री प्रकाशचन्द जी, दिलीप कुमार जी लूणिया, पल्लीपट्ट (तमिलनाडु), उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में विरक्ता भाई-बहनों की भागवती दीक्षा एवं दर्शन लाभ लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नरपत जी एवं श्रीमती अर्चना जैन, यू.एस.ए., डॉ. सुभाष जी एवं श्रीमती सरला जी जैन, न्यूयॉर्क निवासी की शादी की 40वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री महेन्द्र जी, सुरेन्द्र जी खींवसरा जयपुर अपने पूज्य पिताश्री श्री कुशलचन्द जी एवं मातुश्री श्रीमती शांतिदेवी जी खींवसरा के विवाह की 50वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री चम्पालाल जी बोथरा, चेन्नई, दिनाँक 28.05.2009 को पीपाड़ में हुई भागवती दीक्षा के अवसर पर पूज्य उपाध्याय प्रवर मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से शीलव्रत अंगीकार करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री पी.सी. अब्बाणी, जोधपुर, परमश्रद्धेय 1008 उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से श्रीमती चन्द्रा जी अब्बाणी धर्मपत्नी (श्री प्रभुचन्द सा अब्बाणी) के एकवर्ष का एकान्तर तप (वर्षीतप) आनन्द मंगलमय सम्पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्री ज्ञानचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर, सुपुत्र श्री लोकेश कुमार जी जैन का आई.ए.एस. में चयन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री पारसमल जी, पन्नालाल जी, अशोक जी कोठारी, वेल्लीचेरी-चेन्नई, श्री परेश जी कोठारी सुपुत्र श्री अशोक जी कोठारी के दिनाँक 4 अप्रेल, 2009 का आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1000/- श्री अनिल जी सुपुत्र श्री भैरूलाल जी विजावत, बोलिया-मंदसौर श्री कन्हैयालाल जी विजावत धर्म सहायिका श्रीमती धापूबाई जी विजावत परम पूज्य आचार्य

भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा का 1983 में शेखेकाल बोलिया पधारना हुआ था,आचार्यश्री के मुखारविन्द से सजोड़े चौथा व्रत अंगीकर किया था, इस नियम के 25 वर्ष होने के उपलक्ष्य में भेंट।

600/- श्रीमान् चंचलमल जी गांग, जोधपुर, अपने विवाह की 43 वीं वर्षगांठ एवं सुपौत्र राहुल सुपुत्र श्रीमती योगिता जी एवं श्री राजेश जी गांग के 14 वें जन्मदिन दिनाँक 11.06.2009 के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री उम्मेदचन्द जी, दानमल जी, राजेन्द्र प्रसाद जी, ऋषभ जी (जरखोदा वाले), जयपुर, पूज्य पिताश्री श्री हरकचन्द जी जैन-बोहरा (सरपंच) की 12वीं पुण्य स्मृति दिनांक 16 मई, 2009 के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्रीमती रूपादेवी जी धर्मपत्नी श्री गणपतलाल जी जैन (धनोली वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर अपने सुपौत्र श्री नमन जी जैन सुपुत्र श्रीमती रचना जी धर्मपत्नी श्री मनोज जी जैन के 10वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राधेश्याम जी, कमल कुमार जी जैन (लहसोड़ा वाले), सवाईमाधोपुर चि. राजकुमार जी जैन का शुभ विवाह दिनांक 07 मई, 2009 को सानंद सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री नेमीचन्द जी, पारसचन्द जी जैन, कुशतला-सवाईमाधोपुर चि. सुमित सुपुत्र श्री पारसचन्द जी जैन का शुभविवाह दिनांक 12 मई 2009 को सौ.कां. संतोष सुपुत्री श्री मोहनलाल जी जैन आवासन मंडल के संग सानंद सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्रीमान् राजेन्द्र जी, श्री सुरेन्द्र जी, महेन्द्र जी ओस्तवाल, जोधपुर (हाल मुकाम-विजयवाड़ा) अपने पूज्य पिताजी सुश्रावक श्रीमान् मूलचन्द जी ओस्तवाल के दिनाँक 14 मई, 2009 को देहावसान होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमान् नेमीचन्द जी तातेड़, रियांबड़ी, हाल मुकाम-चेन्नई, अपने सुपुत्र श्री महावीर जी तातेड़ एवं पुत्रवधू श्रीमती शकुन्तला जी तातेड़ द्वारा दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग पर उपाध्याय प्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमान् शान्तिचन्द जी रतन बोहरा एवं समस्त परिवार, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती गुमानकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री आसूलाल जी बोहरा का संलेखना संथारा से महाप्रयाण की प्रथम पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- डॉ. सूरजप्रकाश जी, चन्द्रप्रकाश जी, जयप्रकाश जी संचेती, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्रीमान् आसूलाल जी संचेती का दिनाँक 9 मई, 2009 को देहावसान हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री नेमीचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी, पंकज कुमार जी, चेतनप्रकाश जी कटारिया (बिलाड़ा वाले), हैदराबाद, पायल सुपुत्री राजेन्द्र कुमार जी कटारिया, बी.एस.सी. में पूरे आन्ध्रप्रदेश में समस्त जैन समाज में द्वितीय स्थान आने पर सप्रेम भेंट।

500/- श्री हस्तीमल जी सुराणा, कोलकाता, परम आराध्य पूज्य गुरुदेव के पावन दर्शन बोरसद में करने के उपलक्ष्य में।

500/- श्री हस्तीमल जी सुराणा-इजीपूरा(बैंगलोर), चि. विनोद को पुत्र प्राप्ति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री विजयकुमार जी, निर्मलकुमार जी, दिलीप जी सुराणा (नागौर वाले) कोलकाता, परम आराध्य पूज्य गुरुदेव के पावन दर्शन बोरसद में करने के उपलक्ष्य में।

500/- श्री नेमीचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी, पंकज कुमार जी, चेतनप्रकाश जी कटारिया (बिलाड़ा वाले), हैदराबाद सौ. कां. प्रीति सुपुत्री राजेन्द्र कुमार जी कटारिया का शुभविवाह चि. पदम कुमार जी कोठारी के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री अनिल जी उषा जी, रोहित जी, चेतन जी लुणावत, जयपुर, महासती श्री विवेक जी एवं महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा. के 3 एकान्तर तप के पारणे के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती किरणराज जी गौतमचन्द जी, राजेश कुमार जी पटवा (जैतारण वाले), मैसूर, सुश्राविका श्रीमती शांताबाई जी भंसाली पटवा धर्मपत्नी स्व. श्री नेमीचन्द जी भंसाली पटवा का दिनांक 8 अप्रेल, 2009 को निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री राजेन्द्र प्रसाद जी, अनिल कुमार जी जैन (पाटोली वाले), अलीगढ़-टोंक, चि. विनोद जी जैन का शुभ-विवाह दिनांक 19 मई, 2009 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, अलवर, पूज्य पिताजी श्री भोरेलाल जी जैन (सुराणा) का 96 वर्ष की आयु में दिनांक 30 अप्रेल, 2009 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती विजया जी मेहता, जोधपुर, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

जीवदया हेतु साभार

501/- श्रीमती रूपादेवी जी धर्मपत्नी श्री गणपतलाल जी जैन (धनोली वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, अपने सुपौत्र श्री नमन जी जैन सुपुत्र श्रीमती रचना जी धर्मपत्नी श्री मनोज जी जैन के 10वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमान् प्रसन्नमल सा डागा, जोधपुर, द्वारा भेंट।

500/- श्रीमती विजया जी मेहता, जोधपुर, द्वारा भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार सहयोग

5000/- श्रीमती मनोहरबाई जी लुणिया धर्मपत्नी श्री जवरीमल जी लुणिया पल्लीपट्ट, स्वाध्याय शिविर हेतु सहयोग।

1100/- श्री मनोज जी जितेन्द्र जी नितिन जी लोढा, जलगाँव, अपनी मातुश्री वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती चंचलबाई हीराचन्द्र जी लोढा-जलगाँव का दिनाँक 19 मई, 2009 को सागारी संथारे के साथ स्वर्गवास होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमान् प्रभुचन्द जी अब्बाणी, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रा जी अब्बाणी के दशवैकालिक सूत्र कठस्थ करने के उपलक्ष्य में भेंट।

स्वाध्याय संघ शाखा, बजरिया को प्राप्त सहायतार्थ

1100/- श्री लड्डूलाल जी, राजमल जी जैन चौधरी, सवाईमाधोपुर, चि. मनीष सुपुत्र श्रीमती

इन्द्रा एवं राजमल जी जैन का दिनाँक 09 मई, 2009 को शुभ विवाह सानंद सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री राधेश्याम जी कमलकुमार जी जैन, लहसोड़ा-सवाईमाधोपुर, चि. राजकुमार जी जैन के दिनाँक 07 मई, 2009 को सम्पन्न विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

आगामी पर्व

आषाढ कृष्णा 8	मंगलवार,	16.06.2009	अष्टमी
आषाढ कृष्णा 14	रविवार,	21.06.2009	चतुर्दशी, आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ
आषाढ कृष्णा 30	सोमवार,	22.06.2009	पक्खी
आषाढ शुक्ला 8	सोमवार,	29.06.2009	अष्टमी
आषाढ शुक्ला 14	सोमवार,	06.07.2009	चतुर्दशी, पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ

भूल सुधार

(1) माह अप्रेल, 2009 की जिनवाणी पत्रिका के पृष्ठ संख्या 114 पर रुपये 1001 /- का साभार भूल से श्री ज्ञानेशकुमार जी, रणजीतसिंह जी कुम्भट, नवसारी प्रकाशित हो गया था। इसके स्थान पर ज्ञानेशकुमार जी, रणजीतसिंह जी मुणोत, नवसारी पढ़ा जाए।

(2) अप्रेल, 2009 की जिनवाणी के पृष्ठ 116 पर मैसर्स नेहसुख अमन जी जैन, जोधपुर के स्थान पर सुश्री नेहा, शिखा, अमन कांकरिया, जोधपुर पढ़ा जाए।

(शेषांश पृष्ठ 73 का)

आपकी लेखन शैली की रोचकता और सुगमता भी आपकी रचना के प्रकाशन में सहायक होगी। यदि आप एक अच्छी लेखिका बनना चाहती हैं तो आपको अपने लेखन के प्रिय विषय का गहराई से अध्ययन करना चाहिए और साथ ही उसे वर्तमान परिदृश्य से जोड़कर देखने का प्रयास भी करना चाहिए। इससे आप अपनी लेखनी के द्वारा समसामयिक उपयोगी लेखन कर सकेंगी।

प्रकाशन हेतु भेजने के लिए रचना फुलस्केप कागज के एक ओर स्पष्ट तथा सुवाच्य अक्षरों में लिखें अथवा टाइप करें। वाक्य-विन्यास दोष रहित हो तथा व्याकरण की अशुद्धियाँ न हों। पुनरावृत्ति दोष से बचें।

अन्त में किसी भी विधा में निपुणता प्राप्त करने के लिए निराशा, हताशा छोड़कर धैर्य एवं उत्साह पूर्वक निरन्तर प्रयास करना आवश्यक है। शेष सब आपको आगे आने वाली परिस्थितियाँ सिखाती जाएँगी। हमारी शुभकामनाएँ सभी रुचिवानों के साथ है।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 17 अगस्त से 24 अगस्त 2009 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 25 जुलाई 2009 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष– दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- सूरजमल जी भंडारी, फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), 25381001, मो.9443336674

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अनूठा दान छात्रवृत्ति का जीवन बनता एक विद्यार्थी का

Surana TMT - A perfect vaccination for your constuctions.

• Excellent Bond Strength • Greater resistance to Corrosion • Superior Weldability • Excellent Ductility and High Bendability • Uniform properties throughout length • Enhanced Resistance to Fire • Ability to withstand Earthquakes • Bigger savings in steel consumption (almost 18%) • Available in Fe 415 / 500 / 550 / 600 grades with IS 1786 standard

For marketing enquiries, contact : 91-44-2855 0715 / 2855 0736

Corporate Head Office :
29, Whites Road, Second Floor, Royapettah, Chennai - 600 014.
Phone : 91-44-2852 5127 (3 Lines) / 2852 5596 Fax : 91-44-2852 0713
E-mail : steelmktg@surana.org.in / silimited@surana.org.in
Website : www.surana.org.in

IS:1786

SURANA™ yes, the best TMT RE-BARS

Surana TMT - *Lifeline of every Construction...*

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

ज्ञान का एक दीया जलाइये
सहयोग के लिए आगे आइए
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए Rs. 12,000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) से निम्नांकित पते पर भेंजे, पुण्यधन कमाइऐं।

Ashok Kavad
PRITHVI EXCHANGE
33, Montieth Road, Egmore, CHENNAI-600008
Tele Fax 044-43434249, 09381041097

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

रत्नसंघ की विभिन्न संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी

1.	**संयोजक-संरक्षक मण्डल**	022-30645000/23648004
	श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई	
2.	**संयोजक-शासन सेवा समिति**	
	श्रीमान् रतनलाल सी. बाफना, जलगाँव	0257-2225903/09823076551
3.	**गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन**	
	अध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी कोठारी, मुम्बई	022-23673939/23698880
4.	**अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा, जयपुर	0141-2620571 09414048830/09314048830
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् ज्ञानेन्द्र जी बाफना, जोधपुर	0291-2434355/09414093147
	महामंत्री-श्रीमान् नवरतन जी डागा, जोधपुर	0291-2654427/09828032215
5.	**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर**	**0141-2575997, 2570753**
	अध्यक्ष-श्रीमान् पी. शिखरमल जी सुराणा, चेन्नई	044-25380387/25391597 09884430000
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् नवरतन जी भंसाली, बैंगलोर	080-22265957/09844158943
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् आनन्द जी चौपड़ा, जयपुर	0141-3233318/09414090931
	मंत्री- श्रीमान् प्रेमचन्द जी जैन, जयपुर	0141-2212982/09413453774
6.	**अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर**	**0291-2636763**
	अध्यक्ष-श्रीमती (डॉ.) मंजुला जी बम्ब, जयपुर	0141-2362692/09314292229
	कार्याध्यक्ष-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई	044-25293001/42765646
	मंत्री-श्रीमती आशा जी गांग, जोधपुर	0291-2544124/9314044124
7.	**अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर**	**0291-2641445**
	अध्यक्ष-श्रीमान् कुशल जी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर	07462-233550/09460441570
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् प्रमोद जी हीरावत, जयपुर	0141-2742665/09314507303
	कार्याध्यक्ष-श्रीमान् बुधमल जी बोहरा, चेन्नई	044-26425093/09444235065
	महासचिव-श्रीमान् महेन्द्र जी सुराणा, जोधपुर	0291-2546501/09414921164
8.	**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर**	**0291-2624891**
	संयोजक-श्रीमान् चंचलमल जी चोरडिया, जोधपुर	0291-2621454/09414134606
	सचिव-श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर	0291-3296033/09351590014
9.	**अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर**	**0291-2630490**
	संयोजक-श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर	0291-5108799/09414133879
	सचिव-श्रीमान् राजेश जी कर्णावट, जोधपुर	0291-2549925/09414128925
10.	**अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर**	**0291-2622623**
	संयोजक-श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर	0291-2435637/09351421637
	सचिव-श्रीमान् सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर	0291-2555230/09460551096

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD

S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.

NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES

NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS

NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 66 ★ अंक : 6 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2009 ★ आषाढ़ 2066

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

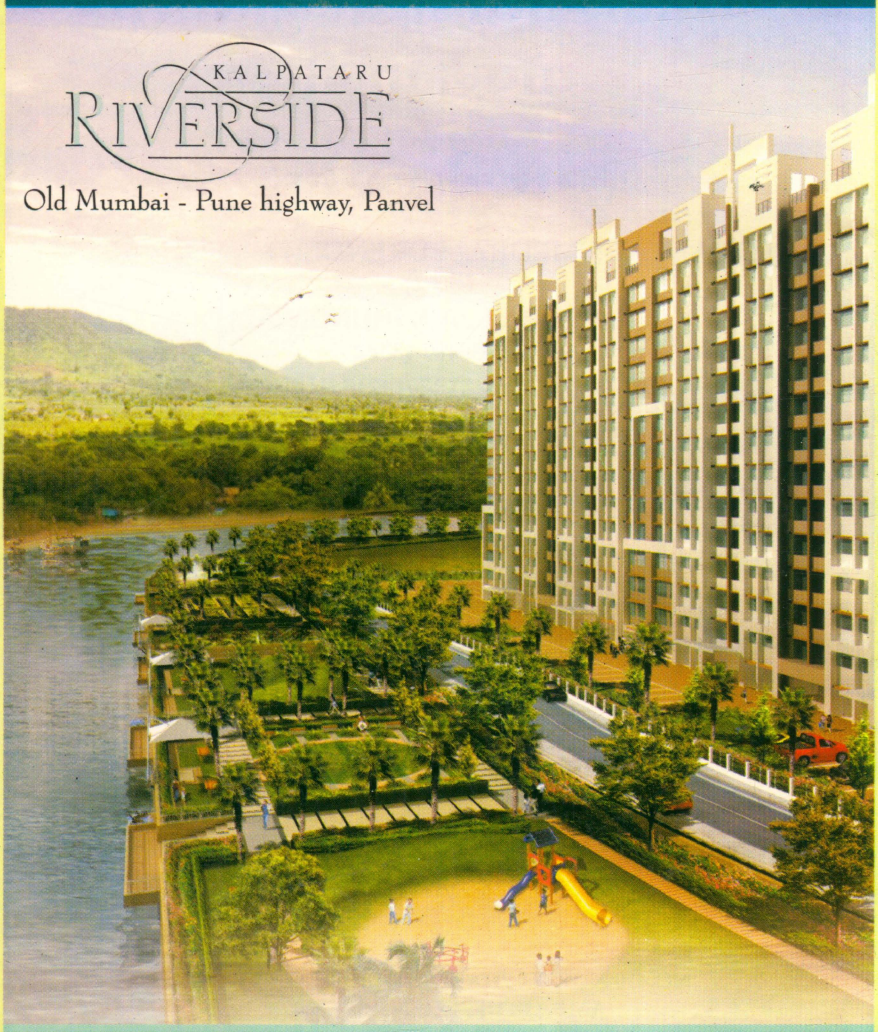

KALPA-TARU®
101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East),
Mumbai - 400 055. ● Tel.: 3064 3065, 98339 45470 ● Fax: 3064 3131
Website: www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।